इतिहास-12

भाग-1

अध्याय-1. ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ हड़प्पा सभ्यता

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) हडप्पा सभ्यता की सबसे विशिष्ट पुरावस्तु है-

(a) हड़प्पाई आभूषण (b) हड़प्पा मृदभाण्ड
(c) हड़प्पाई मोहर (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

(2) हड़प्पाई मोहर किस वस्तु की बनी हुई थी-

(a) लोहे की (b) मिट्टी की
(c) सेलखड़ी पत्थर की (d) उपरोक्त सभी की

(3) सिंधु घाटी सभ्यता के किस स्थल से जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं-

(a) रोपड़ (पंजाब) (b) शोर्तुघई (अफगानिस्तान)
(c) कालीबंगा (राजस्थान) (d) उपरोक्त सभी

(4) निम्न में से किस स्थल से सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष प्राप्त नहीं हुए हैं-

(a) अफगानिस्तान (b) चोलिस्तान
(c) केरल (d) जम्मू

(5) भारतीय पुरातत्व के जनक कौन थे-

(a) जॉन मार्शल (b) व्हीलर
(c) दयाराम साहनी (d) अलेक्जेंडर कनिंघम

(6) भारत में लिंग पूजा किस काल में प्रारंभ हुई?-

(a) वैदिक काल में (b) गुप्त काल में
(c) मौर्य काल में (d) हड़प्पा काल में।

(7) हड़प्पा लिपि लिखी जाती थी-

(a) बाएं से दाएं ओर (b) दाएं से बाएं ओर
(c) ऊपर से नीचे की ओर (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

(8) सिंधु घाटी सभ्यता के पतन का कारण था-

(a) बाढ़ (b) नदियों का सूखना (सूखा)
(c) जलवायु परिवर्तन (d) उपरोक्त सभी

(9) हड़प्पा सभ्यता का काल था-

(a) 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू.
(b) 2600 ई.पू. से 1900 ई.पू.
(c) 1000 ई.पू. से 600 ई.पू.
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

(10) सिंधु घाटी सभ्यता का पूजनीय पशु था-

(a) हाथी (b) बैल
(c) गाय (d) घोड़ा

उत्तर- (1) (c) (2) (c) (3) (c) (4) (c) (5) (d) (6) (d) (7) (b) (8) (a) (9) (b) (10) (b).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) हड़प्पा की खोज सन् .... ई. में की गई।
(2) .... नामक हड़प्पा स्थल से नहरों के अवशेष मिले हैं।
(3) मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ .... है।
(4) सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे पहले खोजा गया स्थल .... है।
(5) .... घिसी हुई रेत अथवा बालू तथा रंग और चिपचिपा पदार्थ के मिश्रण को पकाकर बनाया गया पदार्थ था।
(6) पुरातत्वविदों ने गणेश्वर जोधपुरा संस्कृति नाम .... क्षेत्र में मिले साक्ष्यों को दिया।
(7) मेसोपोटामिया के कई लेख में .... को नाविकों का देश कहा जाता है।
(8) कई पुरातत्वविदों का मानना है कि राजा पक्षी .... था।
(9) हड़प्पा सभ्यता के सबसे लंबे अभिलेख में .... चिन्ह है।
(10) सिंधु घाटी सभ्यता में सड़कों तथा नालियों को एक .... पद्धति से बनाया गया था।

उत्तर- (1) 1921 (2) शोर्तुगई (3) मुर्दों का टीला (4) हड़प्पा (5) फयान्स (6) राजस्थान (7) मेलुहा (8) मोर (9) 26 (10) ग्रिड।

प्रश्न 3. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) सिंधु सभ्यता की लिपि वर्णमाला समान थी।
(2) हड़प्पाई बाट चर्ट नामक पत्थर से बनाए जाते थे।
(3) सिंधु घाटी सभ्यता में सड़कें तथा गलियां एक दूसरे को समकोण पर काटती थी।
(4) मोहनजोदड़ो में कुओं की कुल संख्या 700 थी।
(5) भारतीय पुरातत्व का जनक दयाराम साहनी को कहा जाता है।
(6) सिंधु घाटी सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी।
(7) हड़प्पा सभ्यता के निवासी मृतकों के साथ बहुमूल्य वस्तुएं दफनाते थे।
(8) मोहनजोदड़ो में एक विशाल स्नानागार प्राप्त हुआ है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(9) हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त पत्थर की मूर्ति को पुरोहित की संज्ञा दी गई है।

(10) हड़प्पा सभ्यता के पतन का एक कारण जलवायु परिवर्तन था।

उत्तर– (1) असत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) सत्य (5) असत्य (6) सत्य (7) सत्य (8) सत्य (9) सत्य (10) सत्य।

प्रश्न 4. सही जोड़ी बनाइए

'अ'	'ब'
(1) हड़प्पा	(a) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के डायरेक्टर
(2) मोहनजोदड़ो	(b) गुजरात
(3) शोर्तुघई	(c) राजस्थान
(4) लोथल	(d) भारतीय पुरातत्व के जनक
(5) कालीबंगा	(e) दयाराम साहनी
(6) जॉन मार्शल	(f) हरियाणा
(7) अलेक्जेंडर कनिंघम	(g) राखलदास बनर्जी
(8) बनावली	(h) अफगानिस्तान
(9) रोपड़	(i) सिंधु घाटी सभ्यता का नवीनतम स्थल
(10) धोलावीरा	(j) पंजाब

उत्तर– (1) (i) (2) (g) (3) (h) (4) (b) (5) (c) (6) (a) (7) (d) (8) (f) (9) (j) (10) (e).

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिये–

(1) हड़प्पा सभ्यता के एक प्रमुख पतन का नाम लिखिए।

(2) मोहनजोदड़ो का अर्थ है।

(3) सिंधु घाटी सभ्यता की खोज कब की गई?

(4) भारतीय पुरातत्व का जनक किसे कहा जाता है?

(5) सिंधु-घाटी सभ्यता के किस स्थल पर विशाल स्नानागार मिला है?

(6) सिंधु-घाटी सभ्यता में सुगंधित द्रव्यों को विशेष पात्रों में रखा जाता था उन्हें कहते थे?

(7) हड़प्पा सभ्यता में किस पशु की पूजा की जाती थी?

(8) हड़प्पा सभ्यता में किन-किन जानवरों की हड्डियां प्राप्त हुई हैं?

(9) हड़प्पा सभ्यता की लिपि थी।

(10) हड़प्पा सभ्यता के निवासियों का मुख्य व्यवसाय था।

उत्तर– (1) जलवायु परिवर्तन (2) मुर्दों का टीला (3) 1921 (4) सर अलेक्जेंडर कनिंघम (5) मोहनजोदड़ो (6) मसके, घाट, फ्लास्क (7) वृषभ (बैल) (8) बैल, गाय, भैंस, बकरी, भेड़ और सूअर (9) चित्रात्मक (10) कृषि।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 6. किन्हीं दो विकसित हड़प्पा पुरास्थलों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर– हड़प्पा सभ्यता के दो पुरा स्थलों के नाम– रोपड़, भगवानपुरा, कालीबंगा, लोथल, धोलावीरा आदि हैं।

प्रश्न 7. सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में टीलों से क्या अभिप्राय है?

उत्तर– जब लोग एक ही स्थान पर नियमित रूप से रहते हैं तो भूमि-खंड के अनवरत उपयोग तथा पुनः प्रयोग से आवासीय मलबों का निर्माण हो जाता है जिन्हें टीला कहते हैं, इन टीलों से मिले स्तरों से प्राप्त प्राचीन वस्तुओं से आवास का पता चलता है। ये स्तर एक-दूसरे से [illegible], प्रकृति और इनमें मिली पुरावस्तुओं के संदर्भ में भिन्न होते हैं।

प्रश्न 8. मोहनजोदड़ो नगर की दो विशेषताएं लिखिए।

उत्तर– मोहनजोदड़ो नगर की दो विशेषताएं–

(1) मोहनजोदड़ो को हड़प्पा सभ्यता का सबसे [illegible] केन्द्र माना जाता है।

(2) इस सभ्यता की नगर योजना, गृह निर्माण, मुद्रा, [illegible] आदि की अधिकांश जानकारी मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई।

प्रश्न 9. सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में बाटों से क्या अभिप्राय है?

उत्तर– बाटों से अभिप्राय– विनिमय बाटों की सूक्ष्म या परिशुद्ध प्रणाली द्वारा नियंत्रित थे। ये बाट सामान्यतः चर्ट नामक पत्थर से बनाए जाते थे और आमतौर पर ये किसी भी तरह के निशान से रहित घनाकार होते थे। इन बाटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32 इत्यादि 12,800 तक) थे, जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते थे। छोटे बाटों का प्रयोग संभवतः आभूषणों और मनकों को तौलने के लिए किया जाता था। धातु से बने तराजू के पलड़े भी मिले हैं।

प्रश्न 10. अलेक्जेंडर कनिंघम कौन थे?

उत्तर– अलेक्जेंडर कनिंघम को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पिता के रूप में जाना जाता है, जो बंगाल इंजीनियर समूह के साथ एक ब्रिटिश सेना के इंजीनियर थे। बाद में उन्होंने भारत के इतिहास और पुरातत्व में रुचि ली।

प्रश्न 11. फयॉन्स क्या है? ये कहाँ मिलते हैं?

उत्तर– फयॉन्स एक कीमती धातु है, जो अत्यंत महंगी धातुओं की श्रेणी में है। यह धातु स्वर्ण धातु से भी कीमती होती है। फयॉन्स प्लेटिनम समूह की धातु है। ये एक चमकीली धातु होती है। [illegible] की तरह अल्प मात्रा में पायी जाने के कारण [illegible] कीमती होती है। इस धातु का अधिकतम प्रयोग [illegible] के क्षेत्र में किया जाता है, क्योंकि यह प्रदूषण को नियंत्रित करने के काम आती है। माँग अधिक और उत्पादन कम होने के कारण यह धातु महंगी है।

प्रश्न 12. जॉन मार्शल कौन थे?

उत्तर– जॉन मार्शल प्रसिद्ध पुरातत्वशास्त्री थे। वह 1902 से 1928 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक थे। हड़प्पा का प्रथम पुरातात्विक उत्खनन 1921 ई. में किया गया था। उनका पूरा नाम – सर जॉन ह्यूबर्ट मार्शल था।

प्रश्न 13. मातन पत्थर से क्या अभिप्राय है?

उत्तर– मातन पत्थर– जिनका प्रयोग संभवतः केवल मातन या बीज अनाज के लिए जड़ी-बूटियां तथा मसालों को कूटने के लिए किया जाता था। इन दूसरे प्रकार के पत्थरों को श्रमिकों द्वारा मातन पत्थर का नाम दिया गया है तथा हमारे [illegible] ने एक ही पत्थर मसाले के प्रयोग के लिए सुरक्षित रख [illegible] है।

प्रश्न 14. अवतल चक्की से क्या अभिप्राय है? इनका क्या उपयोग था?

उत्तर– [illegible] चक्कियां दो प्रकार की मिली हैं। एक ऊपर वाला छोटा पत्थर नीचे वाले पत्थर पर आगे-पीछे चलाया जाता था। [illegible] जिसमें ऊपर वाला पत्थर से नीचे वाले पत्थर पर [illegible] मसाला को कूटा जाता था। अर्नेस्ट मैके ने वर्तमान [illegible] अवतल चक्कियों को ध्यान देते हुए इन चक्कियों को भी अवतल [illegible] की संज्ञा दी है।

उपयोग– [illegible] अनुमान है कि इनकी सहायता से अनाज पीसा जाता था [illegible] के लिए जड़ी-बूटियां तथा मसालों को कूटने के लिए भी विशेष प्रकार की अवतल चक्कियों का प्रयोग किया जाता था।

प्रश्न 15. शिल्प पद्धति से क्या आशय है?

उत्तर– [illegible]

प्रश्न 16. सिंधु घाटी सभ्यता की कोई दो विशेषताएं लिखिए।

उत्तर– [illegible]

1. नगर एवं भवन निर्माण– [illegible] नगर सभ्यता थी, [illegible] [illegible] यह सभ्यता प्रसिद्ध थी। नगरों का निर्माण नदियों के तट पर किया गया था। सड़कें नियमित रूप से एक दूसरे से जुड़ी हुई थीं। नगरों में सड़कों का जाल बिछा हुआ मिला है। सभी सड़कें 10 मीटर से अधिक चौड़ी होती थीं और पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण की सरल रेखा में एक दूसरे को समकोण पर काटती हुई जाती थीं। यह छोटी-छोटी सड़कों व गलियों द्वारा मुहल्लों में बंटे हुए होते थे। अनुमानतः लगभग 366 मीटर लंबा और 244 मीटर चौड़ा होता था। सड़क के किनारे स्थान-स्थान पर कूड़ेदान बने हुए थे। सड़कें कच्ची हुआ करती थीं। सड़क के दोनों किनारों पर नीचे गहरी नालियां बनी हुई थीं।

2. सामाजिक जीवन– लिखित साक्ष्य उपलब्ध न होने के कारण इस सभ्यता के सामाजिक संगठन, परिवार प्रणाली, आनिप्रथा के संबंध में निश्चित रूप से कुछ कहना संभव नहीं है।

प्रश्न 17. सिंधु सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी? कोई दो बिंदु लिखिए।

उत्तर– नगरीय सभ्यता के मुख्य बिन्दु–

(1) हड़प्पा सभ्यता कांस्य युग की संस्कृति थी, जो दुनिया में अपने नगरीकरण के लिए जानी जाती थी।

(2) अपने नियोजित शहरों, जल निकासी व्यवस्था और विशाल संरचनाओं को बनाने के लिए पक्की ईंटों के उपयोग के लिए जाना जाता है।

प्रश्न 18. सिंधुवासियों के धार्मिक जीवन की दो विशेषताएं लिखिए।

उत्तर– सिंधुवासियों के धार्मिक जीवन की विशेषताएं–

(1) सिंधुवासियों का धार्मिक जीवन विश्वव्यापी मातृदेवी के साथ ही देवताओं की उपासना भी किया करते थे।

(2) धार्मिक अनुष्ठानों के लिए धार्मिक इमारतें बनाई गई थीं, लेकिन मंदिर के प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं। मातृदेवी और देवताओं को बलि भी दी जाती थी।

प्रश्न 19. सिंधु सभ्यता के पतन के लिए उत्तरदायी कोई दो कारण लिखिए।

उत्तर– सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के उत्तरदायी तत्व–

1. जलवायु परिवर्तन– कुछ विद्वानों का यह मानना है कि जलवायु में परिवर्तन होने के कारण इस सभ्यता का विनाश हुआ, लेकिन मार्श, हायसन, दुनिया आदि विद्वानों का मत है कि कोई खास जलवायु में परिवर्तन नहीं हुआ, जिसके कारण सिंधु घाटी सभ्यता नष्ट हुई।

2. संक्रमण रोग– कुछ ने मलेरिया जैसे रोग के बड़े पैमाने पर फैलने पर लोगों का स्वास्थ्य गिर जाने की संभावना व्यक्त की

है और कुछ ने तो कंकालों की हड्डियों का अध्ययन कर यह स्पष्ट किया है कि मलेरिया के कारण हड्डियों का ठीक-ठीक विकास नहीं हो पाता था। इतिहास में ऐसे प्रमाण मिलते हैं जब पूरी की पूरी बस्तियों को ऐसे रोगों ने अपने प्रभाव में जकड़ लिया है।

प्रश्न 25. हड़प्पा सभ्यता के संपर्क सूत्र कैसे थे? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने अन्य स्थलों में अपनी बस्तियाँ स्थापित कर ली थीं, जैसे-जैसे स्थानों से आवश्यक कच्चा माल सुविधापूर्वक उपलब्ध हो सकता था, उन के लिए इन्होंने नागेश्वर और बालाकोट में जहाँ से शंख आसानीपूर्वक प्राप्त किया जा सकता था, अपनी बस्तियाँ स्थापित की थीं।

अध्याय-2 राजा, किसान और नगर

आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ (लगभग 600 ई.पू. से 600 ईसवी)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) मौर्य साम्राज्य के संस्थापक थे-
(अ) चाणक्य (ब) [illegible]
(स) चंद्रगुप्त (द) समुद्रगुप्त

(2) सबसे प्रसिद्ध कुषाण शासक कौन था?
(अ) कनिष्क (ब) हुविष्क
(स) वासुदेव (द) वशिष्क

(3) [illegible] ईस्ट इंडिया कंपनी के [illegible] में अधिकारी कौन थे?
(अ) अलेक्जेंडर कनिंघम (ब) जेम्स प्रिंसेप
(स) अशोक (द) विलियम जोन्स

(4) ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि का अर्थ किस वर्ष निकाला गया?
(अ) 1830 में (ब) 1836 में
(स) 1837 में (द) 1838 में

(5) सर्वाधिक अभिलेख किस भाषा में मिले हैं?
(अ) प्राकृत (ब) पाली
(स) ब्राह्मी (द) खरोष्ठी

(6) सबसे पहले राजा के नाम वाला प्रथम अभिलेख कहाँ मिला?
(अ) ऐरण, सागर (ब) [illegible]
(स) मास्की (द) जूनागढ़

(7) अर्थशास्त्र के रचयिता कौन थे?
(अ) मेगस्थनीज (ब) चन्द्रगुप्त मौर्य
(स) कौटिल्य (द) [illegible]

(8) मौर्य वंश की स्थापना किस वर्ष में हुई?
(अ) 321 ई.पू. में (ब) 221 ई.पू. में
(स) 320 ई.पू. में (द) 321 ई. में

(9) वर्तमान में कलिंग कहाँ स्थित है?
(अ) कर्नाटक (ब) मध्यप्रदेश
(स) उड़ीसा (द) पाकिस्तान

(10) मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य की राजधानी थी-
(अ) तक्षशिला (ब) उज्जैन
(स) पाटलिपुत्र (द) [illegible]

(11) प्रयाग प्रशस्ति के लेखक हैं-
(अ) कालिदास (ब) हरिषेण
(स) मेगस्थनीज (द) बाणभट्ट

(12) बौद्ध धर्म का विस्तार सर्वाधिक किस शासक के काल में हुआ?
(अ) कनिष्क (ब) समुद्रगुप्त
(स) अशोक (द) चन्द्रगुप्त

उत्तर- [illegible]

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) भारत की यात्रा का अपना विवरण यूनानी मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक .... में किया।
(2) .... चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत था।
(3) .... ने अपने आदेशों को पत्थरों और पॉलिश किए हुए स्तंभों पर लिखवाए।
(4) .... समुद्रगुप्त के दरबारी थे।
(5) [illegible] .... है।
(6) आरंभिक भारत का सबसे प्रसिद्ध विधि ग्रंथ .... है।
(7) हर्षवर्धन के राज कवि .... थे।
(8) प्रभावती गुप्त की शादी .... राज परिवार में हुई।
(9) सांची के स्तूप का निर्माण .... शासनकाल में हुआ।
(10) सिक्कों के अध्ययन को .... कहते हैं।

उत्तर- (1) इंडिका (2) मेगस्थनीज (3) सम्राट अशोक (4) हरिषेण (5) [illegible] (6) मनुस्मृति (7) बाणभट्ट (8) वाकाटक (9) सम्राट अशोक के (10) मुद्राशास्त्र।

प्रश्न 3. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) छठी शताब्दी में भारत 16 महाजनपदों में बंटा हुआ था।
(2) प्रयाग प्रशस्ति की रचना बाणभट्ट ने की थी।
(3) नेपोलियन की तुलना समुद्रगुप्त से की जाती है।
(4) मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में भारत आया था।
(5) मौर्य वंश का अंतिम शासक अशोक था।
(6) प्रभावती गुप्त वाकाटक वंश की राजकुमारी थी।
(7) कुषाण शासकों ने देवपुत्र की उपाधि धारण की।
(8) सम्राट अशोक ने सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार करवाया।
(9) भूमि का वह भाग जो ब्राह्मणों को दान में दिया जाता था अग्रहार कहलाता था।
(10) प्रथम सोने के सिक्के [illegible] कुषाण राजाओं ने जारी किए थे।

उत्तर- (1) सत्य (2) असत्य (3) सत्य (4) सत्य (5) असत्य (6) सत्य (7) सत्य (8) असत्य (9) सत्य (10) सत्य।

प्रश्न 4. सही जोड़ी बनाइए-

अ	ब
(1) मौर्य वंश	सिक्कों का अध्ययन
(2) गुप्त वंश	हर्षचरित
(3) कुषाण	मेगस्थनीज
(4) शक वंश	कुषाण
(5) इंडिका	कनिष्क
(6) मुद्राशास्त्र	कौटिल्य
(7) अर्थशास्त्र	रुद्रदामन
(8) [illegible]	प्रभावती
(9) [illegible]	चन्द्रगुप्त
(10) [illegible]	हरिषेण

उत्तर- [illegible]

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए-

(1) अशोक किस वंश का शासक था?
(2) मेगस्थनीज कौन था?
(3) इंडिका नामक पुस्तक किसने लिखी?
(4) कौटिल्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र [illegible]?
(5) अशोक के अधिकांश अभिलेख किस भाषा में लिखे गए?
(6) सिक्कों के अध्ययन को क्या कहते हैं?
(7) मौर्य काल में धम्म का प्रचार करने हेतु नियुक्त अधिकारी कहलाते थे?
(8) बड़े पैमाने पर सोने के सिक्के किसके द्वारा जारी किए गए?
(9) प्रासाद शब्द का अर्थ है?
(10) अफगानिस्तान में मिले अशोक के अभिलेख किस लिपि में लिखे गए थे?

उत्तर- (1) मौर्य वंश का (2) यूनानी राजदूत (3) मेगस्थनीज ने (4) अर्थशास्त्र एक ऐसा विज्ञान है जो दुर्लभ संसाधनों जिनके वैकल्पिक उपयोग के विवेकशील प्रयोग पर केन्द्रित है (5) प्राकृत भाषा में (6) न्यूमिस्मेटिक्स (7) [illegible] (8) कुषाण राजाओं ने सबसे अधिक सोने के सिक्के चलाए (9) राजा का महल (10) ब्राह्मी लिपि में।

विश्लेषणात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. अतीत के पुनर्निर्माण में अभिलेख शास्त्रियों के समक्ष आई किन्हीं तीन समस्याओं को लिखिए।

उत्तर- (1) अभिलेखों में अक्षरों को हल्के ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है, जिनको पढ़ पाना कठिन होता है।
(2) अभिलेख नष्ट भी हो सकते हैं, जिनसे अक्षर लुप्त हो जाते हैं।
(3) अभिलेखशास्त्रियों के लिए सभी भाषाओं के अभिलेखों को पढ़ना संभव नहीं हो सकता है। जैसे अशोक के अधिकांश अभिलेख ब्राह्मी लिपि में लिखे गये थे, कुछ अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं। पश्चिमोत्तर में मिले अभिलेख अरामाइक और यूनानी भाषा में हैं, कुछ खरोष्ठी लिपि में हैं।

प्रश्न 2. छठी शताब्दी ई.पू. के सिक्कों के अध्ययन से किस प्रकार इतिहासकारों को विभिन्न प्राचीन राज्य व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी मिलने में सहायता मिली? वर्णन कीजिए।

उत्तर- प्राचीनकाल में सोने, चाँदी, ताँबे और काँसे की धातु मुद्रा का प्रचलन था। भारत के अनेक भागों से सिक्के मिले हैं। ये सिक्के प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्रदान करते हैं। छठी शताब्दी ई. पू. के सिक्कों के अध्ययन से इतिहासकारों को प्राचीन राज्य व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी मिलने में निम्न सहायता मिलती है-

(1) ईसा पूर्व छठी शताब्दी से ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के आरंभिक पंचमार्क सिक्कों का प्रयोग मिलता है, किन्तु बाद के सिक्कों पर राजाओं और देवताओं के नाम तथा तिथियाँ अंकित हैं। इस प्रकार इन सिक्कों के आधार पर कई राजवंशों के इतिहास का पुनर्निर्माण संभव हुआ है, विशेषकर दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व उत्तर-पश्चिम में अफगानिस्तान के हिन्द-यवन शासकों का।

(2) चूँकि सिक्कों का प्रयोग दान-दक्षिणा, खरीद-बिक्री और वेतन-मजदूरी के भुगतान के रूप में होता था, इस कारण सिक्कों के अध्ययन से प्राचीन भारत के आर्थिक इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(3) मौर्योत्तर काल में विशेषतः सीसे, पोटिन, ताँबे, काँसे, सोने और चाँदी के सिक्के अधिक मात्रा में मिले हैं। गुप्त, शासकों ने सोने के सिक्के सबसे अधिक जारी किये। इस कालों में व्यापारियों और स्वर्णकारों द्वारा भी सिक्के चलाए गए। इससे पता चलता है कि गुप्त मौर्योत्तरकाल में व्यापार-वाणिज्य तथा शिल्पकारी उन्नतावस्था में थे। गुप्तोत्तरकाल में बहुत कम सिक्के मिले हैं, जिससे व्यापार-वाणिज्य में शिथिलता का पता चलता है।

(4) सिक्कों पर अंकित राजवंशों और देवताओं के चित्रों, धार्मिक प्रतीकों तथा लेखों से तत्कालिन धर्म और कला पर भी प्रकाश पड़ता है।

प्रश्न 3. आप कैसे कह सकते हैं, प्राचीनकाल में चाण्डालों की स्थिति काफी दयनीय थी? 66 पेज

उत्तर– चाण्डाल भारत में व्यक्तियों का एक ऐसा वर्ग है, जिसे सामान्यतः जाति से बाहर तथा अछूत माना जाता है। यह एक प्राचीन अन्त्यज, नीच और बर्बर जाति है। इसे श्मशान पाल, डोम, अंतवासी, थाप, श्मशान कर्मी, अंत्यज, चांडालनी, पुक्कश, गवाशन, चूडा, दीवाकीर्ति, मातंग श्वपच आदि नामों से भी पुकारा जाता है। चाण्डालों के निम्न कर्त्तव्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि उनकी प्राचीनकाल में स्थिति काफी दयनीय थी–

(1) उन्हें गांव के बाहर रहना होता था।

(2) वे फेंके हुए बर्तनों का इस्तेमाल करते थे।

(3) चाण्डाल मरे हुए लोगों के वस्त्र तथा लोहे के आभूषण पहनते थे।

(4) रात्रि में वे गांव और नगरों में चल-फिर नहीं सकते थे।

(5) चाण्डालों को संबंधियों से विहीन मृतकों की अंत्येष्टि करना पड़ती थी तथा

(6) उन्हें वधिक के रूप में भी कार्य करना होता था।

प्रश्न 4. महाजनपदों की प्रमुख विशेषताएँ बताइए? 29 पेज

उत्तर– महाजनपदों की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं–

(1) इस काल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि अनेक महाजनपदों में पहले से चली आ रही राजतन्त्रीय व्यवस्था को समाप्त करके गणतन्त्रीय शासन प्रणाली स्थापित की गई उदाहरण के लिए कुरु, पांचाल, मल्ल, विदेह आदि में गणतंत्र की स्थापना हुई।

(2) जनता में लोकतांत्रिक भावनाएँ प्रबल थी और अत्याचारी राजाओं के शासन को चुपचाप सहने वाली नहीं थी।

(3) गणतन्त्र का एक प्रमुख होता था, जो संभवतः दस वर्ष के लिए चुना जाता था। राज्य की कार्यकारिणी शक्ति उसी के हाथ में होती थी।

(4) राज्य की सर्वोच्च सत्ता एक निर्वाचित संस्था के हाथों में होती थी जो परिषद कहलाती थी। परिषद का चुनाव कैसे होता था, यह कहना कठिन है। परिषद के सदस्यों की संख्या काफी होती थी। कहा जाता है कि लिच्छवियों की परिषद में 7,707 सदस्य थे।

(5) नगरों में स्थानीय संस्थाएँ भी होती थीं। आधुनिक नगरपालिकाओं की तरह वहाँ एक परिषद् होती थी।

प्रश्न 5. वर्णित (उत्तर वैदिक) काल में कृषि के तौर-तरीकों में किस हद तक परिवर्तन हुए? 38 पेज

उत्तर– वैदिक काल में कृषि के तौर-तरीकों में निम्न परिवर्तन हुए–

(1) उत्तर वैदिक काल में लोह युग का प्रारम्भ हुआ, जिसमें कृषि कार्य के लिए नवीन उपकरणों का निर्माण होने लगा। लोहे के प्रयोग ने कृषि अर्थव्यवस्था को और विकसित करने में विशेष योगदान दिया।

(2) कृषि के प्रसार से कबायली संगठन में भी विघटन हुआ एवं छोटे-छोटे कबीले एक दूसरे में विलीन होकर बड़े क्षेत्रगत जनपदों के रूप में उभर रहे थे। कृषि लोगों का प्रमुख व्यवसाय बन चुका था और इस तरह सामान्य जीवन में स्थायित्व का विकास हुआ।

(3) इस काल में स्थायी रूप से खेती करने के लिए जंगल साफ करने हेतु लोहे की कुल्हाड़ी का प्रयोग किया गया।

(4) लोहे के नोक वाले हल एवं कुदाल ने कृषि यन्त्रों की क्षमता को बढ़ाया, जिससे कृषि कार्यों का विस्तार हुआ। तथापि लौह उपकरणों के निर्माण में वांछित विकास अभी तक नहीं हो पाया था।

(5) उत्तर वैदिक काल में कृषि आर्यों का मुख्य पेशा हो गयी। कृषि हल-बैल की सहायता से होती थी। जौ के अतिरिक्त अब गेहूं एवं चावल मुख्य फसल हो गई और भी कई प्रकार की फसलें अस्तित्व में आ गई। तैतरीय संहिता में जौ, धान, उड़द, तिल आदि की चर्चा है।

प्रश्न 6. प्राचीन काल के ग्रामीण समाज को समझने के लिए भूमि अनुदान संबंधी शिलालेख कैसे सहायक होते हैं? 50-51 पेज

उत्तर– प्राचीन या वैदिक काल के दान सम्बन्धी आदेश तथा रिकार्डों का भी इतिहासकारों ने अध्ययन करके साधारण लोगों की जीवन स्थिति का पता लगाया है। भूमिदान से सम्बन्धित विज्ञप्तियों से कृषि विस्तार, कृषि के ढंग तथा उपज बढ़ाने के तरीकों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। भूमिदान के प्रचलन से राज्यों और किसानों के बीच के सम्बन्धों का ज्ञान प्राप्त होता है। इन शिलालेखों से ज्ञात होता है कि राजा और कृषक वर्ग के सम्बन्ध अच्छे थे व राजा कृषि विस्तार एवं विकास के प्रति सजग थे। कृषि लोगों के जीवन का आधार थी।

प्रश्न 7. अशोक द्वारा अपने अधिकारियों और प्रजा को दिये गये संदेशों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर– अशोक द्वारा अपने अधिकारियों एवं प्रजा को निम्न संदेश दिये–

(1) "किसी भी व्यक्ति को सिर्फ अपने धर्म का सम्मान और दूसरों के धर्म की निंदा नहीं करनी चाहिए।"

(2) "सफल राजा वही होता है, जिसे पता होता है कि जनता को किस चीज की जरूरत है।"

(3) "सबसे महान जीत प्रेम की होती है, यह हमेशा के लिए दिल जीत लेती है।"

(4) "कोई भी व्यक्ति जो चाहे प्राप्त कर सकता है, बस उसे उसकी उचित कीमत चुकानी होगी।"

(5) "मैंने कुछ जानवरों और अन्य प्राणियों को मारने के खिलाफ कानून लागू किया है, लेकिन लोगों के बीच धर्म की सबसे बड़ी प्रगति जीवित प्राणियों को चोट न पहुंचाने और उन्हें मारने से बचने का उपदेश देने से आती है।"

(6) "एक राजा से ही उसकी प्रजा की पहचान होती है।"

(7) "तीन कार्य जो हमें सदा स्वर्ग की ओर ले जाते हैं, "माता-पिता का सम्मान, सभी जीवों पर दया और सत्य वचन।"

(8) "जितना कठिन संघर्ष करोगे, आपके जीत की खुशी भी उतनी ही बढ़ जायेगी।"

(9) "हर धर्म में प्रेम, करुणा और भलाई का पोषक कोर है। बाहरी खोल में अंतर है, लेकिन भीतर सार को महत्व दीजिये और तब वास्तविक शान्ति और सद्भाव आएगा।"

उपरोक्त शिक्षा या संदेशों से स्पष्ट होता है कि ये संदेश वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं। एक सफल शासक एवं अच्छी प्रजा एवं एक मानवीयपूर्ण समाज इन्हीं संदेशों के अनुसरण से बनाया जा सकता है।

प्रश्न 8. आरंभिक भारतीय इतिहास में छठी शताब्दी ई.पू. को एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी काल क्यों माना जाता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– छठी शताब्दी ईसा पूर्व को एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी काल इसलिए माना जाता है, क्योंकि इस काल में आरंभिक राज्य नगरों में लोहे के बढ़ते प्रयोग और सिक्कों का अभूतपूर्व विकास हुआ था इसी काल में बौद्ध और जैन सहित विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का उद्भव हुआ था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में कुछ साम्राज्यों के विकास में वृद्धि हुई थी जो बाद में प्रमुख साम्राज्य बन गये और इन्हें महाजनपद हुई या महान देश के नाम से जाना जाने लगा था।

इस काल में लौह युग का प्रारम्भ हुआ, जिससे कृषि कार्य के लिए नवीन उपकरणों का निर्माण होने लगा। लोहे के प्रयोग ने कृषि अर्थव्यवस्था को और विकसित करने में विशेष योगदान दिया।

कृषि के प्रसार से कबायली संगठन में भी विघटन हुआ एवं छोटे-छोटे कबीले एक दूसरे में विलीन होकर बड़े क्षेत्रगत जनपदों के रूप में उभर रहे थे। कृषि लोगों का प्रमुख व्यवसाय बन चुका था और इस तरह सामान्य जीवन में स्थायित्व का विकास हुआ।

लोहे का इस्तेमाल उपकरणों और हथियारों का निर्माण करने के लिए किया जाता था। हाथी जंगल में पाये जाते थे, जिनका इस्तेमाल सेना में किया जाता था। गंगा और उसकी सहायक नदियों के तटीय भागों ने संचार को सस्ता और सुविधाजनक बना दिया था।

प्रश्न 9. किन तरीकों से प्राचीन काल में राजा उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते थे? 38 पेज

उत्तर– निम्न तरीकों से प्राचीन काल में राजा उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते थे–

(1) राजा स्वयं को देवी-देवताओं के समकक्ष प्रस्तुत करते थे व अपने अनुयायी बनाने का प्रयास करते थे।

(2) भू-दान के द्वारा अपनी शान-शौकत का प्रदर्शन करते थे। साथ ही अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाने का प्रयास करते थे।

(3) राजा अपने नाम व प्रतीकों के सिक्के जारी करते थे।

(4) राजा अपनी मूर्तियों को अपने साम्राज्य में जगह-जगह स्थापित करवाते थे।

(5) राजा अपनी प्रशंसा हेतु साहित्य, अभिलेख, कवियों आदि की सहायता लेते थे।

प्रश्न 10. "पनपते हुए शिल्प और वाणिज्य तथा मुद्रा के बढ़ते प्रयोग ने मौर्योत्तर काल में उत्तर भारत के नगरों की समृद्धि को प्रोत्साहित किया" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– पनपते हुए शिल्प और वाणिज्य तथा मुद्रा के बढ़ते प्रयोग ने मौर्योत्तर काल में उत्तर भारत के नगरों की समृद्धि को प्रोत्साहित किया, यह कथन निम्न बातों से स्पष्ट होता है–

@MP_BOARD_25 (Telegram)

मौर्योत्तर काल में शिल्प का विकास– मौर्योत्तर काल में कला और शिल्प का असाधारण विकास हुआ, मौर्योत्तर कालीन ग्रन्थों में हमें जितने प्रकार के शिल्पकारों का उल्लेख प्राप्त होता है, उतना पहले के ग्रंथों में नहीं मिलता। प्राग मौर्यकालीन ग्रन्थ दीघनिकाय में केवल 24 व्यवसायों का उल्लेख है। मौर्योत्तरकालीन बौद्ध ग्रन्थ महावस्तु के अनुसार राजगीर (अथवा राजगृह नगरी) में 36 प्रकार के विभिन्न व्यवसाय करने वाले शिल्पकार रहते थे। इसी प्रकार मिलिन्दपन्हो (या मिलिंद के प्रश्न) में जिन 75 विभिन्न व्यवसायों का उल्लेख है उनमें 60 विभिन्न प्रकार के शिल्पों से सम्बन्धित हैं। हाथी दांत का काम, कांच की वस्तुओं का निर्माण, मूल्यवान पत्थरों के सुन्दर आभूषण (terra cottas) का निर्माण आदि शिल्प कलाएं भी विकसित थीं। विभिन्न हस्त कौशल एवं शिल्पकलाओं के विवरण यह भी स्पष्ट होता है कि लोगों ने देश में उद्योगों के विकास के लिए विशिष्टीकरण को अपनाया और उसे प्रोत्साहन भी दिया, जिससे औद्योगिक-तकनीकी कौशल की बहुत प्रगति हुई।

मौर्योत्तर काल में वाणिज्य का विकास– मौर्योत्तर काल की अत्यन्त महत्वपूर्ण आर्थिक घटना थी भारत और पूर्वी रोमन साम्राज्य के बीच फलता-फूलता व्यापार। आरम्भ में इस व्यापार का एक बड़ा भाग स्थल मार्ग से होता था। भारतीय लौह तथा इस्पात का निर्यात अबीसीनिया के बन्दरगाहों को होता था। भारतीय लौह वस्तुओं की मांग पश्चिमी एशिया के देशों में बहुत थी। इसी काल में कपड़ा निर्माण ने और भी प्रगति की। देश में सूती, रेशमी तथा ऊनी वस्त्र बनाये जाते थे। चीनी रेशम के आयात से देश में रेशमी वस्त्र उद्योगों को बहुत प्रोत्साहन मिला। मथुरा में एक विशेष प्रकार का कपड़ा बनाया जाता था, जिसे साटाका (Sataka) कहा जाता था। दक्षिण भारत के कुछ नगरों में वस्त्र रंगाई एक विकसित शिल्प थी।

मौर्योत्तर काल में निम्न प्रयोग हैं– भारत में अन्य सामान के अतिरिक्त बहुत बड़ी संख्या में सोने-चांदी के सिक्के आते थे। सोने के रोमन सिक्कों को स्वभावत: अन्तर्भूत मूल्य के कारण ही मूल्यवान समझा जाता था, उत्तर में भारतीय यूनानी शासकों ने सोने के कुछ सिक्के जारी किए। कुषाणों ने रोमन सम्पर्क के कारण दीनार की किस्म के सोने के सिक्के जारी किए, जिनकी बाद में गुप्त साम्राज्य के काल में संख्या बहुत अधिक हो गई। इस काल में अनेक नगरों में व्यापारियों ने भी स्वयं को श्रेणियों में संगठित कर रखा था। ये श्रेणियाँ व्यापारियों की बचत जमा करने, उन्हें ऋण देने तथा सिक्के जारी करने का कार्य करती थीं।

प्रश्न 11. उत्तर मौर्य काल में विकसित राजत्व के विचारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर– उत्तर मौर्यकाल में कुषाण, शक क्षत्रप तथा गुप्त काल आता है। उनके राजत्व सम्बन्धित विचार निम्न प्रकार है-

1. शक क्षत्रप के राजस्व सम्बन्धी सिद्धान्त– शकों का साम्राज्य अनेक प्रान्तों में विभाजित था। इन प्रान्तों पर शक्तिशाली शक सामन्त शासन करते थे, जो क्षेत्रप कहलाते थे। जिस प्रकार शकों में दो राजा साथ-साथ राज्य करते थे, वैसे ही दो क्षत्रप या महाक्षत्रप तथा एक क्षत्रि साथ-साथ शासन किया करते थे। इनमें से एक वरिष्ठ क्षत्रप का पुत्र होता था और अपने पिता की मृत्यु के बाद वरिष्ठता प्राप्त कर लेता था। इनमें कई शक्तिशाली क्षत्रप हुए, जिन्होंने राजा के समान ही शासन किया। उनका भी राजस्व का सिद्धान्त धर्म से प्रभावित था। उन्होंने भी अपने आप को देवतुल्य बनाने का प्रयास किया और निरंकुशतापूर्वक शासन किया। शक विदेशी थे, किन्तु उनका भारतीयकरण हो गया था। शक सम्राट को ईश्वर या देवता माना जाता था।

वह चक्रवर्तिन राजाधिराज, देवपुत्र आदि उपाधियाँ धारण करता था। शक शासक हिन्दू धर्म के संरक्षक के रूप में काम करते थे। सम्राट को सलाह देने के लिए मंत्री भी होते थे। शक सम्राट धार्मिक रूप से सहिष्णु थे और साहित्य प्रेमी थे।

2. कुषाणों के राजस्व सम्बन्धी सिद्धान्त– कुषाणों का राजा निरंकुश होता था। राजा की उपाधि भी लगाई थी। चीन के शासक अपने आप को 'स्वर्ग पुत्र' मानते थे। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने 'देवपुत्र' कहा। कुषाण शासकों में कनिष्क सबसे प्रसिद्ध था। निरंकुश होते हुए भी उसने जनता के हित का सदैव ध्यान रखा और उनके कल्याण के लिए काम किया। कुषाण काल के जो सिक्के उपलब्ध हुए हैं, उससे सिद्ध होता है कि उस सम्राट को देवतुल्य माना जाता था। उसका शासन देवी सिद्धांत के आधार पर चलता था।

3. गुप्त शासकों के राजत्व सम्बन्धी सिद्धान्त– गुप्तकालीन राजत्व सम्बन्धी सिद्धान्तों का विवरण निम्न प्रकार है-

(i) राजतन्त्रात्मक शासन प्रणाली– गुप्तों की शासन प्रणाली का स्वरूप राजतन्त्रात्मक था। शासन की सर्वोपरि सत्ता का उपभोग सम्राट करता था। प्रयोग प्रशस्ति के लेख में समुद्रगुप्त को एक ऐसा सम्राट बताया गया है जो देवता के रूप में पृथ्वी पर निवास करता था। इससे स्पष्ट है कि शक तथा हिन्दू विचारकों द्वारा प्रतिपादित राजाओं का दैवी सिद्धान्त इस युग में लोकप्रिय हो चला था, किन्तु इस युग के भारतीय शासक 16वीं शताब्दी के यूरोपीय राजाओं की भाँति स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि नहीं समझते थे और न इस बात का दावा करते थे कि वे जो कुछ करते है, वह गलत हो ही नहीं सकता। सामान्यत: राजा का सबसे बड़ा पुत्र उसका उत्तराधिकारी होता था और राजा अपने जीवन काल में ही उसे युवराज घोषित कर देता था। कभी-कभी योग्यता तथा चरित्र बल को ध्यान में रखते हुए शासक लोग अपने छोटे पुत्रों को भी उत्तराधिकारी घोषित कर दिया करते थे। सामान्यत: छोटे पुत्रों को प्रान्तीय शासकों के पद पर नियुक्त कर दिया जाता था। राज्य की राजनीतिक, सैनिक, प्रशासनिक तथा न्याय सम्बन्धी सभी शक्तियाँ राजा के हाथ में केन्द्रित हुआ करती थीं। यद्यपि वह मन्त्रियों की सहायता से कार्य करता था, किन्तु अन्तिम उत्तरदायित्व राजा का होता था।

(ii) सामन्ती व्यवस्था– गुप्त शासन प्रणाली में सामन्ती व्यवस्था थी। सामन्तवादी सिद्धांत को अपनाने का कारण यह था कि गुप्त साम्राज्य अति विशाल था तथा सत्ता के विकेन्द्रीकरण के बिना शासन संचालन बड़ा ही दुष्कर कार्य था। गुप्त सम्राटों ने समस्त विजित देशों पर सीधा शासन करने का प्रयत्न नहीं किया था। अनेक राजाओं को उन्होंने करद बनाकर छोड़ दिया था। इन सब राजाओं की स्थिति एक-सी नहीं थी। किसी पर केन्द्रीय सरकार का अधिक होता था और किसी पर कम। आन्तरिक मामलों में वे स्वतन्त्र होते थे, किन्तु वे सम्राट की अधीनता स्वीकार कर लेते और विशेष अवसरों पर स्वयं जाकर सम्राट का अभिवादन करते थे। कुछ विद्वानों का मत है कि गुप्त सम्राटों ने अपने सामन्तों को निजी सिक्के चलाने की आज्ञा नहीं दी थी।

प्रश्न 12. धर्म प्रवर्तक से आप क्या समझते हैं? अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए क्या-क्या कार्य किए?

उत्तर– धर्म प्रवर्तक– किसी धर्म को प्रचलित करने या चलाने वाला व्यक्ति, कोई नया मत या सम्प्रदाय चलाने वाला व्यक्ति ही धर्म प्रवर्तक कहलाता है। बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु कार्य-

1. धर्म लेख– अशोक ने बौद्ध धर्म के सर्वमान्य सिद्धान्तों को शिलाओं और पत्थर के स्तम्भों पर खुदवाया। उसने गुफाओं में भी उत्कीर्ण करवाकर धर्म का प्रचार किया।

2. धर्म यात्रा– अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के बाद विहार यात्राओं को बन्द कर दिया। उसने उनके स्थान पर धर्म यात्राएं प्रारम्भ की। फलत: वह लुम्बिनी, कपिलवस्तु, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर आदि बौद्ध-तीर्थ स्थानों की यात्राओं पर गया।

3. धर्म प्रदर्शन– अशोक ने धर्म प्रचार के लिए धर्म प्रदर्शन आरम्भ किया। पुण्य कार्य करने वालों को स्वर्ग की प्राप्ति, आनन्दों के प्रदर्शन, विमान प्रदर्शन आदि दृश्यों का प्रदर्शन करवाया।

4. धर्म श्रवण– अशोक ने प्रजा को धर्मनिष्ठ बनाने के लिए धर्म श्रवण की व्यवस्था की। धार्मिक प्रवचनों की व्यवस्था कर धर्म का प्रचार किया।

5. धर्म मंगल– अशोक ने जनकल्याण के लिए कुओं, सड़कों के किनारे छायादार वृक्षों, विश्रामगृहों आदि का निर्माण कर लोगों को आकर्षित किया।

6. धर्मानुशासन– अशोक ने धर्म में अनुशासन बनाए रखने के लिए नियमों को प्रकाशित किया तथा उन्हें स्वयं पर भी लागू किया।

7. धर्म महामात्रों की नियुक्ति– उसने धर्म प्रचार के लिए धर्म महामात्र नाम के अधिकारियों को नियुक्त किया। वे प्रजा के हित के लिए पवित्र आचरणों के पालनार्थ लोगों को प्रेरित करते थे।

8. अहिंसा का प्रचार– अशोक ने अहिंसा को धर्म मानने के लिए उसका खूब प्रचार किया। उसने राजकीय पाठशालाओं में पशुवध बंद करा दिया।

9. बौद्ध संगीति का आयोजन– अशोक ने मतभेदों को दूर करने के लिए पाटलिपुत्र में मोद्गलिपुत्र तिष्य की अध्यक्षता में 252 ई. पूर्व में बौद्ध धर्म की तीसरी सभा का आयोजन किया था। इससे बौद्ध धर्म का मतभेद दूर हुआ।

10. विहारों और स्तूपों का निर्माण– अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए स्तूपों का निर्माण करवाया, पत्थर के स्तम्भ बनवाए तथा उन पर अपने सिद्धांतों को उत्कीर्ण करवाया। उसने बौद्ध विहार निर्मित करवाये, इनमें धर्म प्रचारक रहा करते थे।

11. धर्म प्रचारक संघों का गठन– अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए धर्म प्रचारक संघों का गठन कर उनको विदेशों में भेजा। इससे धर्म का प्रचार तीव्र गति से हुआ।

12. पाली भाषा का प्रयोग– अशोक ने जनसाधारण की भाषा पाली में बौद्ध धर्मों की रचना करवाई, फलत: लोगों ने सरलतापूर्वक उपदेशों को समझकर उसे ग्रहण किया।

13. राजधर्म– अशोक ने बौद्ध धर्म को राजधर्म बना दिया, फलत: जनसमुदाय की आस्था बौद्ध धर्म में बढ़ी और इसका खूब प्रचार हुआ।

प्रश्न 13. अशोक के धम्म से आप क्या समझते हैं? उसके मूलभूत सिद्धान्त लिखिए।

उत्तर– अशोक ने निरन्तर मानव की नैतिक उन्नति के लिए प्रयास किया। जिन सिद्धांतों के पालन से यह नैतिक उत्थान सम्भव था, अशोक के लेखों में उन्हें 'धम्म' कहा गया है। यह

@MP_BOARD_25 (Telegram)

एक सर्वसाधारण धर्म है। जिसकी मूलभूत मान्यताएं सभी सम्प्रदायों में मान्य है और जो देश काल की सीमाओं में आबद्ध नहीं है। किसी पाखंड या सम्प्रदाय का इससे विरोध नहीं हो सकता। दूसरे तथा सातवें स्तंभ-लेखों में अशोक ने धम्म की व्याख्या इस प्रकार की है, "धम्म है साधुता, बहुत से कल्याणकारी अच्छे कार्य करना, पापरहित होना, मृदुता, दूसरों के प्रति व्यवहार में मधुरता, दया-दान तथा शुचिता।" आगे कहा गया है कि, "प्राणियों का वध न करना, जीवहिंसा न करना, माता-पिता तथा बड़ों की आज्ञा मानना, गुरुजनों के प्रति आदर, मित्र, परिचितों, सम्बन्धियों, ब्राह्मण तथा श्रवणों के प्रति दानशीलता तथा उचित व्यवहार और दास तथा भृत्यों के प्रति उचित व्यवहार।"

अशोक ने जनसाधारण के नैतिक उत्थान के लिए अपने धम्म का प्रचार किया, ताकि वे ऐहिक सुख और इस जन्म के बाद स्वर्ग प्राप्त कर सके। इसमें संदेह नहीं कि अशोक सच्चे हृदय से अपनी प्रजा का नैतिक पुनरुद्धार करना चाहता था और इसके लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील रहा।

सिद्धांत- अशोक के धम्म के सिद्धांत, शिक्षाएं या विशेषताएँ-

(1) अशोक का धम्म धर्म के मूल तत्वों से युक्त है। अशोक ने वैदिक धर्म के मूल तत्वों को सदा याद रखा। जैसे- दया, करुणा, क्षमा, धृति, शौच इत्यादि बौद्ध और जैन धर्म में भी यह मूल तत्व है।

(2) अशोक के धम्म में नैतिकता और सदाचरण मूल आधार हैं।

(3) अशोक के धम्म में दूसरों के विचारों, विश्वासों, आस्था, नैतिकता और जीवन प्रणाली के प्रति सम्मान और सहिष्णुता रखने को विशेष रूप से कहा गया है।

(4) अशोक के धम्म में अहिंसा को अत्यधिक महत्व दिया गया है। किसी जीव को न मारना, किसी जीव को न सताना साथ ही अपशब्द न बोलना, किसी का बुरा न चाहना और पशु-पक्षी, मानव, वृक्ष आदि की रक्षा करना और इसके लिये कार्य करना भी अहिंसा है।

(5) ब्राह्मणों, श्रमणों को दान, वृद्धों और दुखियों की सेवा तथा सम्बन्धियों, बन्धु-बान्धवों, हितैषियों और मित्रों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार होना चाहिए।

(6) अशोक के धम्म का एक आदर्श है मानव को भावनाओं की शुद्धता तथा पवित्रता के लिए साधुता, बहुकल्याण, दया, दान, सत्य, संयम, कृतज्ञता तथा माधुर्यपूर्ण करना है।

(7) हितैषियों और मित्रों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार करना।

(8) [illegible] साथ सद्व्यवहार करना है।

(9) अशोक के धर्म की मुख्य विशेषता लोक कल्याण है। धम्म मंगल अर्थात् प्राणीमात्र की रक्षा और विकास के लिये कार्य करना। विलासी जीवन से दूर रहना, मांस भक्षण न करना, वृक्षों को न काटना आदि लोक कल्याण के अंतर्गत ही माने जाते हैं।

(10) अशोक के धम्म की एक विशेषता यह है कि अशोक का धम्म सार्वभौमिक है, प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक समय में धम्म का पालन कर सकता है।

(11) अल्प व्यय (कम खर्च) अल्प संग्रह (कम जोड़ना) करना चाहिए।

(12) निष्ठुरता, क्रोध, अभिमान, ईर्ष्या, दुर्गुणों से दूर रहकर कम से कम पाप करना चाहिए।

अशोक महान द्वारा प्रतिपादित धार्मिक विचार सार्वभौमिक, सहिष्णुतापूर्ण, दार्शनिक, पक्षविहीन, व्यावहारिक, अहिंसक तथा जीवन में नैतिक आचरण के पालन को महत्व देते हुए अन्य धर्मों में 'आस्था प्रकट' कर सभी धर्मों का सार थे।

प्रश्न 14. लोहे के फाल के प्रयोग ने संपूर्ण उपमहाद्वीप में कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया इस कथन की पुष्टि कीजिए। 38 पेज

उत्तर- लोहें के फाल वाले हलों के माध्यम से उर्वर भूमि की जुताई की जाने लगी। इसके अलावा गंगा की घाटी में धान की रोपाई की वजह से उपज में भारी वृद्धि होने लगी। हालांकि किसानों को इसके लिए कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ती थी।

यद्यपि लोहे के फाल वाले हल की वजह से फसलों की उपज बढ़ने लगी, लेकिन ऐसे हलों का उपयोग उपमहाद्वीप के कुछ ही हिस्से में सीमित था। पंजाब और राजस्थान जैसे अर्धशुष्क जमीन वाले क्षेत्रों में लोहे के फाल वाले हल का प्रयोग बीसवीं सदी में शुरू हुआ। जो किसान उपमहाद्वीप के पूर्वोत्तर और मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में रहते थे, उन्होंने खेती के लिए कुदाल का उपयोग किया, जो ऐसे इलाके के लिए कहीं अधिक उपयोगी था।

प्रश्न 15. मौर्य वंश के बारे में जानने वाले ऐतिहासिक स्रोतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- मौर्य वंश के इतिहास के बारे में दो प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं। एक साहित्यिक है और दूसरा पुरातात्विक है। साहित्यिक स्रोतों में कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विशाखा दत्त का मुद्रा राक्षस, मेगास्थनीज की इंडिका, बौद्ध साहित्य और पुराण हैं। पुरातात्विक स्रोतों में अशोक के शिलालेख और अभिलेख और वस्तुओं के अवशेष जैसे चांदी और तांबे के छेद किए हुए सिक्के शामिल हैं।

साहित्यक स्रोत-

(अ) कौटिल्य का अर्थशास्त्र- यह पुस्तक कौटिल्य (चाणक्य का दूसरा नाम) के द्वारा राजनीति और शासन के बारे में लिखी गई है। यह पुस्तक मौर्य काल के आर्थिक और राजनीतिक स्थिति के बारे में बताती है। कौटिल्य, चन्द्रगुप्त मौर्य, मौर्य वंश के संस्थापक, का प्रधानमंत्री था।

(ब) मुद्रा राक्षस- यह पुस्तक गुप्त काल में विशाखा दत्ता द्वारा लिखी गई। यह पुस्तक बताती है कि किस तरह चन्द्रगुप्त मौर्य ने सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर रोशनी डालने के अतिरिक्त, चाणक्य की मदद से नन्द वंश को पराजित किया था।

(स) इंडिका- इंडिका, मेगास्थनीज द्वारा रची गई जो कि चंद्रगुप्त मौर्य की सभा में सेल्युकस निकेटर का दूत था। यह मौर्य साम्राज्य के प्रशासन, जाति प्रणाली और भारत में गुलामी का ना होना दर्शाती है। यद्यपि इसकी मूल प्रति खो चुकी है, यह पारंपरिक यूनानी लेखकों जैसे प्लुटार्च, स्ट्राबो और आर्रियन के लेखों में उदाहरणों के रूप में सहेजे हुए है।

(द) बौद्ध साहित्य- बौद्ध साहित्य जैसे जातक मौर्य काल के सामाजिक, आर्थिक स्थिति के बारे में बताता है, जबकि बौद्ध वृतांत महावमसा और दीपवांसा अशोक के बौद्ध धर्म को श्रीलंका तक फैलाने की भूमिका के बारे में बताते हैं। दिव्यवदं तिब्बत बौद्ध लेख अशोक के बौद्ध धर्म का प्रचार करने के योगदान के बारे में जानकारी देते हैं।

(इ) पुराण- पुराण मौर्य राजाओं और घटनाक्रमों की सूची के बारे में बताते हैं-

पुरातात्विक स्त्रोत-

(क) अशोक के अभिलेख

अशोक के अभिलेख भारत के विभिन्न उप-महाद्वीपों में शिलालेख, स्तंभ लेख और गुफा शिलालेख के रूप में पाये जाते हैं। इन अभिलेखों की व्याख्या जेम्स प्रिंसेप ने 1837 AD में किया था। ज्यादातर अभिलेखों में अशोक की जनता को घोषणाएं है, जबकि कुछ मे अशोक के बौद्ध धर्म को अपनाने के बारे में बताया गया है।

(ख) वस्तु अवशेष- वस्तु अवशेष जैसे NBPW (उत्तर काल के पोलिश के बर्तन) चांदी और तांबे के छेद किए हुए सिक्के मौर्य काल पर रोशनी डालते हैं।

प्रश्न 16. सरदार और सरदारी से आप क्या समझते हैं? विस्तार से समझाइए। 35 पेज

उत्तर- सरदार और सरदारी- सरदार एक शक्तिशाली व्यक्ति होता है, जिसका पद वंशानुगत भी हो सकता है और नहीं भी। उसके समर्थक उसके खानदान के लोग होते हैं। सरदार के कार्यों में विशेष अनुष्ठान का संचालन, युद्ध के समय नेतृत्व करना और विवादों को सुलझाने में मध्यस्थता की भूमिका निभाना शामिल है। वह अपने अधीन लोगों से भेंट लेता है, (जबकि राजा कर वसूली करते हैं) और अपने समर्थकों में उस भेंट का वितरण करता है। सरदारों में सामान्यतया कोई स्थायी सेना या अधिकारी नहीं होते हैं।

प्रश्न 17. मौर्य प्रशासन की मुख्य विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- मौर्य प्रशासन की मुख्य विशेषताएँ थी-

(1) मौर्य साम्राज्य में पांच महत्वपूर्ण राजनीतिक केन्द्र थे, पाटलिपुत्र (राजधानी शहर) और तक्षशिक्षा, उज्जयिनी, तोसाली और सुवर्णगिरि के प्रांतीय केन्द्र।

(2) इतने बड़े साम्राज्य के लिए एक समान प्रशासनिक व्यवस्था होना सम्भव नहीं था इसलिए इतिहासकारों का मानना है कि प्रशासनिक नियंत्रण शायद राजधानी और प्रांतीय केन्द्रों में सबसे मजबूत था।

(3) साम्राज्य को संचालित करने के लिए भूमि और नदी मार्गों के साथ संचार विकसित किया गया था।

(4) सेना न केवल साम्राज्य के क्षेत्रों का विस्तार करने के लिए, बल्कि उन्हें प्रशासित करने के लिए भी एक महत्वपूर्ण उपकरण था।

(5) सैन्य गतिविधियों के समन्वय के लिए समितियों और उप-समितियों का गठन किया गया था। वे नौसेना, घोड़े, रथ, हाथी, सैनिकों की भर्ती और सैनिकों के लिए परिवहन और खाद्य आपूर्ति का प्रबंधन करते थे।

(6) अशोक ने धम्म के सिद्धांत का प्रचार करते हुए अपने साम्राज्य को एक साथ रखा, जिसके सिद्धांत सरल और सार्वभौमिक रूप से लागू थे। सिद्धांत ने शांति, अहिंसा और बड़ों के प्रति सम्मान के विचारों का प्रचार किया। धम्म के सिद्धांतों के प्रसार के लिए धम्म महागत को नियुक्त किया गया था।

(7) मौर्य प्रशासन की अंतिम विशेषता असोकन शिलालेखों में स्पष्ट है जो हमने अध्ययन किए हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि अशोक ने 'धम्म' की अपनी नीति की मुख्य विशेषताओं को अंकित किया। शिलालेखों के अनुसार, उन्होंने धम्म के प्रसार के लिए धम्म महामंत्रों के विशेष अधिकारियों को भी नियुक्त किया था।

प्रश्न 18. सम्राट अशोक के शासन प्रबंध पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- अशोक का शासन प्रबंध- अशोक को उत्तराधिकारी के

@MP_BOARD_25 (Telegram)

रूप में केवल एक विस्तृत साम्राज्य ही नहीं प्राप्त हुआ था, अपितु सुव्यवस्थित शासन-व्यवस्था भी, जो कुशल शासक चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा प्रतिपादित की गई थी। चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन व्यवस्था में थोड़ा बहुत परिवर्तन एवं परिवर्धन करके ही अशोक ने शासन प्रबंध किया। अशोक का शासन प्रबंध का आधार चन्द्रगुप्त मौर्य की ही शासन व्यवस्था है। अशोक को अपने पितामह चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन प्रबंध में जो कुछ भी थोड़ा बहुत परिवर्तन-परिवर्धन करना पड़ा, उसका मूल कारण उसकी नैतिकता एवं धार्मिकता है। अशोक के शासन प्रबंध का अध्ययन करने के पूर्व हमें उसके राजत्व-सिद्धांत पर विचार कर लेना आवश्यक है।

प्रश्न 19. प्राचीन काल में राजा किस प्रकार उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते थे? 36 पेज – 37

उत्तर– प्राचीन काल में राजा उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए निम्न विशेष तरीकों को अपनाया करते थे–

(1) सर्वप्रथम वे स्वयं को देवी-देवताओं से जोड़ लेते थे। यह काम सबसे पहले कुषाण वंश के शासकों ने किया।

(2) राजा अपनी मूर्तियाँ बनवाते थे।

(3) अपने नाम के सिक्के बनवाते थे।

(4) गुप्त वंश के शासकों ने उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए इतिहास, साहित्य, अभिलेखों एवं सिक्कों की सहायता ली।

(5) कुछ राजाओं ने राजकवियों की मदद से अपनी प्रशंसा में प्रशस्तियाँ भी लिखवाईं। हरिषेण द्वारा रचित ''प्रभाग प्रशस्ति'' जो सम्राट समुद्रगुप्त के लिए लिखी गई एक अच्छा उदाहरण है।

प्रश्न 20. प्रभावती गुप्त द्वारा दंगुन गांव को दान दिए जाने के बारे में वर्णन कीजिए। 51 पेज

उत्तर– प्रभावती गुप्त आरंभिक भरत के एक सबसे महत्वपूर्ण शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय (लगभग 375-415 ई.पू.) की पुत्री थी। उसका विवाह दक्कन पठार के वाकाटक परिवार में हुआ था, जो एक महत्वपूर्ण शासक वंश था। संस्कृत धर्मशास्त्रों के अनुसार, महिलाओं को भूमि जैसी संपत्ति पर स्वतंत्र अधिकार नहीं था, लेकिन एक अभिलेख से पता चलता है कि प्रभावती भूमि की स्वामी थी और उसने दान भी किया। इसका एक कारण यह हो सकता है, क्योंकि वह एक रानी (आरंभिक भारतीय इतिहास की ज्ञात कुछ रानियों में से एक थी और इसलिए उनका यह उदाहरण एक विरला ही रहा हो। यह भी

प्रश्न 21. महाजनपदों के विकास के साथ-साथ राजा और प्रजा के संबंध क्यों बिगड़ते चले गए। 38 पेज

उत्तर– महाजनपदों में राजाओं ने अपनी सुरक्षा के लिये किले का निर्माण करवाया था। साथ ही इसके द्वारा वे अपनी समृद्धि और शक्ति का प्रदर्शन भी करते थे। किले बनवाने से उसके अंदर के लोगों और क्षेत्र पर नियंत्रण रखना आसान होता। महाजनपदों में राजधानियों के चारों ओर लकड़ी, ईंट या पत्थर की ऊँची दीवारें बनाई गई थीं, जिसे किलाबंदी कहते हैं। महाजनपदों के राजा विशाल किले बनवाने लगे थे। साथ ही अब वे बड़ी सेना नियमित वेतन देकर साल-भर रखने लगे थे। इन सभी व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिए उपहारों पर निर्भर न रहकर उन्हें कर वसूलना पड़ा। कर का सबसे बड़ा हिस्सा कृषकों को चुकाना पड़ता था। उन्हें अपनी उपज का 1/6 हिस्सा कर के रूप में चुकाना पड़ता था, जिसे भाग कहा जाता था।

शिल्प पर भी कर लगाया गया जो कि श्रम कर के रूप में होता था। चरवाहों से भी कर अदायगी अपेक्षित थी। व्यापार के माध्यम से खरीदी-बिक्री की जाने वाली वस्तुओं पर भी कर लगाया जाता था। इससे प्रजा दुःखी हो गई और महाजनों के विकास के साथ-साथ राजा और प्रजा के संबंध बिगड़ते चले गये।

प्रश्न 22. 600 ई.पू. से 600 ईस्वी तक किसानों द्वारा कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए अपनाए गए तरीकों को स्पष्ट कीजिए। 38 पेज

उत्तर– कृषि उपज बढ़ाने के तरीके– उपज बढ़ाने का एक तरीका हल का प्रचलन था। जो छठी शताब्दी ई. पू. से ही गंगा और कावेरी की घाटियों के उर्वर कछारी क्षेत्र में फैल गया था। जिन क्षेत्रों में भारी वर्षा होती थी, वहाँ लोहे के फाल वाले हलों के माध्यम से उर्वर भूमि की जुताई की जाने लगी, इसके अलावा गंगा की घाटी में धान की रोपाई की वजह से उपज में भारी वृद्धि होने लगी। हालांकि किसानों को इसके लिए कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ती थी।

यद्यपि लोहे के फाल वाले हल की वजह से फसलों की उपज बढ़ने लगी, लेकिन ऐसे हलों का उपयोग उपमहाद्वीप के कुछ ही हिस्से में सीमित था। पंजाब और राजस्थान जैसे अर्धशुष्क जमीन वाले क्षेत्रों में लोहे के फाल वाले हल का प्रयोग बीसवीं सदी में शुरू हुआ। जो किसान उपमहाद्वीप के पूर्वोत्तर और मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में रहते थे, उन्होंने खेती के लिए कुदाल का

उपज बढ़ाने का एक और तरीका कुआं, तालाब और कहीं-कहीं नहरों के माध्यम से सिंचाई करना था। व्यक्तिगत लोगों और कृषक समुदायों ने मिलकर सिंचाई के साधन निर्मित किए। व्यक्तिगत तौर पर तालाबों, कुओं और नहरों जैसे सिंचाई साधन निर्मित करने वाले लोग प्रायः राजा या प्रभावशाली लोग थे, जिन्होंने अपने इन कामों का उल्लेख अभिलेखों में भी करवाया।

प्रश्न 23. मौर्य राजवंश के अभिलेखों ने अशोक के धम्म के संदेश को किस प्रकार घोषित किया?

उत्तर– मौर्य राजवंश के सम्राट अशोक द्वारा प्रवर्तित कुल 33 अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिन्हें अशोक ने स्तंभों, शिलाओं (चट्टानों) और गुफाओं की दीवारों में अपने 269 ईसापूर्व से 231 ईसापूर्व चलने वाले शासनकाल में खुदवाए। ये आधुनिक बंगलादेश, भारत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और नेपाल में जगह-जगह पर मिलते हैं और बौद्ध धर्म के अस्तित्व के सबसे प्राचीन प्रमाणों में से हैं। शिलालेखों के अनुसार अशोक के बौद्ध धर्म फैलाने के प्रयास भूमध्य सागर के क्षेत्र तक सक्रिय थे और सम्राट मिस्र और यूनान तक की राजनैतिक परिस्थितियों से भलीभाँति परिचित थे। इनमें बौद्ध धर्म की बारीकियों पर जोर कम और मनुष्यों को आदर्श जीवन जीने की सीखें अधिक मिलती हैं। पूर्वी क्षेत्रों में यह आदेश प्राचीन मागधी में ब्राह्मी लिपि के प्रयोग से लिखे गए थे। पश्चिमी क्षेत्रों के शिलालेखों में खरोष्ठी लिपि का प्रयोग किया गया। एक शिलालेख में यूनानी भाषा प्रयोग की गई, जबकि एक अन्य में यूनानी और अरामाई भाषा में द्विभाषीय आदेश दर्ज है। इन शिलालेखों में सम्राट अपने आप को ''प्रियदर्शी'' (प्राकृत में ''पियदस्सी'') और देवानाम्प्रिय (यानि देवों को प्रिय, प्राकृत में ''देवानम्पिय) की उपाधि से बुलाते हैं।

शाहनाज गढ़ी एवं मानसेहरा (पाकिस्तान) के अभिलेख खरोष्ठी लिपि में उत्कीर्ण हैं। तक्षशिला एवं लघमान (काबुल) के समीप अफगानिस्तान अभिलेख आरमाइक एवं ग्रीक में उत्कीर्ण है। इसके अतिरिक्त अशोक के समस्त शिलालेख, लघुशिला स्तम्भ लेख एवं लघु लेख ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण हैं। अशोक का इतिहास भी हमें इन अभिलेखों से प्राप्त होता है। अभी तक अशोक के 40 अभिलेख प्राप्त हो चुके हैं। सर्वप्रथम 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप नामक विद्वान ने अशोक के अभिलेख ☐

(आरंभिक समाज)

(लगभग 600 ई.पू. से 600 ईस्वी)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) वी.एस. सुकंथाकर कौन थे?

(a) डॉक्टर (b) पुरातत्वविद
(c) संस्कृत विद्वान (d) इतिहासकार

(2) महाभारत का समालोचनात्मक अध्ययन करने के लिए विद्वानों ने महत्वाकांक्षी परियोजना कब प्रारंभ की ?

(a) 1909 में (b) 1919 में (c) 1990 में (d) 1991 में

(3) निम्नलिखित भाषाओं में से सामान्य लोग किस भाषा का इस्तेमाल करते थे?

(a) हिंदी (b) उर्दू (c) संस्कृत (d) प्राकृत

(4) वर्णों के कितने प्रकार थे?

(a) 1 (b) 2 (c) 3 (d) 4

(5) मनु स्मृति कब लिखी गई ?

(a) 100 ई.पू. से 100 ई. (b) 200 ई.पू. से 200 ई.
(c) 300 ई.पू. से 300 ई. (d) 400 ई.पू. से 400 ई.

(6) जो लोग संस्कृत भाषा नहीं बोलते थे उन्हें कहा गया?

(a) शक (b) चांडाल
(c) मलेच्छ (d) निशाद

(7) महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण परियोजना किसके नेतृत्व में तैयार की गई?

(a) ऋषि व्यास (b) वाल्मीकि
(c) वी.एस. सुकथांकर (d) व्ही.एस. शर्मा

(8) महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने वाली परियोजना को पूर्ण होने में कितना समय लगा?

(a) 47 वर्ष (b) 40 वर्ष
(c) 45 वर्ष (d) 42 वर्ष

(9) बहुपति विवाह प्रणाली किस में प्रचलित थी?

(a) शकों में (b) सातवाहनों में
(c) पांडवों में (d) उपरोक्त सभी में

(10) मृच्छकटिकम् नामक नाटक के रचनाकार थे?

(a) अश्वघोष (b) शुद्रक
(c) हरिषेण (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर– (1) (c) (2) (b) (3) (a) (4) (c) (5) (b) (6) (a) (7) (c) (8) (a) (9) (c) (10) (b).

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(1) संस्कृत ग्रंथों में कुल शब्द का प्रयोग .... के लिए किया जाता है। परिवार

(2) शवों की अंत्येष्टि और मृत पशुओं को छूने वालों को .... कहा जाता था।

(3) .... ने युधिष्ठिर को द्यूत क्रीड़ा के लिए आमंत्रित किया।

(4) मनुस्मृति के अनुसार पैतृक जायदाद में हिस्सेदारी .... थी।

(5) महाभारत में ....श्लोकों की संख्या थी।

(6) महाभारत का सबसे महत्त्वपूर्ण उपदेशात्मक अंश .... है।

(7) कहानियों का संग्रह .... में होता है।

(8) महाभारत में उल्लेखित हस्तिनापुर .... में स्थित है।

(9) .... ने महाभारत की रचना की।

उत्तर– (1) सम्पूर्ण (2) चांडाल (3) दुर्योधन (4) पुत्रों (5) 1,00,000 (6) भगवत गीता (7) लेखक की विधा (8) मेरठ (9) वेदव्यास।

प्रश्न 3. सत्य / असत्य लिखिए–

(1) धर्म सूत्र की रचना 500 से 200 BC में की गई।

(2) महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने में 46 वर्ष लगे।

(3) गोत्र परंपरा में प्रत्येक गोत्र का नाम एक ऋषि के नाम पर होता है।

(4) धर्म शास्त्रों में पांच प्रकार के विवाह का वर्णन किया गया है।

(5) मनुस्मृति के अनुसार पिता की संपत्ति में पुत्री का पुत्र के समान अधिकार होता है।

(6) गुरु द्रोण ने गुरु दक्षिणा के रूप में एकलव्य से उसके दाहिने हाथ का अंगूठा मांग लिया था।

(7) एक ही गोत्र और जाति में विवाह करने वाला बहर विवाह कहलाता है।

(8) वर्ण व्यवस्था का मुख्य आधार जाति था।

(9) कुंती दुर्योधन की मां थी।

(10) घटोत्कच भीम का पुत्र था।

उत्तर– (1) असत्य (2) असत्य (3) सत्य (4) असत्य (5) असत्य (6) सत्य (7) असत्य (8) असत्य (9) असत्य (10) सत्य।

	'अ'		'ब'
(1)	महाभारत	(a)	जन्म से 25 वर्ष तक
(2)	भगवत गीता	(b)	अश्वघोष
(3)	मातंग	(c)	पाणिनी
(4)	वर्ण व्यवस्था	(d)	राजा की सेवा के बदले दिए जाने वाली कीमत
(5)	ब्रह्मचर्य आश्रम	(e)	एक बोधित्सव जिन्होंने चांडाल के रूप में जन्म लिया
(6)	कर	(f)	वेदव्यास
(7)	अष्टाध्यायी	(g)	मनुष्य का विभाजन
(8)	बुद्धचरित्	(h)	महाभारत का उपदेशात्मक अंश

उत्तर– (1) (f), (2) (h), (3) (e), (4) (g), (5) (a), (6) (d), (7) (c), (8) (b).

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिये–

(1) पितृवंशिकता का क्या अर्थ है?

(2) अंतर्विवाह का क्या अर्थ है?

(3) पुराणों की संख्या कितनी है?

(4) वर्ण व्यवस्था किस पर आधारित थी?

(5) कुंती कौन थी?

(6) धर्म ग्रंथों के अनुसार संस्कारों की संख्या कितनी बताई गई है?

(7) महाभारत किस भाषा में लिखा गया ग्रंथ है?

(8) पिटक कितने हैं?

(9) महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएं किसमें संकलित है?

(10) महाभारत किसके द्वारा लिखा गया?

उत्तर– (1) वह वंश परंपरा जो पिता के पुत्र फिर पौत्र, प्रपौत्र आदि से चलती हो (2) एक गोत्र, कुल अथवा एक जाति या फिर एक स्थान पर बसने वालों का हो सकता है (3) अठारह (18) (4) श्रम विभाजन (5) पाण्डवों की माता थी (6) तेरह (7) संस्कृत (8) तीन (9) जातक या जातक कथाएँ, बौद्ध ग्रंथ त्रिपिटक का सूत्रपिटक अंतर्गत खुद्दक निकाय का 10वाँ भाग है। (10) वेदव्यास।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. रेशम के बुनकरों की सामाजिक स्थिति क्या थी? वर्णन कीजिए।

उत्तर– बुनकर समुदायों के इतिहास का लेखा-जोखा हमें कम ही प्राप्त होता है, किन्तु कुछ अपवाद हैं जैसे कि मंदसौर

इसमें रेशम बेफ बुनकरों की एक श्रेणी का वर्णन मिलता है जो मूलत: लाट गुजरात प्रदेश बेफ निवासी थे और वहाँ से मंदसौर चले गए थे, जिसे उस समय दशपुर के नाम से जाना जाता था। यह कठिन यात्रा उन्होंने अपने बच्चों और बांधवों के साथ संपन्न की। उन्होंने वहाँ के राजा की महानता के बारे में सुना था अत: वे उस बेफ राज्य में बसना चाहते थे।

यह अभिलेख जटिल सामाजिक प्रक्रियाओं की झलक देता है तथा श्रेणियों बेफ स्वरूप बेफ विषय में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। हालांकि श्रेणी की सदस्यता शिल्प में विशेषज्ञता पर निर्भर थी। व कुछ सदस्य अन्य जीविका भी अपना लेते थे। इस अभिलेख से यह भी ज्ञात होता है कि सदस्य एक व्यवसाय बेफ अतिरिक्त और चीजों में भी सहभागी होते थे। सामूहिक रूप से उन्होंने शिल्पकर्म से अखर्जत धन को सूर्य देवता बेफ सम्मान में मंदिर बनवाने पर खर्च किया।

रेशम बुनकरों ने क्या किया?

निम्नलिखित अंश संस्कृत बेफ एक अभिलेख से उद्धृत है– कुछ लोगों को संगीत से अत्यंत प्रेम है जो कानों को प्रिय होता है। अन्य को गर्व है सैकड़ों उत्तम जीवनियों; बेफ रचयिता होने का। इस तरह वे अनेक कथाओं से परिचित हैं। अन्यद्ध विनीत भाव से उत्तम धखमक व्याख्यानों में तल्लीन हैं, बेफछ लोग अपने धखमक अनुष्ठानों में श्रेष्ठ हैं। इसी तरह अपने पर निगाह रखने वाले वैदिक, खगोल शास्त्र में पारंगत हैं। अन्य जन युद्ध करने में शूरवीर, शत्रुओं का अनिष्ट करते हैं।

प्रश्न 2. पितृवंशिकता तथा मातृ वंशिकता में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– पितृवंशिकता से अभिप्राय ऐसी वंश परंपरा से है जो पिता के बाद पुत्र, फिर पौत्र तथा प्रपौत्र आदि से चलती है। इसके विपरीत मातृवंशिकता का प्रयोग हम तब करते हैं जब वंश परम्परा माँ से जुड़ी होती है।

प्रश्न 3. महाकाव्य काल में संपत्ति का अधिकार का मुख्य आधार क्या था?

उत्तर– महाभारत काल में सम्पत्ति के मुख्य आधार दो प्रकार के थे- एक जिसमें स्त्री पुरुष के अलग-अलग अधिकार थे तथा दूसरा जिसमें वर्ण और सम्पत्ति के अधिकार थे। सम्पत्ति के स्वामित्व के मुद्दे इन कहानियों में वर्णित हैं धर्मसूत्र और धर्मशास्त्रों में भी उठाए गए हैं। पिता की जायदाद का हिस्सा माता-पिता की मृत्यु के बाद सभी पुत्रों में समान मात्रा में बंटवारा किया जाना चाहिए। स्त्रियाँ इस पैतृक संसाधन में हिस्सेदारी की माँग नहीं कर सकती थीं।

आधार (लैंगिक आधार के अतिरिक्त) वर्ण था।

प्रश्न 4. बहुपति विवाह तथा बहुपत्नी विवाह में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– **बहुपति विवाह–** (1) एक स्त्री द्वारा एक पति के जीवित होते हुए अन्य पुरुषों से भी विवाह करना।

(2) एक समय पर दो या दो से अधिक पुरुषों से विवाह करना बहुपति विवाह कहलाता है।

बहुपत्नी विवाह– (1) बहुपत्नी विवाह प्रथा– बहुपत्नी विवाह जिसके अनुसार एक पुरुष को अपनी पहली के जीवित रहते हुए भी अन्य स्त्रियों से विवाह करने की छूट दी जाती है।

(2) यह प्रथा सामान्यतया जनजातियों में प्रचलित है।

(3) प्राचीन समय में किसी स्त्री के पुत्र या संतान नहीं होती थी तो परिवार के सदस्य मिलकर उस स्त्री के पति का दूसरा विवाह करा देते थे, यह भी बहुपत्नी विवाह प्रथा का हिस्सा है।

प्रश्न 5. आरंभिक समाज के आर्थिक जीवन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– **आरंभिक समाज के आर्थिक जीवन पर प्रकाश–** प्राचीन भारत औद्योगिक विकास के मामले में शेष विश्व के बहुत देशों से कहीं अधिक आगे था। रामायण और महाभारत काल से पहले ही भारतीय व्यापारिक संगठन न केवल दूर-देशों तक व्यापार करते थे, बल्कि वे आर्थिक रूप से इतने मजबूत एवं सामाजिक रूप से इतने सक्षम, संगठित और शक्तिशाली थे कि उनकी उपेक्षा कर पाना तत्कालीन राज्याध्यक्षों के लिए भी असंभव था।

उन दिनों व्यक्तिगत स्वामित्व वाली निजी और पारिवारिक व्यवसायों के अतिरिक्त तत्कालीन भारत में कई प्रकार के औद्योगिक एवं व्यावसायिक संगठन चालू अवस्था में थे, जिनका व्यापार दूरदराज के अनेक देशों तक विस्तृत था। उनके काफिले समुद्री एवं मैदानी रास्तों से होकर अरब और यूनान के अनेक देशों से निरंतर संपर्क बनाए रहते थे। उनके पास अपने-अपने कानून होते थे। संकट से निपटने के लिए उन्हें अपनी सेनाएं रखने का भी अधिकार था। हाथ से काम करने वाले शिल्पकार, व्यवसाय चलाने वाली जातियां व्यवस्थित थीं। सामूहिक हितों के लिए संगठित व्यापार को अपनाकर उन्होंने अपनी सूझबूझ का परिचय दिया था। इसी कारण वे आर्थिक एवं सामाजिक रूप से काफी समृद्ध भी थीं।

प्रश्न 6. महाभारत को एक प्रगतिशील ग्रंथ क्यों कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– महाभारत हिन्दुओं का एक प्रमुख काव्य ग्रंथ है जो स्मृति

@MP_BOARD_25 (Telegram)

के इतिहास वर्ग में आता है। कभी-कभी इसे केवल भारत कहा जाता है यह काव्य ग्रंथ भारत का अनुपम धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक ग्रंथ है। विश्व का सबसे लंबा यह साहित्यिक ग्रंथ और महाकाव्य, हिन्दू धर्म के प्रमुखतम ग्रंथों में से एक है। इस ग्रंथ को हिन्दू धर्म में पंचम वेद माना जाता है। यद्यपि इसे साहित्य की सबसे अनुपम कृतियों में से एक माना जाता है, किन्तु आज भी यह ग्रंथ प्रत्येक भारतीय के लिए एक अनुकरणीय स्रोत है। यह कृति प्राचीन भारत इतिहास की एक गाथा है। इसी में हिन्दू धर्म का पवित्रतम ग्रंथ भगवद्गीता सन्निहित है। पूरे महाभारत में 1,00,000 श्लोक हैं जो यूनानी काव्यों इलियड और ओडिसी से परिमाण में 10 गुना अधिक हैं।

प्रश्न 7. मनुस्मृति में चाण्डालों के क्या कर्तव्य बताये गये हैं?

उत्तर- मनुस्मृति में चाण्डालों के निम्न कर्तव्य (कार्य) बताए गये हैं-

(1) उन्हें गांव के बाहर रहना होता था।

(2) वे फेंके हुए बर्तनों का इस्तेमाल करते थे।

(3) चाण्डाल मरे हुए लोगों के वस्त्र तथा लोहे के आभूषण पहनते थे।

(4) रात्री में वे गांव और नगरों में चल-फिर नहीं सकते थे।

(5) चाण्डालों को संबंधियों से विहीन मृतकों की अंत्येष्टि करनी पड़ती थी।

(6) उन्हें वधिक के रूप में भी कार्य करना होता था।

प्रश्न 8. कौरव और पाण्डवों के मध्य युद्ध के क्या कारण थे?

उत्तर- कौरव और पाण्डवों के मध्य महाभारत युद्ध होने का मुख्य कारण निम्न है-

(1) महाभारत युद्ध होने का मुख्य कारण कौरवों की उच्च महत्वाकांक्षाएं और धृतराष्ट्र का पुत्र मोह था।

(2) दुर्योधन पाण्डवों की उन्नति देख नहीं पाया और शकुनि के सहयोग से द्यूत में छल से युधिष्ठिर से उसका सारा राज्य जीत लिया और कुरु राज्य सभा में द्रौपदी को निर्वस्त्र करने का प्रयास कर उसे अपमानित किया। सम्भवतः इसी दिन महाभारत के युद्ध के बीज पड़ गये थे।

प्रश्न 9. जाति व्यवस्था के कोई तीन दोष बताइये।

उत्तर- जाति व्यवस्था के दोष निम्न हैं-

1. श्रम की गतिशीलता पर प्रतिबंध- चूंकि व्यक्ति को अपनी जातीय व्यवसाय को ही करना पड़ता है, जिसे वह अपनी इच्छा अथवा अनिच्छा के अनुसार बदल नहीं सकता, अतएव इसने श्रम की गतिशीलता को रोका है। इससे गतिहीनता उत्पन्न हुई है।

2. एकता में बाधक- इसने एक जाति को दूसरी जाति से पृथक करके तथा उनके बीच किसी भी सामाजिक सम्पर्क को प्रतिबंधित करके हिंदू समाज में सद्भावना एवं एकता के विकास को रोका है। इसने हिन्दू समाज का विघटन किया तथा इसे निर्बल बना दिया।

3. सामाजिक प्रगति में बाधक- यह राष्ट्र की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति में बड़ी भारी बाधक रही है। चूंकि लोग कर्म के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं, अतएव वे भाग्यवादी हो जाते हैं, और चूंकि उनकी आर्थिक स्थिति निश्चित होती है, इससे उनमें जड़ता आ जाती है तथा उनका उत्क्रम एवं उद्यम समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 10. आरंभिक समाज के आर्थिक जीवन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- देखिए प्रश्न क्रमांक 5

प्रश्न 11. महाभारत की मुख्य कथा पारिवारिक संबंधों का विश्लेषण करती है। प्रमाण सहित इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- आरम्भिक समाजों के संदर्भ में इतिहासकारों को विशिष्ट परिवारों के बारे में जानकारी आसानी से मिल जाती है। किन्तु सामान्य लोगों के पारिवारिक संबंधों को पुनर्गठित करना मुश्किल हो जाता है। इतिहासकार परिवार और बंधुता संबंधी विचारों का भी विश्लेषण करते हैं। इनका अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे लोगों की सोच का पता चलता है। संभवतः इन विचारों ने लोगों के क्रियाकलापों को प्रभावित किया होगा। इसी तरह व्यवहार ने विचारों पर भी असर डाला होगा।

संस्कृत शब्द में 'कुल' शब्द का प्रयोग परिवार के लिए 'जाति' का बांधवों के बड़े समूह के लिए होता है, पीढ़ी दर पीढ़ी किसी भी कुल के पूर्वज इकट्ठे रूप में एक ही वंश के माने जाते हैं।

प्रश्न 12. आरंभिक काल में महिलाओं की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर- आरम्भिक काल में अनेक सामाजिक कुप्रथाओं, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, वेश्यावृत्ति, विधवा दुर्दशा, तलाक, दहेज प्रथा आदि के कारण महिलाओं की स्थिति गौण व इसका जीवन संरक्षण का जीवन बन कर रह गया है।

प्रश्न 13. चीन से आए बौद्ध भिक्षुओं व पांचवी शताब्दी में निम्न जातियों के लिए क्या नियम थे ? वर्णन कीजिए।

उत्तर- चीन से आए बौद्ध भिक्षुओं व पांचवी शताब्दी में निम्न जातियों के लिए नियम-

(1) बौद्ध ग्रंथ जिसमें भिक्षुओं के लिए नियम शामिल है, विनय पिटक है।

(2) धम्मपिटक बौद्ध लिखित त्रिपिटक ("तीन टोकरी") के तीन खंडों में सबसे पुराना और सबसे छोटा है और यह बौद्ध धर्म नियमों के अनुसार मठवासी जीवन और भिक्षुओं और भिक्षुणियों के दैनिक मामलों का निर्धारण करता है।

(3) इसमें पांच पुस्तक शामिल हैं- पराजिका, महावग्ग, चुल्लवग्ग और परिवार, विनयपिटक।

(4) इसमें भिक्षुओं और भिक्षुणियों के आचरण और मार्गदर्शन के लिए बुद्ध द्वारा स्थापित किये गए प्रशासनिक कृत्यों और कर्तव्यों के सभी अनुशासनात्मक नियम शामिल हैं।

(5) बौद्ध संघ में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए अलग-अलग नियम हैं। जो यह बताता है कि एक-दूसरे के साथ व समाज के साथ कैसे व्यवहार करना है।

प्रश्न 14. क्या प्रारंभिक राज्यों में राजा केवल क्षत्रिय थे? चर्चा कीजिए।

उत्तर- धर्मशास्त्र के अनुसार, केवल क्षत्रियों को ही राजा माना जाता था, लेकिन यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि कई महत्वपूर्ण सत्तारूढ़ वंशों की उत्पत्ति अन्य वर्णों से भी हुई थी। मौर्य कई लोगों द्वारा क्षत्रिय माने जाते थे।

आरंभिक राज्यों में शासक निश्चित रूप से क्षत्रिय ही नहीं होते थे बल्कि अन्य वर्णों से भी संबंधित होते थे। देश के अंदर शुरू से ही वर्ण व्यवस्था जटिल थी और चारों वर्णों के लिए अलग-अलग कर्तव्य निर्धारित थे। उसके अनुसार राज्य करने का अधिकार केवल क्षत्रिय वर्ग के लोगों को ही था, धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों में इसे एक आदर्श व्यवस्था के रूप में उल्लेख किया गया है। क्षत्रियों का कार्य शासन करना, युद्ध करना, लोगों को सुरक्षा प्रदान करना, न्याय करना, यज्ञ करवाना, वेद पढ़ना और दान-दक्षिणा देना था। ब्राह्मण भी इस व्यवस्था से संतुष्ट थे, क्योंकि उन्हें सामाजिक ढांचे में पहला स्थान प्राप्त था और वे वर्ण-व्यवस्था को दैवीय व्यवस्था मानते थे। यह भी सत्य है कि ग्रंथों में गैर-क्षत्रिय राजा होने के प्रमाण मिलते हैं। कई महत्वपूर्ण राजवंशों की उत्पत्ति अन्य वर्गों से हुई थी। मौर्य जिन्होंने एक विशाल साम्राज्य पर शासन किया, के उद्भव को लेकर गर्मजोशी से बहस होती रही है। बाद के बौद्ध ग्रंथों में यह इंगित किया जाता है कि वे क्षत्रिय थे, किंतु ब्राह्मणीय शास्त्र उन्हें निम्न कुल का मानते हैं।

प्रश्न 15. प्रारंभिक समाजों में लिंग भेद कितने महत्वपूर्ण थे? कारण सहित समझाइए।

उत्तर- समाज में लिंग के आधार की भेदभाव का सम्बन्ध के विभिन्न विचारधाराओं से मुख्य रूप से सम्बन्धित पाया जाता है, दूसरा शब्दों में लिंगों के बीच असमानता का मूल विभिन्न सामाजिक प्रथाओं के कारण उत्पन्न होता है। परिवार में लड़का पढ़ाई, कपड़े धोने जैसे घर के अन्य काम करने के लिए लड़कियों को ही कहा जाता है।

लैंगिक समानता का उद्देश्य पुरुषों और महिलाओं के बीच सभी सीमाओं और मतभेदों को दूर करना है। यह पुरुष और महिलाओं के बीच किसी भी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना है।

(1) लिंग विभेद का एक प्रमुख कारण भारतीय मान्यताओं तथा परम्पराओं का है।

(2) संकीर्ण विचारधारा लड़के-लड़की में भेद का एक कारण है। लोगों में यह मान्यता है कि लड़के, माता-पिता के बुढ़ापे का सहारा बनेंगे, वंश चलाएंगे और उन्हें पढ़ा-लिखा दिया जाय तो घर की उन्नति होगी।

(3) जागरूकता के अभाव के कारण भी लैंगिक भेदभाव उपजता है।

(4) लैंगिक भेद में अशिक्षा की भूमिका भी कम नहीं है। अशिक्षित व्यक्ति परिवारों तथा समाज में चल आ रहे नियमों और अंधविश्वासों पर ही कायम रहते हैं तथा बिना सोचे-समझे उसका पालन करते हैं।

(5) भारतवर्ष में आर्थिक तंगी से जूझ रहे परिवारों की संख्या अधिक है। ऐसे में वे बालिकाओं की अपेक्षा बालक संतान के रूप को अधिक प्राथमिकता देते हैं, ताकि वह उनके श्रम में हाथ बटाए और आर्थिक जिम्मेदारियों का बोझ बांटने का कार्य करें।

प्रश्न 16. आरंभिक समाज ई.पू. 600 से 600 ई. तक की पितृवंशिकता व्यवस्था के आदर्श और विवाह के नियमों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- पितृवंशिकता आदर्श और विवाह-

अधिकतर राजवंश लगभग छठी शताब्दी ई.पू. से पितृवंशिकता प्रणाली का अनुसरण करते थे। हालांकि इस प्रथा में विभिन्नता थी- कभी पुत्र के न होने पर एक भाई दूसरे का उत्तराधिकारी हो जाता था तो कभी बंधु-बांधव "सिंहासन पर अपना अधिकार जमाते थे। सिंहासन विशिष्ट परिस्थितियों में स्त्रियां जैसे प्रभावती गुप्त सत्ता का उपभोग करती थीं।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

पितृवंशिकता के प्रति झुकाव शासक परिवारों वेफ के लिए कोई अनूठी बात नहीं थी। ऋग्वेद जैसे कर्मकांडीय ग्रंथ वेफ मंत्रों से भी यह बात स्पष्ट होती है। यह संभव है कि धनी वर्ग वेफ पुरुष और ब्राह्मण भी ऐसा ही दृष्टिकोण रखते थे।

जहाँ पितृवंश को आगे बढ़ाने वेफ के लिए पुत्र महत्वपूर्ण थे वहाँ इस व्यवस्था में पुत्रियों को अलग तरह से देखा जाता था। पैतृक संसाधनों पर उनका कोई अधिकार नहीं था। अपने गोत्र से बाहर उनका विवाह कर देना ही अपेक्षित था। इस प्रथा को बहिर्विवाह पद्धति कहते हैं और इसका तात्पर्य यह था कि ऊँची प्रतिष्ठा वाले परिवारों की कम उम्र की कन्याओं और स्त्रियों का जीवन बहुत सावधानी से नियमित किया जाता था, जिससे 'उचित' समय और 'उचित' व्यक्ति से उनका विवाह किया जा सके। इसका प्रभाव यह हुआ कि कन्यादान अर्थात् विवाह में कन्या की भेंट को पिता का महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य माना गया।

नए नगरों के उद्भव से सामाजिक जीवन अधिक जटिल हुआ। यहाँ पर निकट और दूर से आकर लोग मिलते थे और वस्तुओं की खरीद फरोख्त के साथ ही इस नगरीय परिवेश में विचारों हालाँकि इन ग्रंथों के ब्राह्मण लेखकों का यह मानना था कि उनका दृष्टिकोण सार्वभौमिक है और उनके बनाये नियमों का सबके द्वारा पालन होना चाहिए, किंतु वास्तविक सामाजिक संबंध कहीं अधिक जटिल थे। इस बात को भी ध्यान में रखना जरूरी है कि उपमहाद्वीप में फैली क्षेत्रीय विभिन्नता और संचार की बाधाओं की वजह से भी ब्राह्मणों का प्रभाव सार्वभौमिक कदापि नहीं था।

दिलचस्प बात यह है कि धर्मसूत्र और धर्मशास्त्र विवाह के आठ प्रकारों को अपनी स्वीकृति देते हैं। इनमें से पहले चार 'उत्तम' माने जाते थे और बाकियों को निंदित माना गया। संभव है कि ये विवाह पद्धतियाँ उन लोगों में प्रचलित थी जो ब्राह्मणीय नियमों को अस्वीकार करते थे।

प्रश्न 17. शास्त्रों के अनुसार केवल क्षत्रिय राजा हो सकते थे, यह बात सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं है। सिद्ध करने के लिए प्रमाण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर– शास्त्रों के अनुसार वे क्षत्रिय राजा हो सकते थे, किन्तु अनेक महत्वपूर्ण राजवंशों की उत्पत्ति अन्य वर्णों से भी हुई थी। मौर्य वंश जिसने एक विशाल साम्राज्य पर शासन किया, वेफ उद्भव पर गर्मजोशी से बहस होती रही है। बाद के बौद्ध ग्रंथों में यह इंगित किया गया है कि वे क्षत्रिय थे, किन्तु ब्राह्मणीय शास्त्र उन्हें निम्न कुल का मानते हैं। शुंग और कण्व जो मौर्यों के उत्तराधिकारी थे, ब्राह्मण थे। वस्तुतः राजनीतिक सत्ता का उपभोग हर वह व्यक्ति कर सकता था जो समर्थन और संसाधन जुटा सके। राजत्व क्षत्रिय कुल में जन्म लेने पर शायद ही निर्भर करता था। अन्य शासकों को जैसे शक जो मध्य एशिया से भारत आए, ब्राह्मण मलेच्छ, बर्बर अथवा अन्यदेशीय मानते थे। किन्तु संस्कृत वेफ संभवतः आरंभिक अभिलेखों में से एक में प्रसिद्ध शक राजा रुद्रदामन लगभग दूसरी शताब्दी ईस्वी द्वारा सुदर्शन सरोवर के जीर्णोद्धार का वर्णन मिलता है। इससे यह ज्ञात होता है कि शक्तिशाली मलेच्छ संस्कृतीय परिपाटी से अवगत थे।

एक और दिलचस्प बात यह है कि सातवाहन कुल सबसे प्रसिद्ध शासक गोतमी-पुत्त सिरी-सातकनि ने स्वयं को अनूठा ब्राह्मण और साथ ही क्षत्रियों कुल दर्प का हनन करने वाला बताया था। उसने यह भी दावा किया कि चार वर्णों के बीच विवाह संबंध होने पर उसने रोक लगाई। किन्तु फिर भी वेफ रुद्रदामन वेफ परिवार से उसने विवाह संबंध स्थापित किए। जैसा आप इस उदाहरण में देख सकते हैं, जाति प्रथा वेफ भीतर आत्मसात होना बहुधा एक जटिल सामाजिक प्रक्रिया थी। सातवाहन स्वयं को ब्राह्मण वर्ण का बताते थे, जबकि ब्राह्मणीय शास्त्र के अनुसार राजा को क्षत्रिय होना चाहिए। वे चतुर्वर्णी व्यवस्था की मर्यादा बनाए रखने का दावा करते थे, किन्तु साथ ही इन लोगों से वैवाहिक संबंध भी स्थापित करते थे जो इस वर्ण व्यवस्था से ही बाहर थे और जैसा हमने देखा वह अंतर्विवाह पद्धति का पालन करते थे न कि बहिर्विवाह प्रणाली का जो ब्राह्मणीय ग्रंथों में प्रस्तावित है।

प्रश्न 18. चांडाल कौन थे? चीनी यात्रियों के अनुसार उनके विषय में क्या लिखा गया है?

उत्तर– चांडाल भारत में अछूतों का एक ऐसा वर्ग है, जिसे सामान्यतः जाति से बाहर तथा अछूत माना जाता है। यह एक प्राचीन और सबसे अधिक शोषित जाति है। इसे श्मशान पाल, डोम, अंतवासी, श्वपच, श्मशान कर्मी, अंत्यज, चांडालनी, पुक्कश, मतंग, दीवाकीर्ति भतांग, श्वपच आदि नामों से पुकारा जाता है।

भगवान गौतमबुद्ध ने सुत्तनिपता में चंडाल का जिक्र किया है। चांडाल वर्ण व्यवस्था की सबसे निचली पाँचवा वर्ण बताया है। प्राचीन विधि संहिता "मनुस्मृति" के अनुसार इस वर्ग का उदय एक ब्राह्मण महिला और एक शूद्र पुरुष के मिलाप से हुआ था। कुछ विद्वानों का मत है कि नामशूद्र की उत्पत्ति बिहार की राजमहल पहाड़ियों में निवास करने वाली एक आदिम जनजाति से हुई है।

प्रश्न 19. महाभारत एक गतिशील ग्रंथ है, विस्तार से समझाइए।

उत्तर– महाभारत एक गतिशील ग्रंथ– महाभारत का विकास संस्कृत के पाठ के साथ ही समाप्त नहीं हो गया। शताब्दियों से इस महाकाव्य के अनेक पाठान्तर भिन्न-भिन्न भाषाओं में लिखे गए। ये सब उस संवाद को दर्शाते थे जो इनके लेखकों, अन्य लोगों और समुदायों के बीच कायम हुए। अनेक कहानियाँ जिनका उद्भव एक क्षेत्र विशेष में हुआ और जिनका खास लोगों में प्रसार हुआ, वे सब इस महाकाव्य में समाहित कर ली गईं। साथ ही इस महाकाव्य की मुख्य कथा की अनेक पुनर्व्याख्याएं की गईं। इसके प्रसंगों को मूर्तिकला और चित्रों में भी दर्शाया गया। इस महाकाव्य ने नाटकों और नृत्य कलाओं के लिए भी विषय-वस्तु प्रदान की। इसलिए महाभारत को एक गतिशील ग्रंथ कहा गया है।

प्रश्न 20. संपत्ति में भागीदारी से क्या अभिप्राय है? संपत्ति में भागीदार कौन-कौन किस प्रकार होता था? वर्णन कीजिए।

उत्तर– लोग अपनी सम्पत्ति के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा का दावा करते थे या फिर उन्हें यह स्थिति प्रदान की जाती थी। किन्तु समाज में अन्य संभावनाएं भी थी। वह स्थिति जहाँ दानशील आदमी का सम्मान किया जाता था तथा कृपण व्यक्ति अथवा वह जो स्वयं अपने लिए संपत्ति संग्रह करता था। घृणा का पात्र होता था, प्राचीन तमिलकम् एक ऐसा ही क्षेत्र था जहाँ उपरोक्त आदर्शों को संजोया जाता था। इस क्षेत्र में 2000 वर्ष पहले अनेक सरदारियाँ थी। यह सरदार अपनी प्रशंसा गाने वाले चारण और कवियों के आश्रयदाता होते थे। तमिल भाषा के संगम साहित्यिक संग्रह में सामाजिक और आर्थिक संबंधों का अच्छा चित्रण है जो इस ओर इंगित करता है कि हालांकि धनी और निर्धन के बीच विषमताएं थी, जिन लोगों का संसाधनों पर नियंत्रण था, उनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वे मिल बाँट कर उसका उपयोग करेंगे।

प्रश्न 21. महाभारत कालीन भारतीय समाज की प्रमुख समस्याएं क्या थीं?

उत्तर– महाभारत कालीन भारतीय समाज की प्रमुख समस्याएँ–

(1) इस काल में स्त्रियों को कोई विशेष अधिकार नहीं थे। स्त्रियों को पैतृक सम्पत्ति में स्वामित्व का अधिकार नहीं था।

(2) इस काल में लोग मांस-मछलियों का भी उपभोग करते थे। जैसे कि अश्वमेध से ऐसा पता चलता है लोगों द्वारा मदिरा पान भी किया जाता था। जुआ भी खेला जाता था।

प्रश्न 22. प्राचीनकाल में सम्पत्ति के स्वामित्व के संदर्भ में महिलाओं की स्थिति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– प्राचीनकाल में सम्पत्ति के स्वामित्व के संदर्भ में महिलाओं की स्थिति– संपत्ति के स्वामित्व के मुद्दे मनुस्मृति के अनुसार पैतृक जायदाद का माता-पिता की मृत्यु के बाद सभी पुत्रों में समान रूप से बँटवारा किया जाना चाहिए, किन्तु ज्येष्ठ पुत्र विशेष भाग का अधिकारी था। स्त्रियाँ इस पैतृक संसाधन में, हिस्सेदारी की माँग नहीं कर सकती थी।

किन्तु विवाह के समय मिले उपहारों पर स्त्रियों का स्वामित्व माना जाता था और इसे स्त्रीधन (अर्थात् स्त्री का धन) की संज्ञा दी जाती थी। इस संपत्ति को उनकी संतान विरासत के रूप में प्राप्त कर सकती थी और इस पर उनके पति का कोई अधिकार नहीं होता था। किंतु मनुस्मृति स्त्रियों को पति की आज्ञा के विरुद्ध भी चेतावनी देती है।

उच्च वर्ग की महिलाएं संसाधनों पर अपनी पैठ रखती थीं, सामान्यतः भूमि, पशु और धन पर पुरुषों का ही नियंत्रण था। दूसरे शब्दों में, स्त्री और पुरुष के बीच सामाजिक हैसियत की भिन्नता संसाधनों पर उनके नियंत्रण की भिन्नता की वजह से अधिक प्रखर हुई।

प्रश्न 23. कुल और जाति में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कुल और जाति में अंतर– कुल ऐसा समूह जिसके सदस्यों में रक्तसंबंध हो, जो एक परंपरागत वंशानुक्रम (डिसेंट) बंधन को स्वीकार करते हो, भले ही ये मातृरेखीय हों या पितृरेखीय। जबकि जाति एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके अंतर्गत एक समाज अनेक आत्मकेन्द्रित एवं एक-जाति एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके अन्तर्गत एक समाज अनेक आत्मकेन्द्रित एवं एक-दूसरे से पूर्णतः पृथक इकाइयों (जातियों) में विभाजित रहता है, इन इकाइयों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध ऊँच-नीच के आधार पर सांस्कारिक रूप से निर्धारित होते हैं।

प्रश्न 24. सातवाहन शासकों के अंतर्गत माताएँ किस प्रकार महत्वपूर्ण मानी जाती थी? उदाहरण दीजिए।

उत्तर– शातकर्णी सातवाहन वंश का सबसे महान शासक था जिसने न केवल अपने साम्राज्य की कोई प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित किया अपितु एक विशाल साम्राज्य की भी स्थापना की थी। ये पहला सातवाहन राजा था, जिसने अपने नाम के साथ अपने माता का नाम जोड़ा था। गौतमी पुत्र श्री सातकर्णी तथा उसकी विजयों के बारे में हमें उसकी माता गौतमी बालश्री के नासिक शिलालेखों से सम्पूर्ण जानकारी मिलती है। जिससे स्पष्ट होता है कि सातवाहन के अंतर्गत माताएं बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती थीं।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 25. लोगों को गोत्रों में वर्गीकृत करने की ब्राह्मणीय पद्धति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– एक ब्राह्मणीय पद्धति जो लगभग 1000 ई.पू. के बाद से प्रचलन में आई। वह लोगों (खासतौर से ब्राह्मणों) को गोत्रों में वर्गीकृत करने की थी। प्रत्येक गोत्र एक वैदिक ऋषि के नाम पर होता था। उस गोत्र के सदस्य ऋषि के वंशज माने जाते थे। गोत्रों के दो नियम महत्वपूर्ण थे, विवाह के पश्चात् स्त्रियों को पिता के स्थान पर पति के गोत्र का माना जाता था तथा एक ही गोत्र के सदस्य आपस में विवाह संबंध नहीं रख सकते थे। □

अध्याय–4 विचारक, विश्वास और इमारतें

(सांस्कृतिक विकास 600 ई.पू. से 600 ई. तक)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) अधिकांश बौद्ध ग्रंथ किस भाषा में लिखे गए–

(a) पाली (b) संस्कृत
(c) चीनी (d) तिब्बती

(2) गुंदुर आंध्र प्रदेश के कमिश्नर ने अमरावती की यात्रा कब की–

(a) 1850 ई. में (b) 1853 ई. में
(c) 1854 ई. में (d) 1855 ई. में

(3) सांची के बौद्ध स्तूप की खोज कब की गई ?

(a) 1964 ई. में (b) 1950 ई. में
(c) 1818 ई. में (d) 1820 ई. में

(4) महात्मा बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ–

(a) 605 BC (b) 486 BC
(c) 483 BC (d) 470 BC

(5) सांची कनखेड़ा क्या है?

(a) एक गांव (b) एक व्यापारिक केंद्र
(c) एक शहर (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

(6) ऋग्वेद में किन देवताओं का उल्लेख मिलता है–

(a) अग्नि (b) इंद्र
(c) सोम (d) उपरोक्त सभी

(7) त्रिपिटक का संबंध किस धर्म से है?

(a) जैन (b) बौद्ध
(c) हिंदू (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

(8) सांची को विश्व धरोहर सूची में कब घोषित किया गया?

(a) 1950 में (b) 1714 में
(c) 1814 में (d) 1989 में

(9) जॉन मार्शल की बुक मैनुअल कंजर्वेशन का प्रकाशन कब हुआ?

(a) 1925 में (b) 1714 में
(c) 1923 में (d) 1989 में

(10) गांधार कला किससे संबंधित है?

(a) बौद्ध धर्म से (b) जैन धर्म से
(c) शैव धर्म से (d) वैष्णव धर्म से

उत्तर– (1) (a) (2) (c) (3) (c) (4) (c) (5) (a) (6) (d) (7) (b) (8) (d) (9) (c) (10) (a).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

(1) जॉन मार्शल ने सांची पर लिखे अपने महत्वपूर्ण ग्रंथों को .... समर्पित किया।
(2) महात्मा बुद्ध की शिक्षाएँ .... पिटक में रखी गई हैं।
(3) महात्मा बुद्ध का जन्म .... में हुआ था।
(4) अजंता की गुफाएं .... में स्थित है।
(5) ऐसी महिलाएं जिन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया है .... कहलाती है।
(6) समकालीन बौद्ध ग्रंथों में हमें संप्रदायों .... का उल्लेख मिलता है।
(7) जैन मान्यता के अनुसार जन्म और पुनर्जन्म का चक्र .... के द्वारा निर्धारित होता है।
(8) जैन धर्म में .... तीर्थंकर हुए हैं।
(9) महात्मा बुद्ध ने बौद्ध संघ में महिलाओं के प्रवेश की अनुमति .... के समझाने पर दी थी।

उत्तर– (1) सुल्तानजहां बेगम को (2) विनय (3) लुम्बिनी (4) महाराष्ट्र (5) थेरी (6) 64 (7) कर्म (8) 24 (9) आनन्द।

प्रश्न 3. सत्य / असत्य लिखिए–

(1) भारतीय म्यूजियम कोलकाता की स्थापना सन् 1814 ईस्वी में हुई थी।
(2) प्रारंभिक वैदिक परंपराएं लगभग 1500 से 1000 ई.पू. की है।
(3) स्तूप का संस्कृत में अर्थ टीला होता है।
(4) जैन धर्म के 2 संप्रदाय में बांटा गया है।
(5) बुद्ध के उपदेशों का संकलन विनय पिटक में है।
(6) जैन धर्म के 24वीं तीर्थंकर पार्श्वनाथ हैं।
(7) ब्राह्मी लिपि बाईं ओर से दाएं ओर लिखी जाती थी।
(8) जैन आगम प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं।
(9) नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना कुमारगुप्त प्रथम ने की थी।

उत्तर– (1) सत्य (2) सत्य (3) असत्य (4) सत्य (5) सत्य (6) असत्य (7) सत्य (8) सत्य (9) सत्य।

प्रश्न 4. सही जोड़ी बनाइए–

'अ'	'ब'
(1) गौतम बौद्ध	(a) जातक
(2) जैन धर्म	(b) 1818 ई.
(3) स्तूप	(c) सिद्धार्थ
(4) बुद्ध के प्रिय शिष्य	(d) आनंद
(5) सांची की खोज	(e) टीला
(6) बुद्ध के पूर्वजन्म की कथाएँ।	(f) ऋषभदेव

उत्तर– (1)-(c), (2)-(f), (3)-(e), (4)-(d), (5)-(b), (6)-(a)

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिये–

(1) राजसूय और अश्वमेध जैसे जटिल यज्ञ कौन करते थे?
(2) सांची का स्तूप कहाँ स्थित है?
(3) फ्रांसीसियों ने सांची के तोरण द्वार को फ्रांस के संग्रहालय में ले जाने के लिए किससे इजाजत मांगी।
(4) जैन धर्म के संस्थापक कौन थे?
(5) शेषनाग पर आराम करते हुए विष्णु की सबसे ऊंची/बड़ी प्रतिमा कहाँ स्थित है?
(6) सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार किसने करवाया था।
(7) उपनिषदों की कुल संख्या कितनी है?
(8) महात्मा बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश कहाँ दिया।

उत्तर– (1) युधिष्ठिर (2) म.प्र. की राजधानी से 20 मील दूर उत्तर पूर्व में स्थित साँची कामखेड़ा नामक गाँव में स्थित है (3) शाहजहाँ बेगम (4) ऋषभ देव (5) इंडोनेशिया में (6) चंद्रगुप्त (7) 108 (8) सारनाथ।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. स्तूपों की खोज कैसे हुई? समझाइये।

उत्तर– व्यास के मुताबिक सदियों तक मलबे में दबे इन स्तूपों को 1818 में भोपाल रियासत के ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट जनरल टेलर ने सबसे पहले देखा। इसके बाद सर्वेयर जनरल कनिंघम ने 1853 में स्तूपों और आसपास के अवशेषों का सर्वे किया।

प्रश्न 2. मंदिरों का निर्माण किस प्रकार हुआ समझाइए।

उत्तर– मंदिर के निर्माण के लिए भूमि हमेशा वर्गाकार या आयताकार होनी चाहिए, साथ ही भूमि की दिशाएं समांतर हो, मंदिर के चारों ओर सड़क होना अत्यंत शुभ होता है। इसी तरह मंदिर के उत्तरपूर्व एवं ईशान कोण में ढलान होना अत्यंत शुभ होता है।

प्रश्न 3. जैन धर्म की प्रमुख विशेयताएँ लिखिए।

उत्तर– जैन धर्म की प्रमुख विशेयताएँ निम्न हैं–
(1) निवृत्तिवाद
(2) व्यक्ति की स्वतंत्रता
(3) आत्मा में विश्वास
(4) मोक्ष प्राप्ति के साधन–कर्म प्रधान जीवन
(5) मोक्ष के लिए त्रिरत्न विधान
(6) अनिश्वरवादी।

प्रश्न 4. त्रिपिटक की तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– त्रिपिटक की विशेषताएँ–
(1) त्रिपिटक बौद्ध धर्म के सभी अनुशासनों एवं नियमों को दर्शाता है।
(2) जिस प्रकार बाइबल ईसाई के लिए महत्वपूर्ण है, उसी प्रकार त्रिपिटक बौद्ध धर्म के लिए महत्वपूर्ण है।
(3) त्रिपिटक बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का एक संग्रह है जो बौद्ध दर्शन कराता है। यह बौद्ध धर्म से जुड़ी हुई सबसे प्राचीन संग्रह है, जिसमें कई सारे "सूत और रचना" देखने को मिलती है।

प्रश्न 5. हीनयान और महायान में अंतर लिखिए।

उत्तर– हीनयान और महायान में अंतर निम्न है–
(1) हीनयानी महात्मा बुद्ध को अवतार नहीं मानते हैं, वे उन्हें केवल एक महापुरुष मानते हैं, जबकि महायानी बुद्ध को ईश्वर के समान मानकर उनकी अवतार के रूप में पूजा करते हैं।
(2) हीनयान शील और समाधि प्रधान हैं, जबकि महायान करुणा और प्रज्ञा प्रधान हैं।
(3) हीनयान सम्प्रदाय के लोग अपने को मूल बौद्ध धर्म का संरक्षक मानते हैं और उसमें किसी प्रकार के परिवर्तन को स्वीकार नहीं करते। जबकि महायान सम्प्रदाय के लोग बौद्ध धर्म के सुधरे हुए स्वरूप को मानते हैं।

प्रश्न 6. अमरावती का स्तूप क्यों नष्ट हो गया? समझाइए।

उत्तर– अमरावती– 1850 के दशक से ही अमरावती के उत्कीर्ण पत्थर अलग-अलग स्थानों पर ले जाए जाने लगे। कुछ उत्कीर्ण पत्थर कलकत्ता स्थित एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल में पहुँचा दिए गए। अमरावती अनेक मूर्तियाँ अंग्रेज अधिकारियों के बगीचों की शोभा बन गई, क्योंकि हर कोई नया अंग्रेज अधिकारी यह कहकर मूर्तियाँ उठा ले जाता था कि उसके पूर्व के अधिकारियों ने भी ऐसा ही किया था। इस अमरावती स्तूप की महत्वपूर्ण धरोहर नष्ट हो गई। वर्तमान में अमरावती का स्तूप केवल एक छोटा-सा टीला है। हम भारतीय इस महत्वपूर्ण विरासत से वंचित हो गए।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 7. उपासना के प्रतीक से आप क्या समझते हैं? समझाइये।

उत्तर– बौद्ध मूर्तिकला को समझने के लिए कला इतिहासकारों को बुद्ध के चरित लेखन के बारे में समझ बनानी पड़ी। बौद्ध चरित लेखन के अनुसार एक वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति हुई। कई प्रारंभिक मूर्तियों ने बुद्ध को मानव रूप में न दिखाकर उनकी उपस्थिति प्रतीकों के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया। उदा. रिक्त स्थान बुद्ध के ध्यान की दशा तथा स्तूप का भी प्रतीक के रूप में प्रायः इस्तेमाल किया गया। यह बुद्ध द्वारा सारनाथ में दिए गए पहले उपदेश का प्रतीक था। जैसा कि स्पष्ट है ऐसी मूर्तिकला को अक्षरशः नहीं समझा जा सकता है। उदा. पेड़ का तात्पर्य केवल एक पेड़ नहीं वरन् वह बुद्ध के जीवन की एक घटना का प्रतीक था। ऐसे प्रतीकों को समझने के लिए यह जरूरी है कि इतिहासकार कलाकृतियों के निर्माताओं की परम्पराओं को जाने।

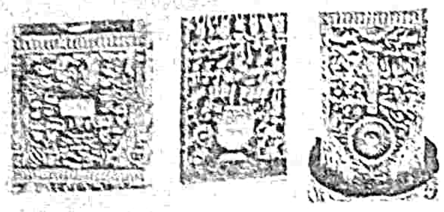

प्रश्न 8. बौद्ध संघों में भिक्खु (भिक्षु) और भिक्खुनी (भिक्षुणी) के लिए क्या नियम थे? समझाइए।

उत्तर– भिक्षुओं के नियम विनयपिटक में मिलते हैं–

जब कोई भिक्खु एक नया कम्बल या गलीचा बनाएगा तो उसे इसका प्रयोग कम से कम छः वर्षों तक करना पड़ेगा। यदि छः वर्ष से कम अवधि में वह बिना भिक्खुओं की अनुमति के एक नया कम्बल या गलीचा बनवाता है तो चाहे उसने अपने पुराने कम्बल–गलीचे को छोड़ दिया या नहीं – नया कम्बल या गलीचा उससे ले लिया जाएगा और इसके लिए उसे अपराध स्वीकार करना होगा।

यदि कोई भिक्खु किसी गृहस्थ के घर जाता है और उसे टिकिया या पके अनाज का भोजन दिया जाता है तो यदि उसे इच्छा हो तो वह दो से तीन कटोरा भर ही स्वीकार कर सकता है। यदि वह इससे ज्यादा स्वीकार करता है तो उसे अपना 'अपराध' स्वीकार करना होगा। दो या तीन कटोरे पकवान स्वीकार करने के बाद उसे इन्हें अन्य भिक्खुओं के साथ बाँटना होगा यही सम्यक् आचरण है।

यदि कोई भिक्खु जो संघ के किसी विहार में ठहरा हुआ है, प्रस्थान के पहले अपने द्वारा बिछाए गए या बिछवाए गए बिस्तरे को न ही समेटता है, न ही समेटवाता है या यदि वह बिना विदाई लिए चला जाता है तो उसे पराध स्वीकार करना होगा।

क्या आप बता सकते हैं कि ये नियम क्यों बने ?

प्रश्न 9. बुद्ध के जीवन में लुम्बिनी व कुशीनगर स्थान का क्या महत्व है?

उत्तर– बुद्ध के जीवन में लुम्बिनी का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि कपिल वस्तु के राजा शुद्धोधन के यहाँ लुम्बिनी नामक स्थान पर उनका जन्म हुआ था और कुशीनगर बुद्ध के जीवन में इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि कुशीनगर में ही उन्होंने अपना अंतिम उपदेश देने के बाद महापरिनिर्वाण को प्राप्त किया था।

प्रश्न 10. 'सांची के स्तूप का गौरव आज भी विद्यमान है, जबकि अमरावती नष्ट हो गया है, उक्त कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– उन्नीसवीं सदी के यूरोपियों में साँची के स्तूप को लेकर काफी दिलचस्पी थी। फ्रांसीसियों ने सबसे अच्छी हालत में बचे साँची के पूर्वी तोरणद्वार को फ्रांस के संग्रहालय में प्रदर्शित करने के लिए शाहजहाँ बेगम से फ्रांस ले जाने की इजाजत माँगी। कुछ समय के लिए अंग्रेजों ने भी ऐसी ही कोशिश की, किन्तु शाहजहाँ बेगम ने इसकी इजाजत नहीं दी और वह अपनी जगह पर रहा। शाहजहाँ बेगम ने इसके रख–रखाव के लिए धन दिया। इसलिए यह बचा रहा। इस पर किसी रेल ठेकेदार या निर्माता की नजर नहीं पड़ी। इसलिए यह बच गया। यह उन लोगों से भी बचा रहा, जो ऐसी चीजों को यूरोप ले जाना चाहते थे।

प्रश्न 11. बौद्ध धर्म संसार में तेजी से क्यों और कैसे फैला? विश्लेषण कीजिए।

उत्तर– बुद्ध के जीवनकाल में और उनकी मृत्यु के बाद भी बौद्ध धर्म तेजी से फैला। इसका कारण यह था कि लोग समकालीन धार्मिक प्रयासों से असंतुष्ट थे और उस युग में तेजी से हो रहे सामाजिक बदलावों ने उन्हें उलझनों में बाँध रखा था। बौद्ध शिक्षाओं में जन्म के आधार पर श्रेष्ठता की बजाय जिस तरह अच्छे आचरण और मूल्यों को महत्व दिया गया, उससे महिलाएँ और पुरुष इस धर्म की तरफ आकर्षित हुए। खुद से छोटे और कमजोर लोगों की तरफ मित्रता और करुणा के भाव को महत्व देने के आदर्श काफी लोगों को भाए।

बौद्ध धर्म विश्व के प्रमुख धर्मों में से एक है। विश्व में बौद्ध धर्म के अनुयायियों की संख्या 48.8 करोड़ से लेकर 53.5 करोड़ बताई जाती है। बौद्ध धर्म विश्व का पहला धर्म है जो अपने जन्म स्थान से निकलकर विश्व में दूर–दूर तक फैला। विश्व के सभी महाद्वीपों में बौद्ध धर्म के अनुयायी रहते हैं।

ईस्वी पूर्व 6 वीं शताब्दी में उत्तर भारत में बौद्ध धर्म का जन्म हुआ, फिर यह धर्म बौद्ध भिक्खु, बौद्ध प्रचारकों और राजाओं और बौद्ध सम्राट के माध्यम से विश्व या संसार में दूर तक फैल गया। सम्राट अशोक के काल में बौद्ध धर्म अखंड भारत का राजधर्म था।

प्रश्न 12. महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित चार प्रमुख स्थलों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर– प्रमुख बौद्ध स्थल–

लुम्बिनी– लुम्बिनी में भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था, इस स्थान की आधुनिक स्थिति रुम्मिनदेयी है जो नेपाल की तराई में स्थित है, अशोक का स्तम्भ यहाँ विद्यमान है, जिस पर अंकित अभिलेख से पता लगता है कि सम्राट अशोक ने अपने राज्याभिषेक के बाद बीसवें वर्ष में इस स्थल की यात्रा की थी, अशोक के इस अभिलेख पर ये शब्द अंकित हैं, यहाँ भगवान बुद्ध पैदा हुए थे, इससे असंदिग्ध रूप से भगवान बुद्ध के जन्म की पहचान हो जाती है। अशोक स्तम्भ के अलावा यहाँ एक प्राचीन चैत्य भी है जिसमें एक मूर्ति पर भगवान बुद्ध के जन्म का दृश्य अंकित है।

बोधगया– बोधगया में भगवान बुद्ध ने सम्यक सम्बोधि प्राप्त की थी।

कुशीनगर– यहाँ के शाल–वन में अस्सी वर्ष की अवस्था में बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था, इस स्थान की पहचान आजकल के उत्तरप्रदेश के गोरखपुर जिले में स्थित कसिया नामक स्थान से की गई है।

साँची– साँची (मुंबई से 880 किलोमीटर) का सम्बन्ध गौतम बुद्ध के जीवन से नहीं है और न उसका अधिक उल्लेख प्राचीन बौद्ध साहित्य में हुआ है, चीनी यात्रियों ने भी इसके सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा है, फिर भी यह निश्चित है कि प्रारम्भिक बौद्ध कला की सर्वोत्तम निधियाँ हमें साँची में ही मिलती हैं। साँची के स्मारकों का आरम्भ अशोक के युग से हुआ। साँची के बड़े स्तूप का व्यास 30.5 मीटर है। अपने मौलिक रूप में इसे अशोक के काल में ईंट से बनवाया गया था। बाद में इसके आकार को दुगुना किया गया।

प्रश्न 13. स्तूपों का निर्माण क्यों और कैसे करवाया गया? समझाइए।

उत्तर– 1. स्तूपों का निर्माण– सामान्यतः महात्मा बुद्ध तथा अन्य किसी पवित्र भिक्षु के अवशेषों, जैसे–दाँत, अस्थियों, भस्म आदि को किसी पवित्र स्थान पर गाड़ दिया जाता था और उसके ऊपर गुम्बद बना दिया जाता था, उसी को स्तूप कहते हैं। स्तूप बनाने की परम्परा बुद्ध से पहले की रही होगी, किन्तु वह बौद्ध धर्म से जुड़ गई। चूँकि उनमें ऐसे अवशेष रहते थे, जिन्हें पवित्र समझा जाता था। इसलिए समूचे स्तूप को ही बुद्ध और बौद्ध धर्म के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठा मिली। अशोक ने बुद्ध के अवशेषों के हिस्से हर महत्वपूर्ण शहर में बाँटकर उनके ऊपर स्तूप बनाने का आदेश दिया। ई.पू. दूसरी सदी तक भरहुत, साँची और सारनाथ जैसे जगहों पर स्तूप बनाए गये।

2. स्तूप कैसे– स्तूपों का जन्म गोल मिट्टी के टीले से हुआ जिसे बाद में अण्ड कहा गया। धीरे–धीरे इसकी संरचना ज्यादा जटिल हो गई जिसमें कई चौकोर और गोल आकारों का संतुलन बनाया गया। अण्ड के ऊपर एक हर्मिका होती थी। यह छज्जे जैसा ढाँचा देवताओं के घर का प्रतीक था। हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे यष्टि कहते थे, जिस पर प्रायः एक छतरी लगी होती थी। टीले के चारों ओर एक वेदिका होती थी जो पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती थी।

साँची और भरहुत के प्रारम्भिक स्तूप बिना अलंकरण के हैं। उनमें पत्थर की वेदिकाएँ और तोरणद्वार हैं। ये पत्थर की वेदिकाएँ किसी बाँस के या काठ के घेरे में समान थीं और चारों दिशाओं में खड़े तोरणद्वार पर नक्काशी की गई थी। उपासक पूर्वी तोरणद्वार से प्रवेश करते टीले को दाई तरफ रखते हुए दक्षिणावर्त परिक्रमा करते थे, मानो वे आकाश में सूर्य के पथ का अनुकरण कर रहे हों। बाद में स्तूप के टीले पर भी अलंकरण और नक्काशी की जाने लगी। अमरावती और पेशावर (पाकिस्तान) में शाहजी की ढेरी में स्तूपों से लाख और मूर्तियाँ उत्कीर्ण करने की कला के काफी उदाहरण उपलब्ध हैं।

प्रश्न 14. सांची के बौद्ध स्तूपों के संरक्षण में भोपाल की बेगमों की भूमिका की चर्चा कीजिए।

उत्तर– भोपाल के शासकों, शाहजहाँ बेगम और उत्तराधिकारी सुल्तानजहाँ बेगम ने इस प्राचीन स्थल के रख–रखा के लिए धन का अनुदान दिया। आश्चर्य नहीं कि जॉन मार्शल ने साँची पर लिखे अपने ग्रन्थ को सुल्तानजहाँ को समर्पित किया। सुल्तानजहाँ बेगम ने वहाँ एक संग्रहालय और अतिथिशाला बनाने के लिए अनुदान दिया, वहाँ रहते हुए ही जॉन मार्शल ने अपना ग्रन्थ लिखा। इस पुस्तक के विभिन्न खण्डों के प्रकाशन में भी सुल्तानजहाँ बेगम ने अनुदान दिया। इसलिए यह स्तूप बना रहा है तो इसके पीछे कुछ विवेकपूर्ण निर्णयों की भूमिका है, यह भाग्य की बात है यह रेल ठेकेदारों और निर्माताओं की नजर से बचा रहा जो ऐसी चीजों को यूरोपीय संग्रहालयों में ले जाना चाहते थे। अब इसकी मरम्मत और संरक्षण का कार्य भारतीय पुरातत्व विभाग कर रहा है।

@MP_BOARD_25(Telegram)

प्रश्न 15. सांची की मूर्ति कला को समझने में बौद्ध साहित्य के ज्ञान से कहाँ तक सहायता मिलती है?

उत्तर– साँची में उत्कीर्णित स्त्रियों की मूर्तियों को देखकर यह अनुमान लगाना कठिन है कि इनका चित्रण किस सन्दर्भ में किया गया है, क्योंकि ये मूर्तियाँ बौद्ध धर्म से जुड़ी हुई नहीं थी, बौद्ध साहित्य साँची की मूर्तिकला को समझने में हमारी महत्वपूर्ण सहायता करता है। साँची के तोरणद्वार पर एक पेड़ पकड़कर झूलती हुई स्त्रियों की मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियों में त्याग और तपस्या से कोई रिश्ता नजर नहीं आता था, किन्तु बौद्ध साहित्य के अध्ययन से यह समझ में आया कि यह संस्कृति भाषा में वर्णित शालभंजिका की मूर्ति है। लोक परम्परा में यह माना जाता था कि इस स्त्री के छुए जाने से वृक्षों में फूल खिल उठते थे और फल लगने लगते हैं। ऐसा लगता है कि यह एक शुभ प्रतीक माना जाता था और इस कारण स्तूप के अलंकरण में प्रयुक्त हुआ। शालभंजिका की मूर्ति से पता लगता है कि जो लोग बौद्ध धर्म में आए उन्होंने दूसरे विश्वासों, प्रथाओं और धारणाओं से बौद्ध धर्म को समृद्ध किया। साँची की मूर्तियों में पाए गए कई प्रतीक या चिन्ह निश्चय ही इन्हीं परम्पराओं से उभरे थे। उदाहरण के लिए, जानवरों के कुछ बहुत सुन्दर उत्कीर्ण चित्र यहाँ मिले हैं। इन जानवरों में हाथी, घोड़, बन्दर और गाय-बैल शामिल हैं। ऐसा लगता है कि यहाँ पर लोगों को आकर्षित करने के लिए जानवरों को उत्कीर्ण किया गया था। साथ ही जानवरों को मनुष्य के गुणों के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया था। उदाहरण के लिए, हाथी शक्ति और ज्ञान के प्रतीक माने जाते थे।

इन प्रतीकों में कमल दल और हाथियों के बीच एक महिला की मूर्ति प्रमुख हैं। ये हाथी उस पर जल छिड़क रहे हैं जैसे वे उसका अभिषेक कर रहे हों। जहाँ कुछ इतिहासकार उसको बुद्ध की माँ माया से जोड़ते हैं तो दूसरे इतिहासकार उसे एक लोकप्रिय देवी लक्ष्मी मानते हैं। गजलक्ष्मी सौभाग्य लाने वाली होती है, जिसे प्राय: हाथियों से जोड़ा जाता है। यह भी सम्भव है कि उत्कीर्णित मूर्तियों को देखने वाले उपासक उस माया तथा गजलक्ष्मी दोनों से जोड़ कर देखते थे।

वेशान्तर जातक में एक ऐसे दानी राजकुमार का उल्लेख है जिसने अपना सब कुछ एक ब्राह्मण को दान में दे दिया और स्वयं अपने बच्चों के साथ जंगल में रहने के लिए चला गया। इतिहासकारों के अनुसार, मूर्तिकला के एक अंश में वेशान्तर की कथा का एक दृश्य दिखाया गया है। इससे स्पष्ट है कि इतिहासकार मूर्तियों का अध्ययन बौद्ध साहित्य की सहायता से करते हैं।

साँची में बुद्ध की तथा अन्य जो मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गई हैं, उनका विस्तार से वर्णन कहीं न कहीं बौद्ध साहित्य में मिल जाता है। कुछ ऐसी भी मूर्तियाँ हैं जिनका सम्बन्ध बौद्ध धर्म से नहीं है, उनका विवरण जातक कथाओं में मिल जाता है। लोक परम्पराओं से भी मूर्तियों की बहुत कुछ जानकारी मिल जाती है। कई स्तम्भों पर सर्पों के चित्र अंकित हैं, उनको लोक परम्पराओं से लिया गया है, जिनका विवरण ग्रन्थों में नहीं है। दिलचस्प बात यह है कि कला पर लिखने वाले आधुनिक इतिहासकारों में एक शुरुआती इतिहासकार जेम्स फर्गुसन ने साँची को वृक्ष और सर्पपूजा का केन्द्र माना था। वे बौद्ध साहित्य से अनभिज्ञ थे। तब तक ज्यादातर बौद्ध ग्रन्थों का अनुवाद नहीं हुआ था। इसलिए उन्होंने सिर्फ उत्कीर्णित मूर्तियों का अध्ययन करके अपने निष्कर्ष निकाले थे।

प्रश्न 16. लिंगायत कौन थे ? सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में उनके योगदान की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– लिंगायत– लिंगायत मत भारतवर्ष के प्राचीनतम सनातन हिन्दू धर्म का एक हिस्सा है। यह मत भगवान शिव की स्तुति आराधना पर आधारित है। भगवान शिव जो सत्य सुन्दर और सनातन हैं, जिनसे सृष्टि का उद्धार हुआ, जो आदि अनंत हैं। लिंगायत सम्प्रदाय भगवान शिव जो कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश, चराचर जगत के उत्पत्ति के कारक हैं उनकी स्तुति आराधना करता है। आप अन्य शब्दों में इन्हें शैव सम्प्रदाय को मानने वाले अनुयायी कह सकते हैं। इस मत के उपासक लिंगायत कहलाते हैं।

लिंगायत का सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में योगदान– लिंगायत का लक्ष्य ऐसा आध्यात्मिक समाज बनाना था, जिसमें जाति, धर्म या स्त्री पुरुष का भेदभाव न हो। वह कर्मकांड संबंधी आडंबर के विरोधी थे और मानसिक पवित्रता एवं भक्ति की सिखाई पर बल देते थे। वह मात्र एक ईश्वर की उपासना के समर्थक थे और उसने पूजा तथा ध्यान की पद्धति में सरलता लाने का प्रयत्न किया। जाति भेद की समाप्ति तथा स्त्रियों के उत्थान के कारण समाज में अद्भुत क्रांति उत्पन्न हो गई।

प्रश्न 17. बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य क्या है? सविस्तार व्याख्या कीजिए।

उत्तर– 1. चार आर्य सत्य– महात्मा बुद्ध ने सारनाथ में अपने जीवन का प्रथम उपदेश दिया था। महात्मा बुद्ध ने बताया कि मनुष्य के जीवन में आदि से अन्त तक दुःख ही दुःख है। अत: इस दुःख से मुक्त होने के लिए उन्होंने चार आर्य सत्यों व अष्टांगिक मार्ग का पालन करने के लिए कहा। महात्मा बुद्ध के बताये चार आर्य सत्य इस प्रकार हैं–

(अ) दु:ख ही दु:ख– महात्मा बुद्ध के अनुसार जीवन में दु:ख ही दु:ख है।

(ब) दु:ख के कारण– महात्मा बुद्ध अपने दूसरे आर्य सत्य में दु:ख का कारण तृष्णा बताते हैं। तृष्णा का कारण अज्ञान है।

(स) दु:ख निरोध– महात्मा बुद्ध के अनुसार दु:खों से मुक्त होने के लिए उसके कारण का निवारण आवश्यक है। अत: तृष्णा पर विजय प्राप्त करने से दु:खों से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

(द) दु:ख निरोध मार्ग– महात्मा बुद्ध चौथे आर्य सत्य के द्वारा दु:खों से मुक्त होने अथवा निवारण करने का मार्ग बताते हैं। निर्वाण प्राप्त करने के लिए जो मार्ग महात्मा बुद्ध ने सुझाया, उसके आठ अंग हैं, अत: इसे अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है।

प्रश्न 18. अशोक के धर्म की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– अशोक के धर्म की विशेषताएँ–

1. **सार्वभौमिकता–** अशोक ने धर्म के सभी धर्मों की उच्चतम तथा सर्वश्रेष्ठ बातों का समावेश किया है।

2. **अहिंसा–** कलिंग युद्ध के उपरांत अशोक ने अहिंसा पर विशेष रूप से बल दिया। प्रथम शिलालेख के अनुसार उसने उन यज्ञों को बंद करवा दिया जिसमें पशु बलि होती थी। जिनके रसोई घर में पशुओं का मांस पकता था, उसे अशोक ने एक आदेश द्वारा उसे भी बंद करवा दिया।

3. **नैतिक आदर्शों की प्रधानता–** अशोक ने नैतिक आदर्शों पर विशेष रूप से बल दिया। उसका कथन था कि प्रत्येक प्राणी को ब्राह्मणों, श्रमिकों, साधु आदि के प्रति उदारता का व्यवहार करना चाहिए तथा जीवन में सदा सत्य का पालन करना चाहिए।

4. **शुद्ध जीवन अपनाने पर बल–** अशोक का कथन था कि मनुष्य को यथासम्भव शुद्ध और पवित्र जीवन व्यतीत करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि वह हर एक पापों से बचें। जैसे– ईर्ष्या, क्रोध, निष्ठुरता, उग्रता तथा अभिमान, अत: मनुष्य को यथासंभव इनसे बचना चाहिए।

प्रश्न 19. स्तूप की संरचना का विस्तार से समझाइए।

उत्तर– स्तूपों की संरचना– स्तूप का जन्म अर्द्ध गोलाकार ढेर-(मिट्टी) के टीले से हुआ था, जिसे अंड कहा जाता था। अंड के ऊपर एक और संरचना बनाई जाती थी, जिसे हर्मिका कहा जाता था, यह संरचना एक छज्जे की भाँति होती थी। इसका निर्माण देवताओं को आसन के रूप में किया जाता था। हर्मिका के ऊपर एक सीधा स्तम्भ होता था जिसे यष्टि कहा जाता था, इसके ऊपर एक छत्री लगी होती थी। टीले (स्तूप) के चारों ओर एक वेदिका बनाई जाती थी, जो इस पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती थी साँची और भरहुत के प्रारम्भिक स्तूपों को देखकर स्पष्ट होता है कि इन प्रारम्भिक स्तूपों का निर्माण बिना अलंकरण के किया गया था। इन स्तूपों में केवल पत्थर की वेदिकाएँ और तोरणद्वार बनाए गए थे, ये पत्थर की वेदिकाएँ भी लकड़ी अथवा बाँस के घेरे के समान थी। यद्यपि इन स्तूपों के चारों दिशाओं में बनाए गए तोरणद्वारों पर सुन्दर नक्काशी की गई थी। इन स्तूपों में उपासक पूर्वी तोरणद्वार से प्रवेश करके आकाश में सूर्य पथ का अनुकरण करते हुए परिक्रमा करते थे, लेकिन कालान्तर में बने स्तूपों को देखकर स्पष्ट होता है कि बाद में बने स्तूपों को ताख और मूर्तियों से अलंकृत किया जाने लगा था। अमरावती और पेशावर (वर्तमान पाकिस्तान में शाहजी की ढेरी) के स्तूप इसके अनुपम उदाहरण हैं।

प्रश्न 20. महात्मा बुद्ध के किन्हीं तीन उपदेशों को लिखिए।

उत्तर– महात्मा बुद्ध के तीन उपदेश–

1. **सम्यक व्यायाम–** अकुशल धर्मों तथा त्याग तथा कुशल धर्मों का अनुसरण ही सम्यक व्यायाम है।

2. **सम्यक संकल्प–** आसक्ति, द्वेष तथा हिंसा से मुक्त विचार रखना ही सम्यक संकल्प है।

3. **चर्मधारण न करें–** महाधर्मी को सिंह, बाघ और चीते के चर्म को नहीं धारण करना चाहिए। जो धारण करे उसे दुक्कार (दुष्कृत) का दोष होता है। ❐

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

भाग–2

अध्याय–5 यात्रियों के नज़रिए

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) विजयनगर का सबसे महत्वपूर्ण विवरण किस यात्री ने किया? –

(a) अब्दुर रज्जाक (b) मार्कोपोलो
(c) निकितिन (d) निकालोकोंटी

(2) यूक्लिड की रचनाओं का संस्कृत भाषा में अनुवाद निम्न में से किस विद्वान ने किया। –

(a) अबुल फज़ल (b) अल-बिरूनी
(c) इब्नबतूता (d) फैजी

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(3) किस शासक ने इब्नबतूता को दिल्ली का काजी नियुक्त किया-

(a) मुहम्मद तुगलक (b) फिरोज तुगलक
(c) गियासुद्दीन तुगलक (d) अलाउद्दीन खिलजी

(4) किस यात्री ने दक्षिण भारतीय व्यापार और समाज का विस्तृत वर्णन किया है?

(a) दुआर्ते बरबोसा (b) अब्दुर रज्जाक
(c) बर्नियर (d) निकोलोकोंटी

(5) इतालवी यात्री जो भारत में ही बस गया

(a) मनूकी (b) मार्कोपोलो
(c) निकोलो कोंटी (d) लुडोविको डी बर्थेम

उत्तर- (1) (a) (2) (b) (3) (a) (4) (c) (5) (a)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

(1) रिहला .... की रचना है। (इब्नबतूता/अल-बिरूनी)
(2) तैवर्नियर ने .... बार भारत की यात्रा की। (छः/चार)
(3) ट्रैवल इन द मुगल एंपायर .... की रचना है। (बर्नियर/तैवर्नियर)
(4) संस्कृत को विशाल पहुँच वाली भाषा के रूप में ने वर्णित किया है। (अलबिरूनी/इब्नबतूता)
(5) बर्नियर की तरह ही ....ने भी भारत की गरीबी का वर्णन किया है। (पेलसर्ट/निकोलोकोंटी)

उत्तर- (1) इब्नबतूता (2) छः (3) बर्नियर (4) अलबिरूनी (5) पेलसर्ट।

प्रश्न 3. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिये-

(1) अल-बिरूनी किन भाषाओं का जानकार था?
(2) माप तंत्र विज्ञान क्या है?
(3) हिन्दू शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया?
(4) फ्रांस्वा बर्नियर कौन था?
(5) किस दार्शनिक ने बर्नियर के वृत्तांत का उपयोग अपने सिद्धांत में किया।

उत्तर- (1) फारसी, संस्कृत (2) मापन प्रणाली (3) सिंधु नदी के पूर्व के लोगों के लिए (4) सत्रहवीं शताब्दी में फ्रांस से आया था (5) पियरे बर्नियर।

प्रश्न 4. सत्य / असत्य लिखिए-

(1) इब्नबतूता यात्राओं के अनुभव को ज्ञान का महत्वपूर्ण स्रोत मानता था।
(2) जेसूइट रॉबर्टो नो बिली ने भारतीय ग्रन्थों का अनुवाद किया।
(3) तैवर्नियर ने मुगल सेना के साथ कूच के अपने अनुभव को साझा किया है।
(4) तारावबाद नामक बाजार का वर्णन अल-बिरूनी ने किया है।
(5) सती प्रथा का वर्णन निकितिन ने किया है।

उत्तर- (1) सत्य (2) असत्य (3) सत्य (4) असत्य (5) असत्य।

प्रश्न 5. सही जोड़ी बनाइए-

'अ'	'ब'
(1) अल-बिरूनी	(a) उज्बेकिस्तान
(2) इब्नबतूता	(b) मोरक्को
(3) ज्यों बेपटिस्ट	(c) फ्रांसीसी
(4) किताब-उल-हिन्द	(d) अल-बिरूनी
(5) बरबोसा	(e) पुर्तगाली

उत्तर- (1) (a), (2) (b), (3) (c), (4) (d), (5) (e).

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. अल-बिरूनी गजनी कैसे पहुंचा?

उत्तर- सन् 1017 ई. में ख्वारिजम पर आक्रमण के पश्चात् सुल्तान मोहम्मद कई विद्वानों तथा कवियों को अपने साथ अपनी राजधानी गजनी ले गया। अल-बिरूनी उनमें से एक था। वह बंधक के रूप में गजनी आया था पर धीरे-धीरे उसे शहर पसंद आने लगा और सत्तर वर्ष की आयु में अपनी मृत्यु तक उसने अपना बाकी जीवन यहीं बिताया।

प्रश्न 2. अल-बिरूनी के अनुवाद कार्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर- अल-बिरूनी ने अपने कार्य का वर्णन इस प्रकार किया- उन लोगों के लिए सहायक जो उनसे (हिंदुओं) धार्मिक विषयों पर चर्चा करना चाहते हैं और ऐसे लोगों के लिए एक सूचना का संग्रह, जो उनके साथ संबद्ध होना चाहते हैं।

प्रश्न 3. अल-बिरूनी अपने लेखन में जिस विशिष्ट शैली का प्रयोग करता है, उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर- अल-बिरूनी ने किताब-उल-हिन्द उस समय हिन्दुस्तान के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहे लोगों के लिए लिया था। सन् 1500 ई. के बाद भारत में किताब उल-हिन्द को लोगों ने पढ़ना शुरू किया, क्योंकि महमूद गजनी के भारत पर ग्यारहवीं शताब्दी में आक्रमण और तेरहवीं सदी में सल्तनत की स्थापना के साथ ही भारत के लोगों का निष्कंटक सम्पर्क अब दुनिया से तेजी से होने लगा।

प्रश्न 4. अल-बिरूनी ने भारत का वृत्तांत लिखने में आने वाले किन अवरोधों के बारे में वर्णन किया है?

उत्तर- अल बिरूनी ने कई अवरोधों की चर्चा की जो उनके अनुसार समझ में बाधक थे जिसमें से- (1) भाषा, (2) धार्मिक अवस्था व प्रथा भिन्न थी, (3) अभिमान।

प्रश्न 5. भारत आने से पहले इब्नबतूता कौन सी यात्राएं कर चुका था?

उत्तर- भारत आने से पहले इब्नबतूता मक्का की तीर्थ यात्राएँ और सीरिया, इराक, फारस, यमन, ओमान तथा पूर्वी अफ्रीका के कई तटीय व्यापारिक बंदरगाहों की यात्राएँ कर चुका था।

प्रश्न 6. चीन के विषय में इब्नबतूता के यात्रा वर्णन की तुलना किसके वृत्तांत से की जाती है?

उत्तर- चीन के विषय में उसके वृतांत की तुलना मार्को पोलो जिसने तेरहवीं शताब्दी के अंत में वेनिस से चलकर चीन (और भारत की भी) की यात्रा की थी, के वृत्तांत से की जाती है।

प्रश्न 7. इब्नबतूता ने लंबी यात्राओं की किस परेशानी का वर्णन किया है?

उत्तर- इब्नबतूता की लंबी यात्राओं के दौरान लुटेरे ही एक मात्र खतरा नहीं थे, यात्री गृहातुर हो सकता था या बीमार हो सकता था आदि परेशानियों का वर्णन किया है।

प्रश्न 8. मुहम्मद हाजिन भारत से घृणा क्यों करने लगा था?

उत्तर- मोहम्मद हाजिन भारत से घृणा इसलिए करते थे क्योंकि 1740 के दशक में जब वे भारत आए तो यात्रा के दौरान उन्होंने भारत में अपने लिए एक उत्सवीय स्वागत की आशा की थी, परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ इसलिए हाजिन भारत से निराश हुए और घृणा करने लगे।

प्रश्न 9. ज्यों-बेपटिस्ट तैवर्नियर के भारत वर्णन को लिखिए।

उत्तर- 1600 ई. के बाद भारत में आने वाले डच, अंग्रेज तथा फ्रांसीसी यात्रियों की संख्या बढ़ने लगी थी, इनमें एक प्रसिद्ध नाम फ्रांसीसी जौहरी ज्यों बेपटिस्त तैवर्नियर का था। जिसने कम से कम छह बार भारत की यात्रा की, वह विशेष रूप से भारत की व्यापारिक स्थितियों से बहुत प्रभावित था और उसने भारत की तुलना ईरान और ऑटोमन साम्राज्य से की।

प्रश्न 10. इब्नबतूता किन भारतीय वानस्पतिक उपजों के बारे में नहीं जानता था?

उत्तर- इब्नबतूता नारियल तथा पान दो ऐसी वानस्पतिक उपजों के बारे में नहीं जानता था, जिनसे उसके पाठक पूरी तरह से अपरिचित थे।

प्रश्न 11. इब्नबतूता ने भारतीय शहरों को किन लोगों के लिए उपयुक्त बताया?

उत्तर- इब्नबतूता ने उपमहाद्वीप के शहरों को उन लोगों के लिए व्यापक अवसरों से भरपूर पाया, जिनके पास आवश्यक इच्छा, साधन तथा कौशल था। ये शहर घनी आबादी वाले तथा समृद्ध थे। सिवाय कभी-कभी युद्धों तथा अभिमानों से होने वाले विध्वंस के।

प्रश्न 12. फ्रांस्वा बर्नियर कौन था?

उत्तर- फ्रांस्वा बर्नियर- फ्रांस का रहने वाला फ्रांस्वा बर्नियर एक चिकित्सक, राजनीतिक, दार्शनिक तथा एक इतिहासकार था।

प्रश्न 13. अब्दुर रज्जाक द्वारा मंगलौर में स्थित मंदिर के बारे में क्या विवरण दिया गया?

उत्तर- मंगलूर जिसे मंगलौर और मैंगलोर भी कहा जाता है, भारत के कर्नाटक राज्य के दक्षिण कन्नड़ जिले में अरब सागर के तट पर स्थित एक नगर है। यह जिले का मुख्यालय है और कर्नाटक के महत्वपूर्ण शहरों में गिना जाता है।

प्रश्न 14. उलूक और दावा से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- उलूक- अश्व डाक व्यवस्था जिसे उलुक कहा जाता है, हर चार मील की दूरी पर स्थापित राजकीय घोड़ों द्वारा चालित होती है।

दावा- पैदल डाक व्यवस्था के प्रति मील तीन अवस्थान होते हैं; इसे दावा कहा जाता है और यह एक मील का एक तिहाई होता है।

प्रश्न 15. बर्नियर का शिविर नगरों से क्या तात्पर्य था ?

उत्तर- शिविर नगर- जिसका आशय उन नगरों से था जो अपने अस्तित्व और बने रहने के लिए राजकीय शिविर पर निर्भर थे। उसका विश्वास था कि ये राजकीय दरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते थे और इसके कहीं ओर चले जाने के बाद तेजी से पतनोन्मुख हो जाते थे।

प्रश्न 16. किताब-उल-हिन्द में वर्णित विषयों का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।

उत्तर- अरबी में लिखी गई अल-बिरूनी की कृति किताब उल हिन्दी की भाषा सरल और स्पष्ट है। यह एक विस्तृत ग्रंथ है जो धर्म और दर्शन, त्यौहारी, खगोल विज्ञान, कीनिया, रीति-रिवाजों तथा प्रथाओं, सामाजिक जीवन, भार-तौल तथा मापन विधियों, मूर्तिकला, कानून, मापतंत्र विज्ञान आदि विषयों के आधार पर अस्सी अध्यायों में विभाजित हैं।

प्रश्न 17. हिन्दू शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- ''हिन्दू'' शब्द लगभग छठी-पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में प्रयुक्त होने वाली प्राचीन फारसी शब्द, जिसका प्रयोग सिंधु नदी के पूर्व के क्षेत्र के लिए होता था, से निकाला था। कालांतर में तुर्की ने सिंधु से पूर्व में रहने वाले लोगों को ''हिन्दू''; उनके निवास क्षेत्र को ''हिन्दुस्तान'' तथा उनकी भाषा को ''हिन्दवी'' का नाम दिया।

@MP_BOARD_25(Telegram)

प्रश्न 18. रेहला से भारतीय इतिहास की क्या जानकारी प्राप्त होती है?

उत्तर- किताब उल रेहला ग्रन्थ, को किताब ए रेहला अथवा केवल रेहला के नाम से भी जाना जाता है। वैसे तो रेहला ग्रंथ में इब्नबतूता की यात्राओं का वर्णन किया गया है, लेकिन इसमें सल्तनत कालीन इतिहास की जानकारी को भी विस्तृत रूप से बताया गया है। इस ग्रन्थ में सल्तनत काल की डाक व्यवस्था का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है।

प्रश्न 19. इब्नबतूता की चीन यात्रा का वर्णन कीजिए।

उत्तर- 1342 ई. में मंगलों शासक के पास सुल्तान के दूत के रूप में चीन जाने का आदेश दिया गया। अपनी नयी नियुक्ति के साथ इब्नबतूता मध्य भारत के रास्ते मालाबार तट की ओर बढ़ा। मालाबार से वह मालदीव गया, वहां अठारह महीने तक काजी के पद पर रहा पर अंततः उसने श्रीलंका जाने का निश्चय किया। बाद में एक बार फिर वह मालाबार तट तथा मालदीव गया और चीन जाने के अपने कार्य को दोबारा शुरू करने से पहले वह बंगाल तथा असम गया। वह जहाज से सुमात्रा गया और सुमात्रा से एक अन्य जहाज से चीनी बंदरगाह नगर जायतुन गया। उसने व्यापक रूप से चीन में यात्रा की और वह बीजिंग तक गया, लेकिन वहाँ लम्बे समय तक नहीं ठहरा। 1347 में उसने वापस अपने घर जाने का निश्चय किया। चीन के विषय में उसके वृत्तांत की तुलना मार्कोपोलो, जिसने तेरहवीं शताब्दी के अंत में वेनिस से चलकर चीन की यात्रा की थी।

प्रश्न 20. फ्रांस्वा बर्नियर का मुगल परिवार से क्या संबंध था?

उत्तर- फ्रांस्वा बर्नियर फ्रांस का निवासी था। वह एक चिकित्सक, राजनीतिक, दार्शनिक तथा एक इतिहासकार था। वह मुगल में अवसरों की तलाश में 1656 ई. में भारत आया था। वह 1656 ई. से 1668 ई. तक भारत में बारह वर्ष तक रहा और मुगल दरबार से घनिष्ठ संबंध बनाए रखे। प्रारंभ में उसने मुगल सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह के चिकित्सक के रूप में कार्य किया बाद में एक मुगल अमीर दानिशचन्द खान के पास कार्य किया था।

प्रश्न 21. अल-बिरूनी ने संस्कृत के बारे में क्या वर्णन किया है?

उत्तर- अल बिरूनी ने संस्कृत भाषा के विषय में निम्न बातें लिखीं-

(1) वह संस्कृत को कठिन भाषा मानता है। उसके अनुसार इसे

(2) अल-बिरूनी के अनुसार अरबी भाषा की तरह इसके शब्द और विभक्तियाँ अनेक हैं।

(3) संस्कृत में एक ही वस्तु के लिए कई मूल तथा व्युत्पन्न दोनों तरह के शब्द प्रयोग होते हैं और एक ही शब्द का प्रयोग कई वस्तुओं के लिए होता है।

(4) इसको समझने के लिए विभिन्न विशेषक संकेतपदों के माध्यम से पदों एवं शब्दों को एक-दूसरे से अलग किया जाना आवश्यक है।

प्रश्न 22. इब्नबतूता ने नारियल और पान के बारे में क्या जानकारी दी?

उत्तर- **नारियल-** ये पेड़ स्वरूप से सबसे अनोखे तथा प्रकृति में सबसे आश्चर्यजनक वृक्षों में से एक है। ये सर्वथा खजूर के वृक्ष जैसे दिखते हैं। नारियल के वृक्ष का फल मानव सिर से मेल खाता है, क्योंकि इसमें भी दो आँखें तथा एक मुख है और अंदर का भाग हरा होने पर मस्तिष्क जैसा दिखता है। इसका रेशा बालों जैसा दिखाई देता है।

पान- पान एक ऐसा वृक्ष है जिसे अंगूर-लता की तरह ही उगाया जाता है। इसे प्रयोग करने की विधि यह है कि इसे खाने के पहले सुपारी ली जाती है; यह जायफल जैसी ही होती है पर इसे तब तक तोड़ा जाता है, जब तक इसके छोटे-छोटे टुकड़े नहीं हो जाते; और इन्हें मुँह में रखकर चबाया जाता है। इसके बाद पान की पत्तियों के साथ इन्हें चबाया जाता है।

प्रश्न 23. इब्नबतूता ने बाजार का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर- इब्नबतूता के वृतांत से ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें तथा चमक-दमक वाले और रंगीन बाजार थे। जो विविध प्रकार की वस्तुओं से भरे रहते थे। इब्नबतूता दिल्ली को एक बड़ा शहर, विशाल आबादी वाला तथा भारत में सबसे बड़ा बताता है।

प्रश्न 24. बर्नियर ने राजकीय कारखानों का क्या वर्णन किया है?

उत्तर- कई स्थानों पर बड़े कक्ष दिखाई देते हैं जिन्हें कारखाना अथवा शिल्पकारों की कार्यकुशलता कहते हैं। एक कक्ष में कसीदाकार एक मास्टर के निरीक्षण में व्यस्तता से कार्यरत रहते हैं। एक अन्य में आप सुनारों को देखते हैं; तीसरे में चित्रकार चौथे में प्रलाक्ष रस का रोगन लगाने वाले, पांचवें में बढ़ई, खरादी, दर्जी तथा जूते बनाने वाले, छठें में रेशम, जरी तथा महीन मलमल का काम करने वाले.... शिल्पकार अपने कारखानों में हर सुबह आते हैं। जहां वे पूरे दिन कार्यरत रहते हैं और शाम को अपने-अपने घर चले जाते हैं। इसी निश्चेष्ट नियमित ढंग से उनका समय बीतता जाता है। कोई भी जीवन की उन स्थितियों में सुधार करने का इच्छुक नहीं है जिनमें वह पैदा हुआ था।

प्रश्न 25. दास प्रथा के संबंध में मध्यकालीन यात्रियों के क्या विचार थे? चर्चा कीजिए।

उत्तर- इब्न बतूता के अनुसार, बाजारों में दासे किसी भी अन्य वस्तु की तरह खुलेआम बेचे जाते थे और नियमित रूप से भेंटस्वरूप एक-दूसरे को दिए जाते थे। जब इब्न बतूता सिंध पहुँचा तो उसने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के लिए भेंटस्वरूप घोड़े, ऊँट तथा दास' खरीदे। जब वह मुल्तान पहुँचा तो उसने गवर्नर को किशमिश बादाम के साथ एक दास और घोड़ा भेंट के रूप में दिए। इब्न बतूता बताता है कि मुहम्मद-बिन-तुगलक नसीरुद्दीन नामक धर्मोपदेशक के प्रवचन से इतना प्रसन्न हुआ कि उसे एक लाख टके (मुद्रा) तथा दो सौ दास दे दिए। इब्न बतूता के विवरण से प्रतीत होता है कि दासों में काफी विभेद था। सुल्तान की सेवा में कार्यरत कुछ दासियाँ संगीत और गायन में निपुण थीं।

सुल्तान अपने अमीरों पर नज़र रखने के लिए दासियों को भी नियुक्त करता था। दासों को सामान्यतः घरेलू श्रम के लिए ही इस्तेमाल किया जाता था, और इब्न बतूता ने इनकी सेवाओं को पालकी या डोले में पुरुषों और महिलाओं को ले जाने में विशेष रूप से अपरिहार्य पाया। दासों की कीमत, विशेष रूप से उन दासियों की, जिनकी आवश्यकता घरेलू श्रम के लिए थी, बहुत कम होती थी और अधिकांश परिवार जो उन्हें रख पाने में समर्थ थे, कम-से-कम एक या दो तो रखते ही थे।

प्रश्न 26. सती प्रथा के संबंध में बर्नियर के विवरण की समीक्षा कीजिए।

उत्तर- 'सती' शब्द का अर्थ है- 'पतिव्रता और चरित्रवती स्त्री, किंतु सामान्यतया इसका अर्थ पत्नी के अपने मृत पति के शरीर के साथ जल जाने की प्रथा से लिया जाता था। बर्नियर ने लिखा है कि कुछ महिलाएँ स्वेच्छापूर्वक खुशी-खुशी अपने पति के शव के साथ सती हो जाती थी।

किंतु अधिकांश को ऐसा करने के लिए विवश कर दिया जाता था। लाहौर में एक बालिका के सती होने की घटना का

अत्यधिक मार्मिक विवरण देते हुए उसने लिखा है, "लाहौर में मैंने एक बहुत ही सुन्दर अल्पवयस्क विधवा जिसकी आयु मेरे विचार में बारह वर्ष से अधिक नहीं थी, की बलि होते देखी। उस भयानक नर्क की ओर जाते हुए वह असहाय छोटी बच्चे जीवित से अधिक मृत प्रतीत हो रही थी; उसके मस्तिष्क की व्यथा का वर्णन नहीं किया जा सकता; वह काँपते हुए बुरी तरह से रो रही थी, लेकिन तीन-चार ब्राह्मण, एक बूढ़ी औरत, जिसने उसे अपनी आस्तीन के नीचे दबाया हुआ था, की सहायता से उस अनिच्छुक पीड़िता को घातक स्थल की ओर ले गए।

उसे लकड़ियों पर बैठाया; उसके हाथ पाँव बाँध दिए ताकि वह भाग न जाए और इस स्थिति में उस मासूम प्राणी को जिन्दाजला दिया गया। मैं अपनी भावनाओं को दबाने में असमर्थ था..."इस विवरण से स्पष्ट होता है कि सती प्रथा के अन्तर्गत सती होने वाली महिलाओं की अल्पवयस्कता, अनीच्छा, व्यथा, विवशता एवं असहायता जैसे तत्वों ने बर्नियर का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया था।

प्रश्न 27. निम्नलिखित को भारत के मानचित्र पर प्रदर्शित कीजिए-

(1) देहली (2) मालावर तट
(3) अरब सागर (4) बंगाल की खाड़ी

उत्तर-

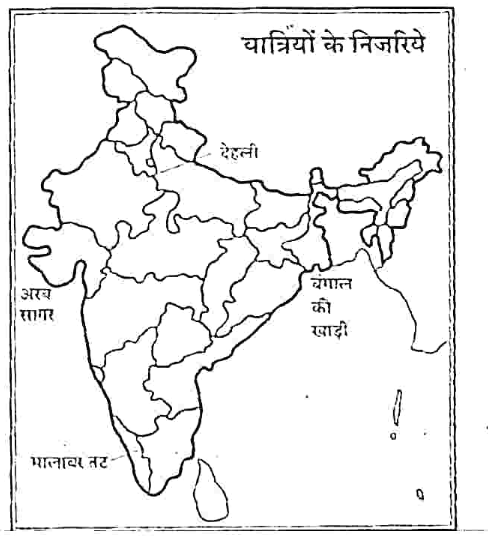

@MP_BOARD_25 (Telegram)

अध्याय-6 भक्ति सूफी परम्पराएँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) भगवान जगन्नाथ किस हिन्दू देवता के एक रूप माने जाते हैं?

(a) शिव (b) गणेश
(c) इन्द्र (d) विष्णु

(2) सिक्ख पंथ के दसवें गुरु कौन थे?

(a) गुरु गोविंद सिंह (b) गुरु तेगबहादुर
(c) रामदास (d) गुरु अंगद

(3) गुरु नानकदेव जी का जन्म कब हुआ-

(a) 1469 ई. (b) 1699 ई.
(c) 1799 ई. (d) 1539 ई.

(4) किसकी रचनाओं को गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित नहीं किया गया था?

(a) कबीरदास (b) रविदास
(c) तुलसीदास (d) गुरु नानक

(5) शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह स्थित है-

(a) अजमेर (b) दिल्ली
(c) लाहौर (d) ग्वालियर

उत्तर- (1) (d) (2) (a) (3) (a) (4) (c) (5) (a).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) कादिरी सिलसिले की स्थापना .... ने की थी। (अब्दुल कादिर जिलानी/ मुइनुद्दीन चिश्ती)

(2) बंगाल में भक्ति आंदोलन का प्रसार .... ने किया। (चैतन्य/नामदेव)

(3) खानकाह का नियंत्रण .... के हाथ में होता था। (शेख/मुरीद)

(4) लिंगायत समुदाय के धार्मिक संस्थापक .... माने जाते हैं। (बसवन्ना/अल्लामप्रभु)

(5) कबीर की बानी .... विशिष्ट परिपाटियों में संकलित है। (तीन/चार)

उत्तर- (1) अब्दुल कादिर जिलानी (2) चैतन्य (3) शेख (4) बसवन्ना (5) तीन।

प्रश्न 3. सत्य / असत्य लिखिए-

(1) [illegible]

(2) [illegible] दक्षिण भारत की [illegible] जाता है।

(3) सूफियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।

(4) कौल का प्रचलन रविदास जी ने किया।

(5) चिश्ती सिलसिले की स्थापना निजामुद्दीन औलिया ने की थी।

उत्तर- (1) असत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) असत्य (5) सत्य

प्रश्न 4. सही जोड़ी बनाइए-

'अ'	'ब'
(1) अलवार	(a) विष्णु भक्त
(2) नयनार	(b) शिव भक्त
(3) शेख सलीम चिश्ती	(c) फतेहपुर सीकरी
(4) हिन्द का तोता	(d) अमीर खुसरो
(5) बासवन्ना	(e) वीरशैव

उत्तर- (1) (a), (2) (b), (3) (c), (4) (d), (5) (e).

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिये-

(1) किस की आराधना को तांत्रिक नाम दिया गया।

(2) संत [illegible] के गुरु कौन थे?

(3) खालसा पंथ की स्थापना किसने की?

(4) दक्षिण भारतीय वैष्णव संत किस नाम से जाने जाते थे?

(5) उलटबांसी किस की रचना है?

उत्तर- (1) देवी की आराधना (2) [illegible] (3) गुरु गोविंद सिंह (4) अलवार (5) कबीर।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. वैदिक और पौराणिक परम्परा में क्या अंतर है?

उत्तर- वैदिक युग और पौराणिक काल में मुख्य अंतर यही है कि वैदिक युग में [illegible] पौराणिक युग में [illegible] [illegible] वैदिक युग में [illegible]

प्रश्न 2. नलयिरा दिव्य प्रबंधम क्या है?

उत्तर- नलयिरा दिव्यप्रबंधम तमिल के 4,000 पदों का संकलन है जिसकी रचना 12 अलवार संतों ने [illegible] [illegible]

प्रश्न 3. बासवन्ना के अनुष्ठान और यथार्थ संसार से संबंधित क्या अवधारणा थी।

उत्तर- बासवन्ना- [illegible] [illegible] जीवित सर्प को मारने पर उतारू हो जाते हैं। इसी प्रकार भगवान (पत्थर की मूर्तियों) को भोग चढ़ाते हैं और भूखे-प्यासे भगवान के सेवक को भगाने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न 4. दक्षिण भारतीय महिला संतों का भक्ति परंपरा में क्या स्थान है?

उत्तर- प्रारंभिक भक्ति आन्दोलन (लगभग छठी शताब्दी) अलवारों (विष्णु भक्ति में तन्मय) और नयनारों (शिवभक्त) के नेतृत्व में हुआ। ये एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए तमिल में अपने ईष्ट की स्तुति में भजन गाते थे। अपनी यात्राओं के दौरान अलवार और नयनार संतों ने कुछ पावन स्थलों को अपने ईष्ट का निवास स्थल घोषित किया। इन्हीं स्थलों पर बाद में विशाल मंदिरों का निर्माण हुआ व तीर्थस्थल माने गए। संत कवियों के भजनों को इन मंदिरों में अनुष्ठानों के समय गाया जाता था और साथ ही इन संतों की प्रतिमा की भी पूजा की जाती थी।

प्रश्न 5. उलमा कौन थे?

उत्तर- उलमा इस्लाम धर्म के ज्ञाता थे। इस परंपरा के संरक्षक होने के नाते वे इस्लाम धर्म से संबंधित धार्मिक, कानूनी और अध्यापन संबंधी जिम्मेदारी निभाते थे।

प्रश्न 6. इस्लाम के अनुयायियों को कौनसी पाँच बातों का पालन आवश्यक है?

उत्तर- इस्लाम के अनुयायियों को निम्न बातों का पालन करना आवश्यक है-

(1) अल्लाह एकमात्र ईश्वर है तथा पैगम्बर मोहम्मद उनके दूत (शाहद) हैं।

(2) दिन में पाँच बार नमाज पढ़ी जानी चाहिए।

(3) गरीबों को खैरात (जकात) बाँटी जानी चाहिए।

(4) रमजान के महीने में रोजा रखना चाहिए।

(5) प्रत्येक मुसलमान को अपने जीवन काल में कम से कम एक बार हज के लिए मक्का जाना चाहिए।

प्रश्न 7. जिम्मी से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- जिम्मी मुस्लिम शासन क्षेत्र में रहने वाले गैर-मुस्लिम समुदाय थे। ये वे लोग थे जो उद्घाटित धर्मग्रंथ को मानने वाले थे, ये मुस्लिम शासकों के क्षेत्रों में रहने वाले यहूदी एवं ईसाई थे। [illegible] [illegible] भारत में इनके अंतर्गत हिन्दू समुदाय को भी सम्मिलित किया गया।

प्रश्न 8. सूफी शब्द से क्या आशय है?

उत्तर- 'सूफी' शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के एक शब्द 'सूफ' से हुई है। सूफ शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है एक तरह का गलीचा जो मोटे कपड़े (ऊँन) से बना हुआ होता है। अक्सर इन गलीचे पर बैठकर मुस्लिम धर्म के लोग इबादत किया करते थे। स्पष्ट है कि इन पर बैठकर खुदा के लिए इबादत करने वाले ही सूफी कहलाये। कुछ विचारक इसे यूनानी सोफस (sophos, ज्ञान) से संबंधित कहते हैं और कुछ विद्वान सूफी शब्द को अरबी सफ़ा (पवित्र) से निकला मानते हैं। सूफी पीरों का मुख्य संबंध इस्लाम से ही रहा है। ऐसी मान्यता है कि इस्लाम में 'सूफीवाद' की उत्पत्ति ईरान के शहर 'बसरा' से हुयी थी जो कि अपने आप में एक रहस्यवादी विचारधारा है। राबिया, अल अदहम, मंसूर हल्लाज जैसे शख्सियतों को इनका प्रणेता माना जाता है।

प्रश्न 9. सूफी परंपरा में पीर (मुर्शिद) का क्या महत्व था?

उत्तर- सूफीवाद में एक पीर की भूमिका सूफी मार्ग पर अपने शिष्यों को मार्गदर्शन और निर्देश देना है। यह अक्सर सामान्य पाठ और व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा किया जाता है। अन्य शब्दों में एक पीर का उल्लेख है, मुर्शिद (जिसका अर्थ है मार्गदर्शक या शिक्षक), शेख और सरकार फारसी शब्द जिसका अर्थ मास्टर लॉर्ड है।

प्रश्न 10. सिलसिला का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर- सिलसिला का शाब्दिक अर्थ- एक क्रम में होने वाली घटनाओं आदि का संबंध, एक के बाद एक चलते रहने वाला क्रम, क्रमिकता, श्रेणी, पंक्ति, कतार, लड़ी, शृंखला और अवस्था, तरतीब, क्रम।

प्रश्न 11. वली कौन होते थे?

उत्तर- वली या औलिया, एक अरबी मूल का शब्द है जिसका अर्थ है 'संरक्षक', 'पालक', 'रक्षक' या 'मित्र'। यह आमतौर पर मुसलमानों द्वारा एक इस्लामी संत को इंगित करने के लिए उपयोग किया जाता है। इस्लामी संस्कृति में वलियों के नाम के आगे सम्मानजनक रूप से अक्सर "हज़रत" लगाया जाता है।

प्रश्न 12. मातृगृहता क्या है?

उत्तर- मातृगृहता से आशय- वह परंपरा जिसमें स्त्रियाँ विवाह के बाद अपने मायके में ही अपनी संतान के साथ रहती हैं और उनके पति उनके साथ आकर रह सकते हैं। यह प्रकार मातृगृहता की परंपरा है।

प्रश्न 13. उर्स किस परिपाटी को कहा जाता था?

उत्तर- दक्षिण एशिया में उर्स आमतौर पर किसी सूफी संत की पुण्यतिथि पर उसकी दरगाह पर वार्षिक रूप से आयोजित किये जाने वाले उत्सव को कहते हैं। दक्षिण एशियाई सूफी संत मुख्य रूप से चिश्तिया कहे जाते हैं और उन्हें अल्लाह प्रेमी समझा जाता है।

प्रश्न 14. खानकाह की सामुदायिक रसोई का प्रबंध किस प्रकार किया जाता था?

उत्तर– खानखाह की सामुदायिक रसोई (लंगर) फुतूह (बिना माँगी खैर) पर चलती थी।

प्रश्न 15. अमीर खुसरो अपने किस योगदान के लिए जाने जाते हैं?

उत्तर– अमीर खुसरो खरी बोली हिन्दी के प्रथम कवि माने जाते हैं। उन्होंने गजल, मसनवी, कता, रूबाई, दो बेरी और तरकीब बैंड सहित कई कविता रूपों में लिखा। गजल के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। साहित्य के अतिरिक्त संगीत के क्षेत्र में भी खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रश्न 16. कबीर दास की वाणी किन परिपाटियों में संकलित हैं?

उत्तर– कबीर की वाणी निम्न तीन परिपाटियों में संकलित है–
(1) बीजक (2) शब्दावली (3) पवित्र गुरु ग्रंथ साहिब।

प्रश्न 17. आदि ग्रंथ साहिब का संकलन किसने किया?

उत्तर– आदि ग्रंथ या आद ग्रन्थ सिख धर्म से संबंधित धार्मिक ईकायों का एक संकलन है जिसे पाँचवे सिख श्री गुरु अर्जन देव जी ने सन् 1604 में पूरा करा। दसवें सिख गुरु श्री गोविंद सिंह जी ने इसमें 1704 से 1706 काल में और शब्द जोड़े और इसे अपने बाद सिख धर्म का अनन्त गुरु बताया।

प्रश्न 18. खालसा पंथ पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर– खालसा पंथ की स्थापना गुरु गोविन्द सिंह जी ने 1699 को बैसाखी वाले दिन आनंदपुर साहिब में की। इस दिन उन्होंने सर्वप्रथम पाँच प्यारों को अमृतपान करवा कर खालसा बनाया तथा तत्पश्चात् उन पाँच प्यारों के हाथों से स्वयं भी अमृतपान किया। सतगुरु गोविंद सिंह ने खालसा महिमा में खालसा को "काल पुरख की फौज" पद से निवाजा है।

प्रश्न 19. शरिया से आप क्या समझते हैं?

उत्तर– शारिया का शाब्दिक अर्थ– "पानी का एक स्पष्ट और व्यवस्थित रास्ता" होता है। शरिया कानून जीवन जीने का रास्ता बताता है। सभी मुसलमानों को इसका पालन करने की आज्ञा दी जाती है, इसमें प्रार्थना, उपवास और गरीबों को दान करने का निर्देश दिया गया है।

प्रश्न 20. चिश्ती उपासना पद्धति का वर्णन कीजिये।

उत्तर– चिश्तिया सूफीवाद का एक संप्रदाय है। यह सन् 930 के आस-पास अफगानिस्तान के एक गाँव चिश्त में शुरू हुआ। यह संप्रदाय प्यार, सहनशीलता और खुलेपन के कारण प्रसिद्ध है।

प्रश्न 21. सगुण और निर्गुण भक्ति का आशय समझाइए।

उत्तर– निर्गुण एवं सगुण भक्ति में निम्न अंतर है–

(1) निर्गुण भक्ति में ईश्वर का कोई आकार नहीं होता है, जबकि सगुण भक्ति में ईश्वर का एक आकार होता है।
(2) निर्गुण भक्ति में ईश्वर को अमर माना गया है, जबकि सगुण भक्ति में ईश्वर की मृत्यु होती है।

विश्लेपणात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. महान और लघु परम्पराओं से आप क्या समझते हैं?

उत्तर– महान (वृहत) परम्परा एवं लघु परम्परा में अंतर निम्न हैं–

(1) महान परम्पराएँ वह थी जिनका पालन समाज के प्रभुत्व शैली वर्ग जैसे राजा पुरोहित आदि करते थे। इन कर्मकाण्डों और पद्धतियों का पालन किसान और सामान्य जन भी किया करते थे। जबकि लघु परम्पराएँ लोकाचारों और रीति-रिवाजों से आयी हुई होती थी और आम लोग इसका पालन करते थे।
(2) वृहत् परंपरा अभियान अथवा कुछ ही लोगों द्वारा बनती है। जबकि लघु परम्परा लोक के द्वारा या अनपढ़ किसानों के द्वारा संस्थापित होती है।
(3) लघु परंपरा हमेशा स्थानीय होती है, जबकि वृहद परंपरा में फैलने की प्रवृत्ति होती है।

प्रश्न 2. बे-शरिया और बा-शरिया सूफी परंपरा के बीच एकरूपता और अंतर दोनों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– सूफी सम्प्रदाय अनेक सिलसिलों में विभक्त था। सूफी सिलसिले को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं।
(1) बा-शरिया– बा-शरिया का अर्थ इस्लामी कानूनों या शरिया का पालन करने वाले सिलसिले से है।
(2) बे-शरिया– इसका अर्थ है, ऐसे सिलसिले जो शरिया का पालन नहीं करते। शरिया का उल्लंघन करने के कारण उनको बे-शरिया कहा जाता है। मुस्लिम समुदाय को निर्देशित करने वाले कानून को शरिया कहा जाता है। शरिया कुरान शरीफ तथा हदीस पर आधारित है। बे-शरिया तथा बा-शरिया के बीच समानताएँ तथा असमानताएँ निम्न प्रकार हैं–

असमानताएँ या अन्तर

क्र.	बा-शरिया	बे-शरिया
(1)	शरिया का पालन करते हैं।	शरिया से बँधे नहीं है।
(2)	सूफी सन्त गरीबी का जीवन व्यतीत करने में विश्वास करते थे	बे-शरिया संत ठाठ-बाट का जीवन भी व्यतीत करने में विश्वास करते थे।
(3)	सूफी सन्त खानकाह (आश्रम) में रहते थे।	इनका खानकाह में रहना आवश्यक नहीं था। वे इसका तिरस्कार करते थे।
(4)	इनका राज्य से सम्बन्ध था।	इनका राज्य से कोई सम्बन्ध नहीं था।
(5)	इनमें वली होते थे अर्थात् ईश्वर का मित्र। वह सूफी जो अल्लाह के नजदीक होने का दावा करता था और उससे मिली बरकत से कयामत करने की शक्ति रखता था।	इनको विभिन्न नामों से जाना जाता था, जैसे– कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी।

समानताएँ–

(1) दोनों ही सिलसिले गुरु तथा पीर को बहुत महत्व देते हैं।
(2) दोनों सिलसिले एकेश्वरवाद के सिद्धान्त को मानते हैं अर्थात् दोनों ही अल्लाह को सर्वोच्च, सर्वव्यापक तथा सर्वशक्ति सम्पन्न मानते हैं। 'अल्लाह एक' ही उनका सिद्धान्त है।

प्रश्न 3. खानकाह और सिलसिला पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर– एक खानकाह को आमतौर पर धर्मशाला, लॉज, सामुदायिक केन्द्र या सूफियों द्वारा संचालित धर्मशाला के रूप में परिभाषित किया जाता है। खानकाहों को जमात खाना, बड़े सभा हॉल के रूप में भी जाना जाता है। संरचनात्मक रूप से, एक खानकाह एक बड़ा कमरा हो सकता है या अतिरिक्त आवास स्थान हो सकता है।

सिलसिला सल्तनत काल का प्रधान सम्प्रदाय था। भारत में इसके संस्थापक शेख बहाउद्दान जकरिया (1182–1262) थे। वह एक खुरासानी थे और शेख शहाबद्दीन सहरावर्दी के शिष्य थे, जिन्होंनें बगदाद में इस सिलसिला की शुरुआत की थी। शेख शहाबद्दीन सुहरावर्दी के आदेश से शेख बहाउद्दान जकरिया भारत आये। मुल्तान और सिंध को उन्होंने अपनी गतिविधि का केन्द्र बनाया। अत: उन्होंने मुल्तान में जिस खानकाह की स्थापना की, उसकी गिनती भारत में स्थापित आरंभिक खानकाहों में होती है। उस समय दिल्ली का सुल्तान इल्तुतमिश था, पर मुल्तान पर उसके दुश्मन कुबाचा का आधिपत्य था। शेख बहाउद्दीन जकरिया खुले आम कुबाचा के प्रशासन की आलोचना किया करता था। इल्तुतमिश तथा मुल्तान के शासक कुबाचा के बीच हुए संघर्ष में शेख ने खुले आम इल्तुतमिश का पक्ष लिया। कुबाचा के पतन के बाद इल्तुतमिश ने बहाउद्दीन जकरिया को शेख-उल इस्लाम (इस्लाम का प्रमुख) विद्वान का

खिताब प्रदान किया और अनुदान की व्यवस्था की। समकालीन चिश्ती संतों के विपरीत उन्होंने व्यावहारिक नीति अपनाई।

प्रश्न 4. भक्ति परंपरा में शंकरदेव के योगदान को रेखांकित कीजिए।

उत्तर– शंकरदेव जाति के कायस्थ थे, परन्तु जाति भेद की संकीर्ण भावना असम की वैष्णव भूमि पर उगने में असमर्थ रही। इसलिए शंकरदेव के प्रवर्तन में पिछड़ी जाति के लोग भी आगे बढ़ने में समर्थ हुए। आहोय शासकों के कारण भुईयाँ समान्ताओं के राज्य भी खतरे में थे। शंकर भुईयामों में सम्मान्य थे। वैष्णव धर्म प्रवर्तक होने के नाते उन्होंने सगुण भक्ति पर बल दिया, किन्तु निर्गुण भक्ति की भी उपेक्षा नहीं की। इनका वैष्णव पंथ मध्यकालीन भारत के नव वैष्णव मतवाद का ही अंग था। विष्णु के अवतार के रूप में कृष्ण को ही प्रमुखता मिली, लेकिन ये कृष्ण भागवत के कृष्ण थे न कि महाभारत के राजनीति के खिलाड़ी कृष्ण। कृष्ण के जीवन वृत्तान्त और लीलाओं का गान शंकरदेव की परम्परा के कवियों का महत्वपूर्ण विषय रहा है। सभी ने एकमात्र उपास्यदेव के रूप में कृष्ण को प्रतिष्ठित किया। नवधा भक्ति में श्रवण, कीर्तन को अधिक महत्व दिया गया है, भत् शंकर देव द्वारा प्रवर्तित धर्म 'नाम धर्म' भी कहलाया। 'राम-विजय' (सन् 1568 ई.) की रचना करने पर भी राम को महत्व नहीं मिल सका। सम्भवत: मर्यादावादी राम का काम क्रीड़ा करने वाला रूप समाज के गले न उतर सका। इससे पहले की कृष्ण संबंधी रचनाएँ असम के जनमानस में अपना स्थान बना चुकी थी।

प्रश्न 5. मीराबाई के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई. में पाली के कुड़की गांव में दूदा जी के चौथे पुत्र रतनसिंह के घर हुआ। ये बचपन से ही कृष्णभक्ति में रुचि लेने लगी थी। मीरा का विवाह मेवाड़ के सिसोदिया राज परिवार में हुआ। चित्तौड़गढ़ के महाराजा भोजराज इनके पति थे जो मेवाड़ के महाराणा सांगा के पुत्र थे। विवाह के कुछ समय बाद ही उनके पति का देहान्त हो गया। पति की मृत्यु के बाद उन्हें पति के साथ सती करने का प्रयास किया गया, किन्तु मीरा इसके लिए तैयार नहीं हुई। मीरा के पति का अंतिम संस्कार चित्तोड़ में मीरा की अनुपस्थिति में हुआ। पति की मृत्यु पर भी मीरा माता ने अपना शृंगार नहीं उतारा, क्योंकि वह गिरधर को अपना पति मानती थी।
वे विरक्त हो गई और साधु-संतों की संगति में हरिकीर्तन करते हुए अपना समय व्यतीत करने लगी। पति के परलोकवास के

@MP_BOARD_25 (Telegram)

बाद इनकी भक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। ये मंदिरों में जाकर वहाँ मौजूद कृष्णभक्तों के सामने कृष्णजी की मूर्ति के आगे नाचती रहती थी। मीराबाई का कृष्णभक्ति में नाचना और गाना राज परिवार को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कई बार मीराबाई को विष देकर मारने की कोशिश की। घर वालों के इस प्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वह द्वारका और वृन्दावन गई। वह जहाँ जाती थी, वहाँ लोगों का सम्मान मिलता था। लोग उन्हें देवी के जैसा प्यार और सम्मान देते थे। मीरा का समय बहुत बड़ी राजनैतिक उथल-पुथल का समय रहा है। बाबर का हिंदुस्तान पर हमला और प्रसिद्ध खानवा का युद्ध उसी समय हुआ था। इन सभी परिस्थितियों के बीच मीरा का रहस्यवाद और भक्ति की निर्गुण मिश्रित सगुण पद्धति सर्वमान्य बनी।

प्रश्न 6. भक्ति आंदोलन के प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर– भक्ति आन्दोलन के भारतीय समाज पर प्रभावों का वर्णन निम्न है–

1. हिन्दुओं में आशा तथा साहस का संचार– भक्ति आन्दोलन में हिन्दुओं में आत्मबल का संचार हुआ। जिसके परिणामस्वरूप हिन्दुओं की निराशा दूर हुई और हिन्दू अपनी सभ्यता व संस्कृति को बचाने में सफल रहे।

2. मुसलमानों के अत्याचारों में कमी– भक्ति आन्दोलन के सन्तों द्वारा प्रतिपादित शिक्षाओं व उपदेशों का प्रभाव मुस्लिम शासकों पर भी पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न धर्मों के मध्य एकता स्थापित हुई, जिससे मुसलमानों के अत्याचार कम हो गए।

3. बाहरी आडम्बरों में कमी– भक्ति आन्दोलन के सभी सन्तों ने अपने उपदेशों में आडम्बरों की निन्दा की और पवित्रता पर बल दिया। इन उपदेशों का प्रभाव यह हुआ कि लोग बाहरी आडम्बरों को त्यागकर सरल जीवन की ओर अग्रसर हुए।

4. वर्गीयता तथा संकीर्णता पर आघात– भक्ति आंदोलन के सन्तों ने ऊँच-नीच, छूत-अछूत आदि का भेदभाव दूर करने का प्रयत्न किया, जिसके परिणामस्वरूप समाज में व्याप्त वर्गीयता और संकीर्णता को आघात लगा।

5. सामाजिक सद्भावना का विकास– भक्ति आन्दोलन के सन्तों द्वारा प्रवाहित प्रेममयी वाणी से समाज में सौम्यता, सौजन्यता और सद्भावना का विकास हुआ।

प्रश्न 7. चिश्ती खानकाह का जीवन किस प्रकार का था? वर्णन कीजिए।

उत्तर– चिश्ती खानकाह का जीवन– खानकाह सामाजिक जीवन का केन्द्र बिन्दु था। हमें शेख निजामुद्दीन औलिया, चौदहवीं शताब्दी की खानकाह के बारे में पता है जो उस समय का दिल्ली शहर की बाहरी सीमा पर यमुना नदी के किनारे गियासपुर में था। यहाँ कई छोटे-छोटे कमरे और एक बड़ा हाल, जमातखाना था, जहाँ सहवासी और अतिथि रहते, और उपासना करते थे। सहवासियों में शेख का अपना परिवार, सेवक और अनुयायी थे, शेख एक छोटे कमरे में छत पर रहते थे जहाँ वह मेहमानों से सुबह-शाम मिला करते थे। आँगन एक गलियारे से घिरा होता था और खानकाह को चारों ओर से दीवार घेरे रहती थी। एक बार मंगोल आक्रमण के समय पड़ोसी क्षेत्र के लोगों ने खानकाह में शरण ली। यहाँ एक सामुदायिक रसोई लंगर, फुतूह, बिना माँगी खैर पर चलती थी। सुबह से देर रात तक सब तबके के लोग सिपाही, गुलाम, गायक, व्यापारी, कवि, राहगीर, धनी और निर्धन, हिन्दू, जोगी और कलंदर यहाँ अनुयायी बनने, इबादत करने, ताबीज लेने अथवा विभिन्न मसलों पर शेख की मध्यस्थता के लिए आते थे। कुछ अन्य मिलने वालों में अमीर हसन, ------ और अमीर खुसरो जैसे कवि तथा दरबारी इतिहासकार ----------- बरनी जैसे लोग शामिल थे। इन सभी लोगों ने शेख के बारे में लिखा। शेख के सामने झुकना, मिलने वालों को पानी पिलाना, दीक्षितों के सर पर मुंडन तथा यौगिक व्यायाम आदि व्यवहार इस तथ्य के द्योतक हैं कि स्थानीय परंपराओं को आत्मसात करने का प्रयत्न किया गया।

शेख निजामुद्दीन से कई आध्यात्मिक वारिसों का चुनाव किया और उन्हें उपमहाद्वीपीय के विभिन्न भागों में खानकाह स्थापित करने के लिए नियुक्त किया। इस वजह से चिश्तियों के उपदेश, व्यवहार और संस्थाएँ तथा शेख का यश चारों ओर फैल गया। उनकी तथा उनके आध्यात्मिक पूर्वजों की दरगाह पर अनेक तीर्थयात्री आने लगे।

प्रश्न 8. भारतीय समाज में पूजा प्रणालियाँ किस प्रकार समन्वित थीं?

उत्तर– आध्यात्मिक विचार– हिन्दुत्व कुछ आध्यात्मिक विचारों (ईश्वर के स्वभाव के विषय में तथा धार्मिक विश्वासों की स्थापना से सम्बन्धित सिद्धान्तों की शृंखला में विश्वास रखता है, जैसे कि पुनर्जन्म, आत्मा की अमरता, पाप, पुण्य, कर्म, धर्म और मोक्ष। कर्म का सिद्धान्त एक हिन्दू को यह सिखाता है कि वह अपने उन कर्मों के कारण विशेष सामाजिक समूह (जाति/परिवार) में जन्म लेता है जो उसने अपने पूर्व जन्म में किये थे। धर्म का विचार यह कहता है कि यदि वह इस जन्म में अच्छे कर्म करेगा तो अगले जन्म में वह उच्च सामाजिक समूह में जन्म लेगा। मोक्ष का विचार मनुष्य को स्मरण कराता है कि उसके पाप और पुण्य उसके जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति निर्धारण करेंगे।

2. मूर्ति पूजा– हिन्दू धर्म की सबसे अधिक उल्लेखनीय विशेषता मूर्ति पूजा में विश्वास है। पूज्य मूर्ति एक सही नहीं होती है, बल्कि यह विभिन्न धर्म सम्प्रदायों से भिन्न होती है। प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय की एक मूर्ति होती है (कृष्ण, राम, गणेश, शिव, हनुमान आदि) जो अलग-अलग मन्दिरों में स्थापित होती है और सदस्य समय-समय पर उनकी पूजा-अर्चना करते हैं। इन मन्दिरों में म्लेच्छों (मुस्लिमों और अस्पृश्यों) के प्रवेश निषेध के पीछे मन्दिरों को अपवित्रता से बचाने का उद्देश्य था न कि अन्य धर्मों के साथ मनमुटाव।

3. एकेश्वरवादी लक्षण– हिन्दुत्व की प्रमुख विशेषता है कि वह समान रूप से एकाश्मीय धर्म नहीं है, बल्कि लचीले धार्मिक समूहों का समन्वय है। यही लचीलापन इसकी शक्ति है जिसमें गैर जाति और वैदिक समूहों के, धर्मभावों की अवज्ञा करते हुए भी रहने की अनुमति है।

4. सहिष्णुता– सहिष्णुता के संबंध में एक दृष्टिकोण यह है कि हिन्दुत्व धर्मनिरपेक्ष और सहिष्णु दर्शन है, क्योंकि यद्यपि यह अपने में अनेक मतों और उपासना पद्धतियों को समेटे हुए है, लेकिन सभी हिन्दू सामान्य देवताओं की शपथ लेते हैं। सामाजिक समुदायों की पृथक्कता तथा इनकी धार्मिक विविध पहचान ने प्रत्येक समूह को पृथक अस्तित्व के साथ रहने को सम्भव कर दिया। झगड़ा केवल संरक्षण, प्रतिस्पर्धा में हो सकता है। इससे हिन्दू धर्म में सहिष्णुता में कमी आई।

प्रश्न 9. भक्ति आंदोलन की विशेषताएँ लिखिए, जिनके कारण वह जनसाधारण में प्रसारित हो सका?

उत्तर– भक्ति आंदोलन की विशेषताएँ–

(1) भक्ति आंदोलन के सन्तों ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया।

(2) इसके कुछ संतों ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया।

(3) भक्ति आन्दोलन के प्रचारकों ने अपने विचारों का प्रचार जनसाधारण की भाषा तथा प्रचलित साधारण बोली में किया।

(4) यह आन्दोलन मुख्य रूप से सर्वसाधारण का आन्दोलन था। इसके सारे प्रचारक जनसाधारण वर्ग के ही लोग थे।

(5) यद्यपि यह आन्दोलन विशेष रूप से धार्मिक आन्दोलन था, लेकिन इसके अनेक प्रवर्तकों ने सामाजिक क्षेत्र में विद्यमान कुरीतियों को दूर करने की कोशिश की।

(6) भक्ति आन्दोलन के संत सारे मनुष्य को एक समझते थे। उन्होंने धर्म, लिंग, वर्ण, जाति आदि के भेदभाव का विरोध किया।

प्रश्न 10. बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक में प्रारम्भ हुए नवीन भक्ति आंदोलन का वर्णन कीजिए।

उत्तर– बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक में एक नवीन आंदोलन का उद्भव जिसका नेतृत्व बासवन्ना (1106-68) नामक एक ब्राह्मण ने किया। बासवन्ना कलचुरी राजा के दरबार में मंत्री थे। इनके अनुयायी वीर शैव (शिव के विरुद्ध व लिंगायत, लिंग धारण करने वाले कहलाए।

आज भी लिंगायत समुदाय का इस क्षेत्र में महत्त्व है। वे शिव की आराधना लिंग के रूप में करते हैं। इस समुदाय के पुरुष वाम स्कंध पर चाँदी के एक पिटारे में एक लघु लिंग को धारण करते हैं। जिन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है उनमें जंगम अर्थात् यायावर भिक्षु शामिल हैं। लिंगायतों का विश्वास है कि मृत्योपरांत भक्त शिव में लीन हो जाएंगे तथा इस संसार में पुनः नहीं लौटेंगे। धर्मशास्त्र में बताए गए। संस्कार का वे पालन नहीं करते और अपने मृतकों को विधिपूर्वक दफनाते हैं।

प्रश्न 11. इस्लाम के अन्य स्थानों पर विस्तार के साथ उसके सार्वभौमिक तत्वों में क्या परिवर्तन दिखाई देता है।

उत्तर– इस्लाम के आगमन के बाद जो परिवर्तन हुए, वे शासक वर्ग तक ही सीमित नहीं थे अपितु पूरे उपमहाद्वीप में दूरदरा तक और विभिन्न सामाजिक समुदायों किसान, शिल्पी, व्यापारी के बीच फैल गए, जिन्होंने इस्लाम धर्म कबूल किया उन्होंने सैद्धान्तिक रूप से इसकी पाँच मुख्य बातें मानीं। अल्लाह एकमात्र ईश्वर है मोहम्मद उनके दूत, शाहद हैं दिन में पाँच बार नमाज पढ़ी जानी चाहिए, खैरात (जातक) बाँटनी चाहिए। रमजान के महीने में रोजा रखना चाहिए और हज के लिए मक्का जाना चाहिए।

किन्तु इन सार्वभौमिक तत्वों में अकसर सांप्रदायिक, शिया, सुन्नी वजहों से तथा स्थानीय लोकाचारों के प्रभाव की वजह से भी धर्मांतरित लोगों के व्यवहारों में भिन्नता देखने में आती थी उदाहरणतः खोजा, इस्माइली, शिया समुदाय के लोगों ने कुरान के विचारों की अभिव्यक्ति के लिए देशी साहित्यिक विधा का सहारा लिया। जीवन, व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द ज्ञान के नाम से भक्ति गीत, जो राग में निबद्ध थे पंजाबी, मुल्तानी, सिंधी, कच्छी, हिंदी और गुजराती में दैनिक प्रार्थना के दौरान गाए जाते थे।

इसके अलावा अरब मुसलमान व्यापारी जो मालाबार तट के किनारे बसे, उन्होंने न केवल स्थानीय मलयालम भाषा को अपनाया अपितु स्थानीय आचारों जैसे मातृवुफलीयता और मातृगृहता को भी अपनाया। एक सार्वभौमिक धर्म के स्थानीय आचारों के संग जटिल मिश्रण का सर्वोत्तम उदाहरण संभवतः

मस्जिदों की स्थापत्य कला में दृष्टिगोचर होता है। मस्जिदों के कुछ स्थापत्य संबंधी तत्व सार्वभौमिक थे जैसे इमारत का मक्का की तरफ अनुस्थापन जो मेहराब (प्रार्थना का आलाद और मिम्बर व्यासपीठ की स्थापना से लक्षित होता था। बहुत से तत्व ऐसे थे जिनमें भिन्नता देखने में आती है जैसे छत और निर्माण का सामान।

प्रश्न 12. शासक वर्ग नयनार और सूफी संतों का समर्थन क्यों चाहता था?

उत्तर– नयनार शैव परम्परा के संत थे। नयनार और सूफी संतों को शासकों ने अनेक प्रकार से आश्रय दिया। उन्होंने विशेष रूप से चोल सम्राटों ने ब्राह्मणीय और भक्ति परम्परा को समर्थन दिया तथा विष्णु और शिव के मन्दिरों के निर्माण के लिए भूमि अनुदान दिये। चिदम्बरम, तंजावुर और गंगेकोंडा चोलापुरम् के विशाल शिव मन्दिर चोल सम्राटों की सहायता से बनाये गये। इसी काल में कांस्य में ढाली गई शिव की प्रतिमाओं का भी निर्माण हुआ। स्पष्ट है कि नयनार संतों का दर्शन शिल्पकारों के लिए प्रेरणा बनी।

वेल्लाल किसानों में नयनार और अलवार संतों में बहुत अधिक आदर था। सम्भवतः इसीलिए सम्राटों ने दैवीय समर्थन पाने का दावा किया और अपनी सत्ता के प्रदर्शन के लिए सुन्दर मंदिरों का निर्माण करवाया, जिनमें पत्थर और धातु से बनी मूर्तियाँ लगाई गयी थीं।

नयनारों का समर्थन पाने के लिए इन सम्राटों ने कहा तमिल भाषा करना जरूरी है। वे किसी भी व्यक्ति को केवल उसके धर्म के आधार पर भेदभाव रखने के पक्ष में नहीं थे।

(2) मनुष्य अपने शुद्ध कर्मों द्वारा उच्च स्थान प्राप्त कर सकता है।

(3) समाज में सब बराबर हैं, न कोई बड़ा है न कोई छोटा है।

(4) मनुष्य को बाह्य आडम्बरों से बचना चाहिए, भोग-विलास से दूर रहना चाहिए एवं सादा और पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहिए। उसका नैतिक स्तर बहुत ऊँचा होना चाहिए।

(5) ईश्वर एक है और संसार के सभी लोग उसकी सन्तान हैं। ईश्वर ही सृष्टि की रचना करता है। सभी पदार्थ उसी से पैदा होते हैं और अंत में उसी में समा जाते हैं।

(6) संसार के विभिन्न मतों में कोई विशेष अंतर नहीं है। यद्यपि सभी मार्ग भिन्न-भिन्न हैं तथापि उनका उद्देश्य एक ही है अर्थात् सभी मत एक ही ईश्वर तक पहुँचने का साधन हैं।

(7) सूफियों ने अपने आपको वर्गों अथवा सिलसिलों में संगठित किया। प्रत्येक सिलसिले का अपना नेता होता था।

(8) सूफी आश्रम-व्यवस्था, पश्चाताप, व्रत, योग, साधन आदि पर भी बल देते थे।

(9) गुरु (पीर) और शिष्य (मुरीद) के बीच सम्बन्ध को बहुत महत्व दिया जाता था। गुरु ही शिष्यों के लिए नियमों का निर्माण करता था।

(10) सूफी, संगीत पर भी बहुत बल देते थे।

प्रश्न 13. अलवार, नयनार और वीर शैवों ने किस जाति प्रथा की आलोचना प्रस्तुत की?

उत्तर– अलवार तथा नयनार संतों ने जाति प्रथा का विरोध किया। कुछ इतिहासकारों का मत है कि अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा तथा ब्राह्मणों की सर्वोच्चता तथा प्रभुता के विरुद्ध आवाज उठाई। उस समय समाज में ब्राह्मणों का प्रभुत्व था, जो समाज में अपनी प्रतिष्ठा तथा सम्मान को बनाए रखने का प्रयास करते थे। किन्तु अनेक विभिन्न जातियों से थे, कुछ तो ऐसी जातियों से आए थे, जिनको ब्राह्मणों ने 'अस्पृश्य' माना। अतः इस ब्राह्मणवादी प्रवृत्ति का सन्तों ने विरोध किया और समतावादी समाज के निर्माण का प्रयास किया।

वीर शैवों द्वारा जाति प्रथा विरोध–

वीर शैवों का वर्चस्व कर्नाटक में था। वीर शैव आन्दोलन का नेतृत्व बासवन्ना (1106-68) नामक ब्राह्मण ने किया, जो कलचुरी राजा के दरबार में मन्त्री था। इसके अनुयायी 'वीर शैव' व लिंगायत कहलाए। ये लोग शिव की उपासना एक लिंग के रूप में करते थे। उन्होंने जाति की अवधारणा और कुछ समुदायों के 'दूषित' होने की ब्राह्मणीय अवधारणा का विरोध किया। उस समय कर्नाटक में कुछ जातियों को 'अस्पृश्य' माना जाता था। ब्राह्मणीय अवधारणा में उनको निम्न जाति या अस्पृश्य माना गया, जिसका वीर शैवों ने घोर विरोध किया। वीर शैवों ने ब्राह्मणीय अवधारणा के पुनर्जन्म के सिद्धान्त का भी खण्डन किया। इन सब कारणों से ब्राह्मणीय सामाजिक व्यवस्था में जिन समुदायों को गौण स्थान मिला था, वे लिंगायत के अनुयायी हो गये। धर्मशास्त्रों में जिन आचारों को अस्वीकार किया गया था, वे थे-वयस्क विवाह और विधवा पुनर्विवाह। लिंगायतों ने इन्हें मान्यता प्रदान की। इसलिए ये लोकप्रिय हुए, वीर शैवों ने संस्कृत भाषा को त्यागकर स्थानीय कन्नड़ भाषा का प्रयोग शुरू किया।

प्रश्न 14. कबीरदास जी का धर्म और समाज के लिए क्या योगदान है?

उत्तर– कबीरदास समाज सुधारक के साथ ही हिन्दी साहित्य के एक महान समाज कवि थे। उन्होंने अनोखा सत्य के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन तथा कल्याण किया। जिससे मानव कुसंगति, छल-कपट, निंदा, अहंकार, जाति भेदभाव, धार्मिक पाखंड आदि को छोड़कर एक सच्चा मानव बन सकता है। उन्होंने समाज में चल रहे अंधविश्वासों, रूढ़ियों पर करारा प्रहार किया। कबीर समाज सुधारक पहले तथा कवि बाद में हैं। उन्होंने समाज में व्याप्त रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों पर करारा व्यंग्य किया है। उन्होंने धर्म का सम्बन्ध सत्य से जोड़कर समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परम्परा का खण्डन किया है। कबीर ने मानव जाति को सर्वश्रेष्ठ बताया है तथा कहा है कि इसमें से कोई भी ऊंचा या नीचा नहीं है।

प्रश्न 15. गुरुनानक देव ने समाज को क्या संदेश दिया?

उत्तर– गुरुनानक भक्ति सम्प्रदाय के प्रमुख संत थे। उनका उद्देश्य एक ही ईश्वर की मान्यता के आधार पर हिन्दू धर्म में सुधार करना और हिन्दुओं एवं मुसलमानों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना था जो 21वीं शताब्दी में भी महत्वपूर्ण है। गुरुनानक ने धर्म के बाहरी आडम्बरों को अस्वीकार किया। कबीर ने धार्मिक समन्वय तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास किया तथा हिंदू तथा मुस्लिम समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया। जिसकी 21वीं शताब्दी में भी अत्यन्त आवश्यकता है। आज हिन्दू-मुसलमानों के बीच जो कटुता है, उसको दूर करने में कबीर के विचार सहायक हो सकते हैं।

प्रश्न 16. धार्मिक परिपाटियाँ इतिहासकारों के लिए किस प्रकार सहयोगी सिद्ध हो सकती है?

उत्तर– धार्मिक परंपराओं के इतिहासों का पुनर्निर्माण–

हमने देखा कि इतिहासकार धार्मिक परंपरा के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए अनेक स्रोतों का उपयोग करते हैं जैसे मूर्तिकला, स्थापत्य, धर्मगुरुओं से जुड़ी कहानियाँ, दैवीय स्वरूप को समझने को उत्सुक स्त्री और पुरुषों द्वारा लिखी गई काव्य रचनाएँ आदि। मूर्तिकला और स्थापत्य कला का हम इस उद्देश्य के लिए तभी इस्तेमाल कर सकते हैं जब हम उसके संदर्भ को अच्छी तरह समझें अर्थात् इन आकृतियों और इमारतों को बनाने और उनका इस्तेमाल करने वालों के विचारों आस्थाओं और आचारों की हमें समझ हो।

धार्मिक विश्वासों से संबंधित साहित्यिक परंपराओं के बारे में क्या कहा जा सकता है? यदि हम इस अध्याय में वर्णित स्रोतों पर दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि उनमें काफी विविधता है और वे कई भाषाओं व शैलियों में लिखे गए हैं। कुछ स्रोत सरल, स्पष्ट भाषा में है जैसे कि बसवन्ना के वचन जबकि कुछ अन्य अलंकृत फारसी में लिखे गए मुगल सम्राटों के फरमानों का रूप धारण कर लेते हैं। प्रत्येक किस्म के मूल-पाठ को समझने के लिए तरह-तरह का कौशल चाहिए, कई भाषाओं की जानकारी, लेकिन इसके अलावा इतिहासकार को प्रत्येक विधि की शैली व शैलियों में सूक्ष्म अंतरों को भी पहचानना पड़ता।

प्रश्न 17. सूफी परंपरा से सम्बन्धित इतिहास की जानकारी के लिए विभिन्न स्रोतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर– सूफी खानक़ाहों के आसपास अंदर ग्रंथों की रचना हुई जिसमें शामिल हैं–

(1) सूफ़ी विचारों और आचारों पर प्रबंध पुस्तिका कश्फ-अल-महजुब इस विधा का एक उदाहरण है। यह पुस्तक अली बिन उस्मान हुजविरी (मृत्यु 1071) द्वारा लिखी गई। साहित्य इतिहासकारों को यह जानने में मदद करता है कि उपमहाद्वीप के बाहर की परम्पराओं ने भारत में सूफ़ी चिंतन को किस तरह प्रभावित किया।

(2) मुलफुज़ात (सूफ़ी संतों की बातचीत) : मुलफ़ुज़ात पर एक आरंभिक ग्रंथ फवाइद-अल-फुआद है। यह शेख निज़ामुद्दीन औलिया की बातचीत पर आधारित एक संग्रह है जिसका संकलन प्रसिद्ध फ़ारसी कवि अमीर हसन सिजज़ी देहलवी ने किया। स्रोत 9 में इस ग्रंथ से लिया एक अंश उद्धत है। मुलफ़ुज़ात का संकलन विभिन्न सूफी सिलसिलों के शेखों की अनुमति से हुआ। इनका उद्देश्य मुख्यतः उपदेशात्मक था। उपमहाद्वीप के अनेक भागों से जिसमें दक्कन शामिल है, अनेक उदाहरण इस तरह के मिलते हैं। कई शताब्दियों तक इनका संकलन होता रहा।

(3) मक्तुबात (लिखे हुए पत्रों का संकलन) : ये वे पत्र थे जो सूफ़ी संतों द्वारा अपने अनुयायियों और सहयोगियों को लिखे गए। इन पत्रों मे धार्मिक सत्य के बारे में शेख के अनुभवों का वर्णन मिलता है, जिसे वह अन्य लोगों के साथ बाँटना चाहते थे। वह इन पत्रों में अपने अनुयायियों लौकिक और आध्यात्मिक जीवन उनकी आकांक्षाओं और मुश्किलों पर भी टिप्पणी करते थे। विद्वान बहुधा सत्रहवीं शताब्दी के नक्शबंदी सिलसिले के शेख अहमद सरहिंदी (मृत्यु 1624) के लिखे मुक्तबात-ए-इमाम रब्बानी पर चर्चा करते हैं। इस शेख की विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन से बादशाह अकबर की उदारवादी और असांप्रदायिक विचारधारा से करते हैं।

©MP_BOARD_25(Telegram)

(4) तज़किरा (सूफी संतों की जीवनियों का स्मरण) : भारत में लिखा पहला सूफ़ी तज़किरा मीर खुर्द किरमानी का सियार-उल-औलिया है। यह तज़किरा मुख्यतः चिश्ती संतों के बारे में था। सबसे प्रसिद्ध तज़किरा अब्दुल हक मुहाद्दिस देहलवी (मृत्यु 1942) का अख्बार-अल-अखयार है। तज़किरा के लेखों का मुख्य उद्देश्य अपने सिलसिलों की प्रधानता स्थापित करना और साथ ही अपनी आध्यात्मिक शब्दावली की महिमा का बखान करना था। तज़किरे के बहुत से वर्णन अद्भुत और अविश्वसनीय है, किन्तु फिर भी वे इतिहासकारों के लिए महत्वपूर्ण हैं और सूफ़ी परम्परा के स्वरूप को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं।

यह याद रखने योग्य हैं कि प्रत्येक परिपाटी जिसका जिक्र इस अध्याय में हुआ है उससे अनेक साहित्यिक और मौखिक संदेश जुड़े हुए हैं। इनमें से कुछ को सुरक्षित किया गया। बहुत सी सूचनाएँ ऐसी थीं जिनमें सम्प्रेषण के दौरान संशोधन हो गया, व कुछ संदेश ऐसे भी थे जो हमेशा के लिए विस्मृत हो गए।

प्रश्न 18. निम्नलिखित को भारत के मानचित्र पर प्रदर्शित कीजिए।

(1) गंगइकोण्ड्चोलपुरम शिव मंदिर (2) शेख निजामुद्दीन ओलिया की दरगाह (3) शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह (4) जगन्नाथ मंदिर पुरी।

उत्तर–

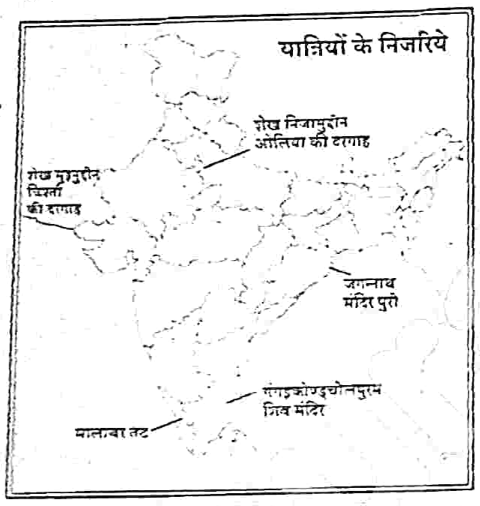

अध्याय–7 एक साम्राज्य की राजधानी–विजयनगर

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की?

(a) हरिहर एवं बुक्का (b) कृष्ण देव राय
(c) देवराय प्रथम (d) नरसिंह

(2) किस विदेशी यात्री ने विजयनगर की तुलना रोम से की?

(a) डोमिंगो पेस (b) निकोलोकोंटी
(c) अब्दुर रज्जाक (d) निकितिन

(3) हम्पी के भग्नावशेषों की खोज किसने की?

(a) कर्नल कॉलिन मेकंजी (b) डोमिंगो पेस
(c) निकितिन (d) अलेक्जेंडर ग्रनिलो

(4) बहमनी साम्राज्य की स्थापना कब हुई?

(a) 1347 ई. (b) 1336 ई.
(c) 1354 ई. (d) 1565 ई.

(5) यूनेस्को ने हम्पी को विश्व पुरातात्विक स्थल कब घोषित किया?

(a) 1986 ई. (b) 1976 ई.
(c) 1856 ई. (d) 1876 ई.

उत्तर– (1) (a) (2) (b) (3) (d) (4) (a) (5) (a)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) हम्पी का पहला सर्वेक्षण मानचित्र .... ने तैयार किया। (कर्नल कॉलिन मेकंजी/अलेक्जेंडर ग्रनिलो)

(2) कर्नल कॉलिन मेकंजी को .... में भारत का पहला सर्वेयर जनरल। (1815 ई./1876 ई.)

(3) अमुक्त माल्यद .... की रचना है। (कृष्णदेव राय/देवराय प्रथम)

(4) ....में गोवा पर पुर्तगालियों ने विजय प्राप्त कर ली थी। (1510 ई./1498 ई.)

(5) विजयनगर राजाओं के शासकीय आदेश .... लिपि में लिपिबद्ध किए जाते थे। (कन्नड़/तमिल)

उत्तर– (1) कर्नल कॉलिन (2) 1815 ई. (3) कृष्णदेव राय (4) 1510 ई. (5) तमिल।

प्रश्न 3. सत्य / असत्य लिखिए–

(1) विजयनगर के शासक अपने आप को राय कहते थे।
(2) 'लोटस महल' राजकीय केंद्र के सबसे सुन्दर भवनों में एक है।
(3) विजयनगर के देवता विट्ठल भगवान शिव के रूप में माने जाते हैं।
(4) राजकीय केंद्र बस्ती के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित था।
(5) तालीकोटा युद्ध में बरार नामक राज्य ने हिस्सा लिया था।

उत्तर– (1) सत्य (2) सत्य (3) असत्य (4) असत्य (5) असत्य

प्रश्न 4. सही जोड़ी बनाइए–

'अ'	'ब'
(1) बुक्का	(a) संगम वंश
(2) वीर नरसिंह	(b) तुलुव वंश
(3) रंग तृतीय	(c) आरविदु वंश
(4) डोमिंगो पेस	(d) पुर्तगाल
(5) निकितिन	(e) रूस

उत्तर– (1) (a), (2) (b), (3) (c), (4) (d), (5) (e).

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिये–

(1) विजयनगर को हम्पी नाम कैसे मिला?
(2) यवन शब्द का प्रयोग किन लोगों के लिए किया जाता था?
(3) तालीकोटा का युद्ध कब हुआ था?
(4) विजयनगर में दो प्रसिद्ध मन्दिर कौन से थे?
(5) विजयनगर के किन निर्माणों को पेस ने संयुक्त रूप से विजय का भवन कहा है?

उत्तर– (1) इस नाम का आविर्भाव यहाँ की स्थानीय मातृदेवी पम्पा देवी के नाम पर हुआ (2) यूनानियों तथा उत्तर-पश्चिम से उपमहाद्वीप में आने वाले अन्य लोगों के लिए (3) 1565 में (4) विरूपाक्ष विट्ठल मंदिर (5) सभा मंडप तथा महानदी डिब्बा को।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. रायचूर दोआव से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– कृष्णा और तुंगभद्रा के बीच के क्षेत्रों को रायचूर दोआब भी कहते हैं। ब्रह्मनी सुल्तानों और हिन्दू राजाओं के बीच इस दोआब पर कब्जे के लिए बराबर द्वन्द्व होता रहा। इस दोआब में रायचूर तथा मुदगल नाम के दो किले भी है।

प्रश्न 2. गोपुरम से क्या समझते हैं ?

उत्तर– गोपुरम या गोपुर (जिसे विमानम भी कहते हैं) एक स्मारकीय अट्टालिका होती है, प्रायः शिल्प से सज्जित एवं अधिकतर दक्षिण भारत के मन्दिरों के द्वार पर स्थिर होता है यह हिन्दू मंदिरों के स्थापत्य का प्रमुख अंग है। यह ऊपर किरीट कलश से शोभायमान होता है। यह मन्दिरों की चारदीवारी में बने द्वार का काम देते हैं।

प्रश्न 3. महानवमी डिब्बा में मनाए जाने वाले धार्मिक आयोजनों का वर्णन कीजिए।

उत्तर– महानवमी डिब्बा से संबंध अनुष्ठान सितम्बर एवं अक्टूबर के शरद महीनों में 10 दिनों तक मनाया जाने वाला हिन्दू त्यौहार था। इस अनुष्ठान को उत्तर भारत में दशहरा, बंगाल में दुर्गापूजा और प्रायद्वीपीय भारत में महानवमी के नाम से निष्पादित किए जाते थे। इस अवसर पर विजयनगर के शासक अपने रूतबे, ताकत तथा सत्ता की शक्ति का प्रदर्शन करते थे।

इस अवसर पर होने वाले अनुष्ठानों में मूर्तिपूजा, अश्वपूजा के साथ-साथ भैंसों तथा अन्य जानवरों की बलि दी जाती थी। नृत्य, कुश्ती प्रतिस्पर्धा तथा घोड़ों, हाथियों तथा रथों व सैनिकों की शोभा यात्राएँ निकाली जाती थीं।

प्रश्न 4. विजयनगर के शासकों की मंदिर निर्माण में रुचि का क्या कारण था?

उत्तर– विजयनगर के शासकों की मंदिर निर्माण में रुचि का कारण यह था कि वह इन देव स्थलों में प्रतिष्ठित देवी-देवताओं से संबंध के माध्यम से अपनी सत्ता को स्थापित करने तथा वैधता प्रदान करने का प्रयास कर रहे थे।

प्रश्न 5. कुदिरई चेट्टी कौन थे?

उत्तर– कुदिरई चेट्टी– व्यापारियों के स्थानीय समूह, जिन्हें कुदिरई चेट्टी अथवा घोड़ों के व्यापारी कहा जाता था।

प्रश्न 6. पंपा देवी कौन थी?

उत्तर– पंपा देवी– यह हम्पी क्षेत्र की स्थानीय देव थी, इन्हीं के नाम पर इस क्षेत्र का नाम हम्पी पड़ा।

प्रश्न 7. विरुपाक्ष नामक देवता का विजयनगर में क्या महत्व था?

उत्तर– विरुपाक्ष मंदिर भगवान शिवजी समर्पित है। यहाँ भगवान शिव के विरुपाक्ष रूप की पूजा की जाती है। इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग की कहानी भगवान शिव और रावण से जुड़ी है। यह मंदिर दक्षिण की ओर झुका हुआ है। पौराणिक कथाओं के अनुसार रावण जब शिवजी के दिए हुए शिवलिंग को लेकर लंका जा रहा था तो यहाँ पर रुका था। उसने इस जगह पर एक बूढ़े आदमी को शिवलिंग पकड़ने को दिया था और उसने शिवलिंग जमीन पर रख दिया, तब से शिवलिंग वहीं पर जम गया और लाख कोशिशों के बाद भी हिलाया न जा सका। मंदिर की दीवारों पर इस प्रसंग के चित्र बने हुए हैं, जिसमें रावण पुनः शिवलिंग को उठाने की प्रार्थना कर रहा है और भगवान शिव इन्कार कर रहे हैं।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 8. यवन से क्या आशय है?

उत्तर- यवन संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका प्रयोग यूनानियों तथा उत्तर-पश्चिम से उपमहाद्वीप में आने वाले अन्य लोगों के लिए किया जाता था।

प्रश्न 9. कृष्णादेव राय ने यवन राज्य स्थापनाचार्य की उपाधि क्यों धारण की?

उत्तर- कृष्ण देव राय ने नदी का बहाव बदल कर दुर्ग को जीत लिया। बहमनी सुल्तान महमूदशाह को उन्होंने बुरी तरह परास्त किया। रायचूड़, गुलबर्गा ओर बीदर आदि दुर्गों पर विजयनगर की ध्वजा फहरानी लगी। किन्तु प्राचीन हिन्दू राजाओं के आदर्श के अनुसार महमूदशाह को फिर से उसका राज लौटा दिया और इस प्रकार यवन राज्य स्थापनाचार्य की उपाधि धारण की।

प्रश्न 10. अमर शब्द का अर्थ समझाइये।

उत्तर- अमर शब्द का आविर्भाव मान्यतानुसार संस्कृत शब्द समर से हुआ है जिसका अर्थ है लड़ाई या युद्ध। यह फारसी शब्द अमीर से भी मिलता-जुलता है, जिसका अर्थ है, ऊँच पद का कुलीन व्यक्ति।

प्रश्न 11. राक्षसी-तांगड़ी (तालीकोटा) युद्ध किन के बीच हुआ था?

उत्तर- तालीकोट का प्रसिद्ध युद्ध विजयनगर साम्राज्य और बहमनी राज्य के बीच 1563 ई. में लड़ा गया।

प्रश्न 12. तालीकोटा युद्ध में बहमनी संयुक्त मोर्चे में कौन से राज्य शामिल थे?

उत्तर- तालीकोटा युद्ध में बहमनी संयुक्त मोर्चे में बीजापुर, अहमदनगर तथा गोलकुण्डा शामिल थे।

प्रश्न 13. विजयनगर स्थित सभा मंडप की संरचना कैसी थी?

उत्तर- सभामंडप- पूरा क्षेत्र एक ऊँचा मंच है जिसमें पास-पास तथा निश्चित दूरी पर लकड़ी के स्तम्भों के लिए छेद बने हुए हैं। इसमें दूसरी मंजिल जो इन स्तम्भों पर टिकी थी, तक जाने के लिए सीढ़ी बनी हुई थी। स्तम्भों के एक दूसरे से बहुत पास-पास होने से बहुत कम खुला स्थान बचता होगा और इसलिए यह स्पष्ट नहीं है कि यह मंडप किस प्रयोजन के लिए बनाया गया था।

प्रश्न 14. इंडो-इस्लामिक शैली क्या थी?

उत्तर- इंडो इस्लामिक आर्किट्रेक्चर भारतीय उपमहाद्वीप की वास्तुकला है जो इस्लामी संरक्षकों और उद्देश्यों के लिए और उनके लिए निर्मित है। सिंध में प्रारंभिक भवन -उपस्थिति के बावजूद, भारत इस्लामी वास्तुकला का विकास 1193 में घुरिद वंश की राजधानी के रूप में दिल्ली की स्थापना के साथ शुरू हुआ।

प्रश्न 15. पेस ने कृष्णदेव राय का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर- डोमिंगो पेस एक विदेशी यात्री था जिसने सोलहवीं शताब्दी में भारत की यात्रा की थी, पेस ने विजयनगर की भी यात्रा की। पेस ने विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय का वर्णन करते हुए लिखा है कि "मझला कद, गोरा रंग, अच्छी काठी, कुछ मोटा, राजा के चेहरे पर चेचक के दाग हैं।"

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. डोमिंगो पेस ने विजयनगर बाजार का वर्णन किस रूप में किया है?

उत्तर- बाजार के द्वारा किसी शहर की समृद्धि के बारे में व्यापक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। बाजारों की चहल-पहल तथा रौनक जनसाधारण द्वारा किए गए क्रय-विक्रय पर आधारित होती है। पेस ने बाजार का वर्णन किया है कि वहाँ माणिक्य, हीरे-मोती से लेकर खाने-पीने की सभी वस्तुएँ तथा हर वह सामान मिल सकता है, जो आप खरीदना चाहते हैं, विजयनगर की समृद्धि का पेस द्वारा किया गया सजीव वर्णन विजयनगर की आर्थिक समृद्धि का द्योतक है। इसी प्रकार फर्नाओ नूनिज ने भी विजयनगर के बाजारों की समृद्धि का वर्णन किया है।

प्रश्न 2. महानवमी डिब्बा का सांस्कृतिक महत्व क्या था?

उत्तर- महानवमी डिब्बा से संबद्ध अनुष्ठान सितंबर एवं अक्टूबर के शरद महीनों में 10 दिनों तक मनाया जाने वाला हिंदू त्यौहार था। इस अनुष्ठान को उत्तर भारत में दशहरा, बंगाल में दूर्गा पूजा और प्रायद्वीपीय भारत में महानवमी के नाम से निष्पादित किए जाते थे। इस अवसर पर विजयनगर के शासक अपने रुतबे, ताकत तथा सेना की शक्ति का प्रदर्शन करते थे। इस अवसर पर होने वाले अनुष्ठानों में मूर्ति पूजा, अश्व पूजा के साथ-साथ भैंस तथा अन्य जानवरों की बलि दी जाती थी। नृत्य, कुश्ती प्रतिस्पर्धा तथा घोड़ों, हाथियों तथा रथों व सैनिकों की शोभा यात्राएं, निकाली जाती थी। साथ ही प्रमुख नायकों और अधीनस्थ राजाओं द्वारा राजा को प्रदान की जाने वाली औपचारिक भेंट इस अवसर के प्रमुख आकर्षण थे। त्यौहार के दिन राजा सेनाओं का निरीक्षण करता था, साथ ही नए सिरे से कर निर्धारित किए जाते थे।

प्रश्न 3. कमल महल की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- कमल महल और हाथियों के अस्तबल जैसे भवनों का स्थापत्य हमें उनके बनवाने वाले शासकों के बारे में निम्न जानकारी देता है-

(1) कमल महल शाही केन्द्र का एक सर्वाधिक भव्य भवन है। संभवत: इस भवन का प्रयोग राजा अपने सलाहकारों से मिलने के लिए करता था। यदि इस अनुमान को गलत मान लिया जाए तो एक-दूसरे अनुमान के अनुसार कमल महल का प्रयोग राजा और उसके परिवारों द्वारा महल के साथ में किया जाता था।

(2) बीच देवस्थल की मूर्तियां अब नहीं है, लेकिन दीवारों पर बनाए गए पटल मूर्तियां सुरक्षित है। इनमें मंदिर की आंतरिक दीवारों पर उत्कीर्णित रामायण से लिए गए कुछ दृश्यांश सम्मिलित है।

(3) शहर पर आक्रमण के पश्चात् विजयनगर की कई संरचनाएँ विनष्ट हो गई थीं, पर नायकों ने महलनुमा संरचनाओं के निर्माण की परंपरा को जारी रखा। इनमें से कई भवन आज भी अस्तित्व में हैं।

(4) कमल महल के पास ही हाथियों का अस्तबल है। इसमें बड़ी संख्या में हाथियों को रखा जाता था। कमल महल और हाथियों के अस्तबल को देखने से पता लगता है कि विजयनगर में स्थापत्य कला ने बहुत प्रगति की। राजाओं ने विशाल महल और सेना के काम में आने वाले भवन बनवाए। जनता से धन लिया गया, राजा को नायक की प्रति वर्ष भेंट देते थे, ये सभी धन राशि अन्य कामों के साथ-साथ विशाल इमारतों के बनवाने के प्रयोग में लाई जाती थी।

(5) इन इमारतों से यह भी पता लगता है कि शहर में अनेक मंदिर और उनकी दीवारों पर मूर्तियां बनाई जाती थीं। वास्तुकला में इंडो-इस्लामिक शैली का प्रयोग किया गया। इन विशाल इमारतो को देखने से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि विजयनगर की साम्राज्य की आर्थिक नीति बहुत सुदृढ़ थी, इसलिए ये इतनी विशाल, भव्य इमारतों के साथ विशाल सेना और हाथी आदि रखते थे।

प्रश्न 4. हाथी, घोड़े और लोग किसके प्रतीक हैं?

उत्तर- हाथी- गणपति का शाब्दिक अर्थ है हाथियों का स्वामी। यह एक शासक वंश का नाम था जो पंद्रहवी शताब्दी में ओडिशा में बहुत शक्तिशाली था।

घोड़े- घोड़े को अश्वपति अथवा विजयनगर की लोकप्रिय परम्पराओं में दक्खन सुल्तानों को घोड़ों के स्वामी को अश्वपति कहा जाता था।

लोग- विजयनगर साम्राज्य में रियारा को नरपति या पुरुषों का स्वामी कहा जाता था।

प्रश्न 5. विजयनगर साम्राज्य में किलों पर नियंत्रण रखने वाले सेना प्रमुखों के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर- साम्राज्य में शक्ति का प्रयोग करने वालों में सेना प्रमुख होते थे जो सामान्यत: किलों पर नियंत्रण रखते थे और जिनके पास सशस्त्र समर्थक होते थे। ये प्रमुख आमतौर पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमणशील रहते थे और कई बार बसने के लिए उपजाऊ भूमि की तलाश में किसान भी उनका साथ देते थे। इन प्रमुखों को नायक कहते थे और ये आमतौर पर तेलुगु या कन्नड़ भाषा बोलते थे। कई नायकों ने विजयनगर शासक की प्रभुसत्ता के आगे समर्पण किया था, पर ये अक्सर विद्रोह कर देते थे और इन्हें सैनिक कार्रवाई के माध्यम से ही वश में किया जाता था।

प्रश्न 6. विजयनगर पर शासन करने वाले विभिन्न राजवंशों की जानकारी दीजिये।

उत्तर- विजय नगर साम्राज्य पर शासन करने वाले राजवंशों की जानकारी-

1. संगम वंश- 1336 से 1485 ई. तक शासन किया।

2. सुलवंश- 1485 से 1503 ई. तक कब्जा जमाया।

3. तुलुप वंश- 1503 से 1565 ई. तक शासन किया।

प्रश्न 7. विजयनगर शहर के बारे में विदेशी यात्रियों ने क्या विवरण दिया है?

उत्तर- 1. इब्नबतूता- इब्नबतूता ने रेहला नामक पुस्तक में अपनी यात्रा संस्मरणों का संकलन प्रदर्शित किया।

2. निकोलो कोण्टी- उसने लिखा है कि नगर का घेरा साठ मील है, इसकी दीवारें पहाड़ों तक चली गई है और नीचे की ओर घाटियों को घेरे हुए हैं।

3. अब्दुर रज्जाक- विजय नगर शहर के अद्भुत रूप में वैभव से आश्चर्यचकित होकर उसने लिखा है- मैंने पूरे विश्व में इसके समान दूसरा शहर न कोई देखा है न सुना है। यह इस प्रकार बना हुआ है कि एक के भीतर एक इसमें सात परकोटे हैं।

4. दुआर्टे बारबोसा- बारबोसा लिखता है कि विजयनगर साम्राज्य में सती प्रथा का प्रचलन था, किन्तु यह प्रथा लिंगायतों, चेट्टियों और ब्राह्मणों में प्रचलित नहीं थी।

प्रश्न 8. विजयनगर स्थित विरूपाक्ष मंदिर की विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर- विरूपाक्ष मंदिर की विशेषताएँ-

(1) यह मंदिर बेंगलुरू से लगभग 300 कि.मी. दूर कर्नाटक हम्पी में स्थित है।

(2) यह मंदिर ऐतिहासिक स्मारकों के समूह का वो हिस्सा है जो भारत में नहीं, बल्कि विश्व धरोहर में शामिल है।

(3) हम्पी में यह मंदिर तीर्थ यात्राओं का वह केन्द्र है जो सदियों से सबसे पवित्र माना जाता है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

(4) मंदिर में भगवान शिव की पत्नी और नंदी की एक विशाल मूर्ति भी विराजित है और यह पत्थर की बनी है।

(5) मंदिर में एक शिवलिंग भी रखा हुआ है जो भगवान शिव ने रावण की भक्ति से प्रसन्न होकर उसे दी थी।

प्रश्न 9. विजयनगर स्थित विट्ठल मंदिर की विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर– विट्ठल मंदिर की विशेषताएँ

(1) विट्ठल मंदिर के प्रमुख देवता विट्ठल थे।

(2) इन्हें महाराष्ट्र में पूजे जाने वाले भगवान विष्णु के रूप में जाना जाता है।

(3) इस देवता की पूजा को कर्नाटक में भी आरम्भ किया गया इससे पता लगता है कि विजयनगर के शासकों ने अलग-अलग परम्पराओं को आत्मसात किया।

(4) अन्य मंदिरों की तरह ही इसमें भी कई सभागार थे इसमें रथ के आकार का एक अनूठा मंदिर भी है।

(5) मंदिर परिसर की एक चारित्रिक विशेषता रथ गलियां हैंजो मंदिर के गोपुरम में सीधी रेखा में जाती है।

प्रश्न 10. विजयनगर और दक्षिण की सल्तनतों के बीच संघर्ष में रामराय की क्या भूमिका थी?

उत्तर– रामराय मुस्लिम सुल्तानों को अलग-अलग करने की कोशिश कर रहे थे, ताकि कोई ताकत दक्षिण में उनका मुकाबला ना कर सके, परन्तु सभी मुस्लिम राज्य संगठित होकर विजयनगर को भी हरा दिया।

प्रश्न 11. इतिहास पुनर्निर्माण में स्थापत्य प्रमाणों की क्या सीमा होती है?

उत्तर– (1) मूल संरचनाओं को अक्सर केवल अपूर्ण रूप से प्रलेखित किया गया था, इसलिए लापता भागों पर फिर से विचार करना होगा।

(2) मूल निर्माण के लिए जिन निर्माण सामग्री या निर्माण तकनीकों का उपयोग किया गया था, वे मुश्किल से उपलब्ध हैं या बिल्कुल भी उपलब्ध नहीं हैं या आर्थिक रूप से सस्ती नहीं है। वही शिल्पकारों पर लागू होता है जो अभी भी (या फिर से) ऐतिहासिक तकनीकों और सामग्रियों में महारत हासिल करते हैं।

(3) मूल अंतरिक्ष आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं होगा जो कि भवन का नया उपयोग करेगा। इमारत के अंदर का पुनर्गठन और उप-विभाजित किया जाएगा।

(4) प्रतिकृति आज की स्थिर सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा नहीं करेगी, इसलिए आपको संरचना को बदलना होगा।

(5) एक ही आंतरिक संरचना के साथ मूल या प्रतिकृति वैधानिक सुरक्षा नियमों का पालन नहीं करेगी, जैसे अग्नि सुरक्षा या बचने के मार्ग।

(6) मूल या प्रतिकृति आज की कानूनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करेगी।

(7) यदि ठीक से लागू किया जाता है, तो मूल आज की आराम आवश्यकताओं (जैसे कंडीशनिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, सैनिटरी इंस्टॉलेशन) को पूरा नहीं करेगा, इसलिए मूल डिजाइन को तदनुसार अनुकूलित किया गया है।

प्रश्न 12. विजयनगर के इतिहास के पुनर्निर्माण में कॉलिन मैकेंजी के योगदान का वर्णन कीजिये।

उत्तर– 1754 ई. में जन्मे कॉलिन मैकेंजी ने एक अभियंता, सर्वेक्षक तथा मानचित्रकार के रूप में प्रसिद्धि हासिल की। 1815 में उन्हें भारत का पहला सर्वेयर जनरल बनाया गया और 1821 में अपनी मृत्यु तक वे इस पद पर बने रहे। भारत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने और उपनिवेश के प्रशासन को आसान बनाने के लिए उन्होंने इतिहास से संबंधित स्थानीय परम्पराओं का संकलन तथा ऐतिहासिक स्थलों का सर्वेक्षण करना आरम्भ किया। वे कहते हैं "ब्रिटिश प्रशासन के सुप्रभाव में आने से पहले दक्षिण भारत खराब प्रबंधन की दुर्गति से लंबे समय तक जूझता रहा।" विजयनगर के अध्ययन से मैकेंजी को यह विश्वास हो गया कि कम्पनी "स्थानीय लोगों के अनेक अलग कबीलों, जो इस समय भी जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा थे, को अब भी प्रभावित करने वाली इनमें से कई संस्थाओं, कानूनों तथा रीति-रिवाजों के विषय में बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ" हासिल कर सकती थी।

प्रश्न 13. अमुक्तमाल्यद में व्यापार विकास हेतु राजा को क्या कार्य करने चाहिए।

उत्तर– एक राजा को अपने बंदरगाहों को सुधारना चाहिए और वाणिज्य को सुधारना चाहिए और वाणिज्य इस प्रकार प्रोत्साहित करना चाहिए कि घोड़ों, हाथियों, रत्नों, चन्दन, मोती तथा अन्य वस्तुओं का खुले तौर पर आयात किया जा सके। उसे प्रबंध करना चाहिए कि उन विदेशी नाविकों जिन्हें, तूफानों, बीमारी या थकान के कारण उनके देश में उतरना पड़ता है की भली-भाँति देखभाल की जा सके। सुदूर देशों के व्यापारियों, जो हाथियों और अच्छे घोड़ों का आयात करते हैं, को राज बैठक में बुलाकर तोहफे देकर तथा उचित मुनाफे की स्वीकृति देकर अपने साथ संबद्ध करना चाहिए। ऐसा करने पर ये वस्तुएं कभी भी तुम्हारे दुश्मनों तक नहीं पहुंचेगी।

प्रश्न 14. विजयनगर साम्राज्य की जल संरचना प्रणाली को समझाइए।

उत्तर– विजयनगर की जल आवश्यकताओं को तुंगभद्रा नदी पर बाँध बनाकर पूरा किया। तत्पश्चात सभी धाराओं के साथ-साथ बाँध बनाकर अलग-अलग आकारों के हौज बनाये गये थे। चूंकि यह प्रायद्वीप के सबसे शुष्क क्षेत्रों में से एक था। इसलिए पानी के संचयन और इसे शहर तक ले जाने के व्यापक प्रबंध करना आवश्यक था। ऐसे सबसे महत्वपूर्ण हौजों में एक का निर्माण 15वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में हुआ, जिसे आज कमलपुरम् जलाशय कहा जाता है। इस हौज के पानी से न केवल आसपास के खेतों को सींचा जाता था, बल्कि इसे एक नहर के माध्यम से 'राजकीय केन्द्र' तक भी ले जाया गया था।

सबसे महत्वपूर्ण जल सम्बन्धी संरचनाओं में एक हिरिया नहर को आज भी भग्नावशेषों के बीच देखा जा सकता है। इस नहर में तुंगभद्रा पर बने बाँध से पानी लाया जाता था और इसे धार्मिक केन्द्र से 'शहरी केन्द्र' को अलग करने वाली घाटी को सिंचित करने में प्रयोग किया जाता था। सम्भवत: इसका निर्माण संगम वंश के राजाओं द्वारा करवाया गया था। इसके अलावा झील, तालाब, कुएँ, मन्दिरों के जलाशय नागरिकों के जल की आवश्यकता को पूरा करते थे।

प्रश्न 15. विजयनगर साम्राज्य में कृषि क्षेत्रों को किला बंद भू-भाग में क्यों शामिल किया गया था?

उत्तर– अन्नागार भी इसलिए बनाए गए थे, ताकि लंबे समय तक अनाज, खाद्य सामग्री को सुरक्षित रख सकें। विजयनगर शासक ने साम्राज्य को तथा कृषि भू-भाग को बचाने के लिए अधिक महंगी एवम् व्यापक नीति अपनाई थी। दूसरी किलेबंदी नगरीय केंद्र के आंतरिक भाग के चारों ओर बनी हुई थी।

तीसरी किलेबंदी से शासकीय केंद्र को घेरा गया था। दुर्ग में प्रवेश के लिए अच्छी तरह से सुरक्षित प्रवेश द्वार बनाए गए थे। ये प्रवेश द्वार शहर को मुख्य सड़कों से जोड़ते थे। प्रवेश द्वार विशिष्ट स्थापत्य के नमूने थे। किलेबंद बस्ती में बने प्रवेश द्वार पर मेहराब और साथ ही द्वार के ऊपर बनी गुंबद तुर्की सुल्तानों द्वारा प्रवर्तित स्थापत्य के तत्व माने जाते थे।

प्रश्न 16. विजयनगर साम्राज्य की अमर नायक प्रणाली को समझाइए।

उत्तर– अमर नायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य की प्रमुख राजनीतिक खोज थी। यह प्रणाली दिल्ली सल्तनत की इक्ता प्रणाली जैसी ही थी। अमर नायक सैनिक कमांडर थे। इनको राय द्वारा प्रशासन के लिए क्षेत्र दिए जाते थे। अमर नायक उन क्षेत्रों में किसानों, शिल्पकर्मियों और व्यापारियों से भू-राजस्व तथा अन्य कर वसूला करते थे। अमर नायक राजस्व का कुछ भाग अपने व्यक्तिगत उपयोग में तथा घोड़ों और हाथियों के दल के रखरखाव के लिए अपने पास रख लेते थे। यह दल विजयनगर शासक को एक प्रभावी सैनिक शक्ति प्रदान करने में सहायक होते थे। इनकी मदद से इन्होंने दक्षिण भारत पर नियंत्रण किया। राजस्व का कुछ हिस्सा मंदिर और सिंचाई के साधन के रखरखाव के लिए खर्च किया जाता था।

अमर नायक राजा को वर्ष में एक बार भेंट भेजा करते थे और अपनी स्वामी भक्ति प्रकट करने के लिए दरबार में उपहारों के साथ खुद उपस्थित होते थे।

राजा कभी-कभी इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करते थे।

17 वीं शताब्दी में इनमें से कई नायकों ने अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए।

प्रश्न 17. विदेशी यात्रियों का विजयनगर साम्राज्य के इतिहास निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। इस संदर्भ में विजयनगर आए यात्रियों का वर्णन कीजिये।

उत्तर– **अलबरूनी–** यह भारत में महमूद गजनवी के साथ आया था। अलबरूनी ने 'तहकीक-ए-हिन्द' या 'किताबुल हिन्द' नामक पुस्तक की रचना की थी। इस पुस्तक में हिन्दुओं के इतिहास, समाज, रीति रिवाज, तथा राजनीति का वर्णन है।

– **अरबी यात्री अलमसूदी–** यह अरबी यात्री प्रतिहार शासक महिपाल प्रथम के शासनकाल में भारत आया था। इसके द्वारा 'महजुल जमाह' नामक ग्रंथ लिखा गया था।

– **चीनी यात्री इत्सिंग–** इस चीनी यात्री ने 7वीं शताब्दी में भारत की यात्रा की थी। इसने नालंदा विश्वविद्यालय तथा विक्रमशिला विश्वविद्यालय का वर्णन किया है।

– **हेरोडोटस–** हेरोडोटस को 'इतिहास का पितामह' भी कहा जाता है। इसने अपनी प्रथम हिस्टोरिका में 5 वीं शताब्दी इस पूर्व के भारत-फारस के संबंधों का वर्णन किया है।

– **इब्नबतूता–** यह अफ्रीकी यात्री मुहम्मद तुगलक के समय भारत आया था। मुहम्मद तुगलक द्वारा इसे प्रधान काजी नियुक्त कि‍या गया था तथा राजदूत बनाकर चीनी भेजा गया था। इब्नबतूता द्वारा 'रहेला' की रचना की गई है जिससे फिरोज तुगलक के शासन की जानकारी मिलती है।

– **कैप्टन हॉकिंग्स–** यह 1608 ई. से 1613 ई. तक भारत में रहा। यह जहांगीर के समय भारत आया था तथा ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए सुविधा प्राप्त करने का प्रयास किया। यह फारसी भाषा का जानकार था। इसके द्वारा जहांगीर के दरबार की साज सज्जा तथा जहांगीर के जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।

@MP_BOARD_25 (Telegram)

प्रश्न 18. पेस के अनुसार विजयनगर के बाजार कैसे थे?

उत्तर– (1) पुर्तगाल का एक प्रसिद्ध यात्री डोमिंगों पेस विजयनगर शहर के बाजारों का विशद विवरण देता है। चौड़ी और सुन्दर गली थी। उस गली में बहुत से व्यापारी रहते थे। बाजार में आगन्तुकों को सभी प्रकार के माणिक, हीरे, पन्ना, मोती, बीज-मोती, कपड़ा और अन्य सभी प्रकार की वस्तुएँ मिलेंगी जो पृथ्वी पर थीं और जिन्हें आगंतुक खरीदना चाहते थे।

आगंतुक हर शाम विजयनगर के बाजार में मेला देख सकते थे। वहाँ कई आम घोड़े, नाग, नींबू, संतरा, अंगूर, विभिन्न प्रकार के उद्यान सामान और लकड़ी आदि बेचे जाते थे।

(2) मेरे अनुसार एक शहर को सर्वश्रेष्ठ शहर का दर्जा दिया जा सकता है जहाँ चावल, गेहूँ, अनाज, भारतीय मकई जैसे प्रावधान आसानी से उपलब्ध हों। फलों की बहुतायत होनी चाहिए और वे सभी सस्ते भी होने चाहिए। शहर में साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखा जाए। शहर के कुछ क्षेत्र बेहतरीन शहरों की मिसाल कायम कर सकते हैं।

(3) डोमिंगो पेस ने विजयनगर शहर का विशद विवरण दिया था। उन्होंने शहर को दुनिया का सबसे अच्छा आपूर्ति शहर बताया।

(अ) कई बाजार हैं, जो चावल, गेहूँ, अनाज, जौ, सेम, मूंग, दाल और घोड़े के अनाज जैसे प्रावधानों से भरे हुए थे। विजयनगर शहर में सभी आवश्यक चीजें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थीं।

चीजों के दाम बहुत कम थे।

(ब) फर्नाओ नुनिज़ के अनुसार, विजयनगर के बाजार अंगूर, संतरे, नींबू, कटहल, अनार और आमों से भरपूर थे। सभी प्रकार के फल और सब्जियां बहुत सस्ती हैं।

प्रश्न 19. ''फारसी राजदूत अब्दुल रज्जाक विजयनगर की किलेबंदी से बहुत प्रभावित हुआ। ''स्पष्ट कीजिये।

उत्तर– 15 वीं शताब्दी में फारस के शासक द्वारा कालीकट भेजा गया दूत अब्दुल रज्जाक किलेबंदी से बहुत प्रभावित हुआ और उसने दुर्गों की सात पंक्तियों का उल्लेख किया–

(1) अब्दुल रज्जाक ने वर्णन किया कि ना केवल शहर को बल्कि कृषि में प्रयुक्त आसपास के क्षेत्र तथा जंगलों को भी घेरा गया था।

(2) सबसे बाहरी दीवार शहर के चारों ओर बनी पहाड़ियों को आपस में जोड़ती थी।

(3) किलेबंदी की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि इसमें खेतों को भी घेरा गया था।

(4) अब्दुल रज्जाक ने लिखा है कि पहली, दूसरी और तीसरी दीवारों के बीच जुते हुए खेत, बगीचे तथा आवास हैं।

(5) शासक किलेबंद क्षेत्रों के भीतर विशाल अन्नागारों का निर्माण करवाते थे।

(6) इससे अनाज को सुरक्षित रखा जा सकता था।

(7) दूसरी किलेबंदी नगरीय केंद्र के अतिरिक्त भाग के चारों ओर बनी हुई थी।

(8) तीसरी किलेबंदी से शासकीय केंद्र को घेरा गया था।

(9) दुर्ग में प्रवेश के लिए अच्छी तरह सुरक्षित प्रवेश द्वार थे।

(10) जो शहर को मुख्य सड़कों से जोड़ते थे।

प्रश्न 20. कृष्णदेव राय के शासन काल में विजयनगर के उत्कर्ष का वर्णन कीजिये।

उत्तर– कृष्णदेव राय एक महान विजेता होने के साथ सफल राजनीतिज्ञ एवं महान प्रशासक भी था। उसके प्रसिद्ध तेलुगु ग्रन्थ 'अमुक्तमल्यद' से उसके नागरिक प्रशासन से सम्बन्धित जानकारियां प्राप्त होती हैं। इस ग्रन्थ में अधीनस्थ अधिकारियों, मंत्रियों की नियुक्ति, न्याय-प्रशासन एवं विदेश नीति के संचालन आदि समस्त विषयों का विवेचन किया गया है। कृष्णदेव राय ने अपने शासनकाल में केन्द्रीय शक्ति को सुदृढ़ बनाया तथा प्रान्तीय नायकों एवं अधिकारियों पर कठोर नियंत्रण स्थापित किया। वह एक स्वेच्छाचारी शासक होते हुए भी प्रजा के लिए सदैव चिंतित रहता था। उसने अपनी प्रजा के लिए तालाबों एवं अन्य नहरों का निर्माण करके केवल सिंचाई सुविधाओं का ही विस्तार नहीं किया, अपितु उसने बंजर एवं जंगली भूमि को कृषि योग्य बनाने की कोशिश भी की। इस प्रकार न केवल कृषि योग्य भूमि का विस्तार हुआ, अपितु राज्य के राजस्व में भी वृद्धि हुई। उसने विवाह कर जैसे अलोकप्रिय करों को समाप्त करके अपनी प्रजा को करों से राहत भी दी। कृष्णदेव राय एक महान लोकोपकारी और धर्म सहिष्णु शासक था। उसने बिना किसी भेदभाव के अनेक मन्दिरों को अनुदान प्रदान दिए। उसके कुशल प्रशासन की प्रशंसा बारबोसा, पेस और नूनिज जैसे विदेशी यात्रियों ने भी की है। पेस नामक इतालवी यात्री कृष्णदेव राय के दरबार में अनेक वर्षों तक रहा था। उसने राजा कृष्णदेव राय को 'एक महान एवं अत्यन्त न्यायप्रिय शासक' बताया है। इसी प्रकार बारबोसा, जो कि एक यूरोपीय यात्री था, ने कृष्णदेव राय के साम्राज्य में प्रचलित न्याय और समानता के व्यवहार की प्रशंसा करते हुए लिखा है, ''राजा इतनी आजादी देता है कि कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार कहीं भी आ-जा सकता है और अपने धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकता है।

प्रश्न 21. विजयनगर साम्राज्य के मंदिरों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

उत्तर– - विजयनगर साम्राज्य में कई मंदिर थे।

- विरुपाक्ष और विट्ठल मंदिर इनमें से काफी प्रसिद्ध हैं।
- इस क्षेत्र में मंदिर निर्माण का एक लंबा इतिहास रहा है पल्लव, चालुक्य, होयसाल तथा चोल वंश तक चलता रहा।
- शासक अपने आप को ईश्वर से जोड़ने के लिए मंदिर के निर्माण को प्रोत्साहन देते थे।
- विरुपाक्ष मंदिर का निर्माण कई शताब्दियों में हुआ था।
- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के बाद इसे कहीं अधिक बड़ा किया गया था।
- मुख्य मंदिर के सामने बना मंडल कृष्णदेव राय ने अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में बनवाया था।
- इन मंदिरों में सभागार और मंडप होते थे।
- यहां देवी-देवताओं की आराधना की जाती थी।
- यहां देवी-देवताओं के विवाह एवं उन्हें झूला झुलाए तथा उत्सव मनाए जाते थे।
- विजयनगर के लोग विरुपाक्ष देव, विट्ठल देव एवं पंपादेवी को पूजते थे।
- मंदिरों में विशाल मूर्तियां स्थापित की जाती थीं।
- मंदिरों में ऊंचे गोपुरम होते थे।
- मंदिरों में देवस्थल, मंडप, मूर्ति स्थान, अनुष्ठान स्थान का विशेष महत्त्व था।

प्रश्न 22. निम्नलिखित को भारत के मानचित्र पर प्रदर्शित कीजिये– (1) हम्पी (2) गोलकुंडा (3) रायचूर दोआब (4) बीजापुर।

उत्तर– एक साम्राज्य की राजधानी विजयनगर

अध्याय-8 किसान, जमींदार और राज्य
कृषि समाज और मुगल साम्राज्य
(लगभग सोलहवीं और सत्रहवीं सदी)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) अबुल फ़जल मुख्यत: किसका दरबारी इतिहासकार था?

(a) बाबर (b) हुमायूं
(c) अकबर (d) शेरशाह

(2) पोलज भूमि से आप क्या समझते हैं?

(a) जिसमें हर वर्ष खेती होती थी।
(b) एक वर्ष अंतराल के बाद खेती
(c) चार से पाँच वर्ष के अंतराल के बाद खेती
(d) खेती नहीं होती .

(3) मनसबदारी प्रथा की शुरुआत किस मुगल राजा ने की?

(a) अकबर (b) औरंगजेब
(c) बाबर (d) हुमायूँ

(4) आइन-ए-अकबरी का तृतीय भाग मुल्क आबादी किससे सम्बन्धित है–

(a) प्रान्तों के वित्तीय मामले (b) शाही घर परिवार से
(c) सैनिक और नागरिक प्रशासन
(d) सांस्कृतिक रीति-रिवाज

(5) आइन-ए-अकबरी के पहले खंड का अंग्रेजी अनुवाद किसने किया?

(a) हेनरी ब्लॉकमेन (b) एच.एस. जेरेट
(c) जोवान्नी कारेरी (d) मुकुंदराम चक्रवर्ती

उत्तर– (1) (c) (2) (a) (3) (a) (4) (c) (5) (d)

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

(1) गुजरात में समृद्ध किसान के पास .... एकड़ भूमि होती थी। (6 एकड़/चार एकड़)

(2) चावल की खेती के लिए प्रतिवर्ष 40 इंच से .... वर्षा आवश्यक थी। (अधिक/कम)

(3) जहांगीर ने .... की प्रयोग पर पाबंदी लगा दी थी। (तंबाकू/शराब)

(4) मल्लशाहजादाओं का शाब्दिक अर्थ .... होता है। (नाविक का पुत्र/किसान का पुत्र)

@MP_BOARD_25 (Telegram)